ईसाई मत दर्पण

: लेखक :

पं० लेखराम

www.aryamantavya.in

कृश्चन मत दर्पण

भूमिका

मनुष्य संसार में केवल इसीलिये नहीं आया कि अन्यापशुओं की भान्ति खावे, लड़े, सोवे और चल बसे, किन्तु इस का सब से बड़ा प्रयोज स्वहित सिद्धि है। जो शारीरिक और आत्मिक दो भागों में विभक्त है और इस का आधार धर्म पर है। जहां तक विचार किया जाता है, सद्धर्म परोपकार का हेतु और असत्य तथा अधर्म खरावी का कारण है। देखो कौन चाहता है कि उसे कष्ट हो दुःख में रत रहे कष्टों का जीवन व्यतीत करे।

सब मनुष्य सुख ही चाहते हैं, सभी कल्याण के इच्छुक हैं, मोक्ष के लिये हाथ पांव मार रहे हैं, सब की इच्छा होने पर भी प्राप्त करने वाले बहुत ही थोड़े हैं। उद्दिष्ठ स्थान पर पहुंचने को सभी इच्छा रखते हैं। किन्तु सहस्रोंलक्षों मार्ग भ्रष्ठ हो जाते हैं। ठग भी इस प्रकार की सान्त्वना देते हैं। प्रिय मित्र बन जाते हैं। बलि बलि होने का विश्वास दिलाते हैं। किन्तु वह सन्तोष नहीं, छिपा हुआ धोखा है। वास्तविक प्रयोजन उनका माल मारने और राही को नरक में उतारने से है। संसार में ठगा जाना संभव है। मनुष्य छल कपट का शिकार बन सकता है। करोड़ों उदाहरण इस के विद्यमान हैं। पुनः मन और बुद्धि रखते हुए हम अन्धाधुन्ध किसी का अनुकरण क्यों करें ? क्या हम अपने कर्मों के उत्तर दायी नहीं।

जब प्रत्येक धर्म और बुद्धि तथा सृष्टि नियम की दृष्टि से भी हम अहने कर्मों के उत्तर दाता हैं तो पुनः क्यों सोच विचार कर काम न करें ? क्यों आंखें मूंद कर पग धरें? जिस से मूर्खता और अंधकार के गढ़े में गिरना पड़े।

संसार में बहुत से मत मतान्तर हैं और सभी अपनी ओर निमन्त्रण देते हैं। उन सब में एक ईसाई मत है जिस के संबंध में हम इस पुस्तक में अन्वेषण करेंगे।

हम अपने कृपालु ईसाई भाईयों की सेवा में नम्रता पूर्ण हाथ जोड़ कर निवेदन करते हैं कि वह हमारी प्रार्थना की पक्षपात दृष्टि से नहीं किन्तु न्याय और सत्यता की आंख से देखें। यथार्थता को दृष्टिगत रख कर अध्ययन करे। इस पुस्तक के पढ़ते समय फिलासफी को हृदय से भुला न दें।

विज्ञान को अपने मन से (जो सत्य का सहायक है) दूर न कर दें। क्योंकि हम और आप भाई हैं। आर्य सन्तान हैं। चिरकाल से बिछड़े हुए मिले हैं। धर्म का विचार भेद जो वास्तव में बहुत कठोर है, क्या ही अच्छा हो यदि सत्यता के आधीन हो कर स्वार्थ का परित्याग कर के ज्ञान विज्ञान से काम लेकर निर्णय शक्ति का प्रयोग करें। आर्यसमाज के सदस्यगण सच्चे हृदय के साथ समुपस्थित हैं कि

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

असत्य को छोड़ने में सहायक हो। परन्तु क्या आप लोग भी किसी प्रकार समुद्यत हो सकते हैं? क्या गलीलियो आदि फिलासफरों को दुःखदायक अपवित्र विचार आप के मन से अभी तक दूर नहीं हुए? जो धर्म जैसी बौद्धिक वस्तु को द्वार के ऊपर रख देते हो। यह बात न्याय से बहुत दूर है।

दर्शक महानुभाव! अपनी वर्षों की गवेषणा आपकी सेवा में उपस्थित करने से प्रयोजन सत्यता का प्रकाश करना कराना है। किसी का मन दुखाना नहीं। बाईबल के सम्बन्ध में चिरकाल से जो हमें लाभ हुआ। वह सब आप को भेंट है। जगत् पिता परमात्मा सब को सर्वप्रिय बनावें जिस से सच्चाई का प्रकाश और असत्य का नाश हो।

—०—

www.aryamantavya.in

प्रथम अध्याय

मसीह खुदा का बेटा नहीं, यूसुफ़ नज्जार का पुत्र था।

जिस प्रकार हम माता पिता से उत्पन्न होते, गर्भ में रहते हैं। हमारे माता, पिता विवाह करके एकान्तवास करते हैं। नियत समय के पश्चात् गर्भ से बाहिर आते हैं। दूध पीते, खेलते, कूदते हैं। जिस प्रकार हम बालक से युवा युवा से वृद्ध होते और अन्त में मर जाते हैं। अथवा युवावस्था में दोष करते, दंड पाते, फांसी वा तलवार से गला कटाते हैं। वही अवस्था मसीह की है। मसीह आकाश से नही गिरा और न भूमि से फूट निकला किन्तु मसीह यूसुफ़ के बीज से उस की स्त्री मर्यम के गर्भ में ठहर कर नियत समय के पश्चात् विशिष्ठ स्थान से उत्पन्न हो कर दूध पीता रहा। और केवल वह एक ही उस मार्ग से उत्पन्न नही हुआ। किन्तु और भी उस के भाई उसी मर्यम के गर्भ से उत्पन्न हुए। समस्त जीवन भर उन के बेटा कहलाता रहा किन्तु ईसाई उन वातों के होने पर भी उसे खुदा का बेटा मानते और मर्यम से यूसफ द्वारा नहीं, किन्तु कुंवारी होने की अवस्था में पवित्रात्मा से गर्भवती मानते हैं।

स्पष्ट हो कि ईसाई यद्यपि उस को खुदा का बेटा मानते हैं किन्तु मर्यम को खुदा की स्त्री और यूसुफ को खुदा का रकीव (स्त्री का मित्र) नहीं जानते।

सामान्य परिभाषा में उसे बुद्धि के विरुद्ध केवल विश्वास के कारण खुदा का बेटा जानते हैं और वास्तब में उन का ईमान यही है। कि पिता सर्वशक्तिमान्, पुत्र सर्वशक्तिमान् पवित्रात्मा सर्वशक्तिमान्। इन सब का आधार मसीह का कुंवारी से उत्पन्न होना है। क्योंकि यदि वह कुंवारी से उत्पन्न नहीं हुआ तो खुदा का बेटा भी नहीं, निष्पाप भी नहीं और संसार का मुक्ति दाता भी नहीं हो सकता। यद्यपि ईसाई विशेषतः पादरी लोग इस बात पर ईमान रखते हैं कि मसीह कुंवारी से उत्पन्न हुआ और यही-मानना उन की मुक्ति का हेतु है। इसी का प्रतिदिन सहस्रों ईसाई बाजारों में उपदेश करते हैं। किन्तु शोक कि जहां तक हम बाईबल को देखते हैं। इस बात का ज्ञान नहीं होता। अब ईसाईयों के पास सब से बड़ा प्रमाण (वास्तव में ईसाई दीन का आधार) यह है कि "यह सब कुछ हुआ, जो खुदावन्द ने नबी के द्वारा कहा था पूरा हुआ कि देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी बेटा जनेगी और उस का नाम अमानवाईल रखेगी।" जिस का अनुवाद यह है कि "खुदा हमारे साथ"।

(मती की इञ्जील १।२२, २३)

अब पड़ताल करनी चाहिये कि वह भविष्यवाणी जिस का मती ने प्रमाण दिया है, कहाँ लिखी है और किस नबी की है? पादरियों ने जो इस का निर्णय किया है और प्रमाण में लिखा है वह यह है (यशाया ६।१४)

अब हम देखते है कि वहां क्या लिखा है? मूल इबरानी बाईबल में यह लेख है कि :—

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

(१४) उजीन बनीन ओवनाई यह वाला खम ओस तहन हा अलमाहुहा राह वेल दस बैल वक्का-रास शमो अमा नवाईल।

(१५) हमाह वबेश योअकल लदअ तो मा ओस बार अ व बाहूर बतराब

(१६) बतरम मदीअ हन अरओस बाए व वाहूर बतवाब तगारेब हा ओमाह आशाना व कास मफसनी शनी मलाफीहा। (देखो यशाया ७।१४, १५, १६) ×

अनुवाद :—

(१४) इस के होते भी कि खुदावन्द तुम को एक निशान देगा। देखो, युवति गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और इस का नाम अमान वाईल रखेगी।

(१५) वह दही और शहद खाएगा जिस समय वह बुरा छोड़ने और भला पसंद करने का विवेचन करे।

(१६) पर उस से आगे कि यह लड़का बुराई छोड़ने और भलाई पसंद करने का भेद पावे। यह भूमि जिसे तू बरबाद करता है अपने दोनों बादशाहों से छोड़ी जाएगी।

यह भविष्यवाणी कई कारणों से मसीह के सम्बन्ध में नहीं हो सकती।

प्रथम कारण :—

इस प्रमाण के आदि और अन्त में विचार करने से स्पष्ट प्रगट है कि यह किस के सम्बन्ध में है? इस सप्तमाध्याय के आरम्भ से अन्त तक का संक्षेप यह है कि इसराईल के राजा पर विजय प्राप्ति के हेतु बादशाह शाह इराम ने सेना से चढ़ाई की परन्तु विजय प्राप्ति न हुई। पुनः यहूदिया के शाह को सूचना मिली कि शाह इराम अफ्राईम और मलिया के बेटे को साथ ले के सेना बढ़ाता है अर्थात् दूसरी बार सेना बढ़ाकर पुनः चढ़ाई करेगा। उस समय शाह यहूदिया और उस के लोगों के हृदय कांप गए। तब खुदा ने उस समय के नबी हजरत यशाया से अहा कि यहूदिया को सान्त्वना दे और उसे कह कि अधीर मत हो और तेरा मन न गबरावे और इन धूम युक्त काष्ठों से मत डर क्योंकि जो तेरे विरुद्ध विचार करते हैं। उन के निश्चय को स्थिरता नहीं। अतः, ऐसा न होगा। पुनः खुदावन्द ने यशाया नबी से कहा कि शाह यहूदिया से कहो कि अपने खुदा से कोई चमत्कार मांग। उसने मांगने से इनकार किया और कहा कि मैं खुदावन्द को नहीं आजमाता। उस पर यशाया नबी ने कहा कि इस के होते भी (अर्थात् न मांगने पर भी) खुदावन्द तुम को एक चमत्कार देगा, देखो कि एक युवति गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उस का नाम अमानबाईल रखेगी और वह लड़का दही और शहद खाया करेगा अर्थात् यह उस का भोजन होगा और उस के युवा होने से पूर्व यह दोनों तेरे विरोधी बादशाह नष्ट हो जाएंगे।

(अध्याय ७ आयत १-६ तक)

+ओ. पादरी अनेक जोयल साहब ने भी अपनी पुस्तक अवतार परीक्षा में यशाया ७।१४ और ९।६ को मसीह के बारे में लगाया है। देखो इनकी पुस्तक पृ० २७ संस्करण १८८३ ईस्वी। और यही गवाही पादरी समिथ डबल्यू पोर्ट साहब ने सत्यमत परीक्षा में दी है। (देखो पृ० ३६५ सन् १८६३)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

द्वितीय कारण :—

यह लड़का जिस के उत्पन्न होने की यशायाह नबी ने सूचना दी थी। इन्हीं दिनों में उत्पन्न भी हो गया था और उस का उत्पन्न होना उसी पुस्तक के अगले अध्याय से उन्हीं दिनों में प्रगट् है।

(देखो यशायाह की पुस्तक अध्याय ८ आयत ३-४, और अध्याय ६ आयत ६-७)

प्रतीत होता है कि हज़रत यशायाह ने अपनी स्त्री से वह लड़का उत्पन्न किया। जैसा कि लिखा है :—

"बाअहलिया नजदीकी करम ओ हामला शुदह पिसरेरा जायद ८।३

अनुवाद : —मैं बनीह के पास गया, सो वह पेट से हुई और एक बेटा जनी।

इस पर स्वयं पादरियों ने प्रमाण में यशाया की पुस्तक अध्याय ७ आयत १६ लिखा हुआ है। जो बात सर्वथा उसी लड़के के सम्बन्ध में है। (देखो बाईबल पृ० ७३६ सन् १८८३ ईस्वी लुध्याना)

और उसी लड़के के सम्बन्ध में आगे चल कर बाई बल में लिखा है कि :—

हमह सलाह पहलवानां दर हंगामा रज़म वलि वास हाए गरीक ख़ून, सोखतह लुकमह आतिश गरदीद, जेरा कि बराए मा तिकले जाएदह शुद वफरजंन्दे वमा बखशीदा शुद कि हुकुमरानी बर दोष ओखाहद बूद अफजायश हुकुमरानी व सलामती बेइन्तहास्त बर तखत दाउद व बर सल्तनतश ता आंरा बाइनसाफ व निओकारी अज हाल ता अब्दुल आंबाद मुकरर व पाए दार नुमायद।

(यशाया अध्याय ६ आयत ५, ६)

अनुवाद :—

'युद्ध में खुरपे (हथियार) पहने हुए लोगों के सब हथियार और वस्त्र जो रक्तरंजित हूं, जलाने के लिए आग का ईधन हूंगे क्योंकि हमारे लिये लड़का उत्पन्न हो गया। हम को एक लड़का दान में दिया गया कि राज्यभार उसके कन्धे पर होगा उस के राज्य का प्रभाव और शान्ति की कोई सीमा न होगी। वह दाऊद के राज्य सिंहासन पर और उसक राज्य विस्तार पर आज से लेके सदैव तक प्रबंध करेगा और न्याय और सत्यता से उसे दृढ़ता देगा।"×

इसी पर पादरियों ने प्रमाण दिया है—

(यशाया ७।१४ देखो पृष्ठ ७३७ लुध्याना १८८३ ईस्वी)

तृतीय कारण :—

क्योंकि उस लड़के के बर्रे को त्यागने से और शुभ को चुन लेने के ज्ञान से आगे वह भूमि जिसके दो राजाओं के कारण तूवह खेत है उजाड़ हो जाएगी और अध्याय ६ आयत ५ से :—क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ और हमें एक पुत्र दिया गया जिसके कन्धे पर प्रभुता होगी और वह उस नाम से खाया जावेगा। आश्चर्यमय मंत्री, शक्तिमान् ईश्वर, सनातन पिता, कस्तल का राजपुत्र" (पृ० ७)

×जहां तक हमें पुरातन अनुवाद मिले हैं उन सब में ऐसा ही है जैसा कि देखो बाईबल नागरी सन् १८६० ईस्वी लंडन में अध्याय ७ आयत १६ में इस प्रकार लिखा है।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

और उसका समर्थन तारीख बी शमऊन से प्रगट है कि यह चमत्कार उसी समय उन्हीं दिनों में पूर्ण हो चुका था किसी और समय से उस का कोई सम्बन्ध नहीं। मसीह के उत्पन्न होने से अहाज बादशाह को क्या लाभ था? और उस युद्ध और घबराहट के अवसर पर मसीह की शुभ सूचना से क्या सम्बन्ध था? और अहाज बादशाह और मसीह का परस्पर क्या सम्बन्ध था? क्योंकि वह बादशाह मसीह से ७४० वर्ष पूर्व हो चुका है। जबकि मसीह के माता पिता भी अस्तित्व के पृष्ठ पर प्रगट न हुए थे।

और यह तो प्रत्येक प्रकार से प्रगट ही है कि उसी समय का हिज़कियाह बादशाह इस लड़के का रूप है क्योंकि वही हजरत दाऊद की चौदहवीं पीढ़ी में था और उसी को दुःख था और उसी पर उसके लिए बाईबल के कथनानुसार उन्हीं दिनों में इलहाम हुआ था।

पादरी हनरी टी० जी० स्काट साहब अपने भाष्य में कहते हैं (मती १।२२) यह नबुव्वत यशाया नबी से अहाज बादशाह के समय में मसीह से ७४० वर्ष पूर्व लिखी गई। (देखो यशाया ७।१४-१७)

उन दिनों सूर और इसराईल के बादशाह यहूदिया देश पर युद्ध के लिये चढ़ाई करने वाले थे और अहाज असूर्या के बादशाह से सहायता चाहने को हो थे कि यशाया नबी ने उस से कहा कि खुदा तआला से एक निशान (चमत्कार) मांग, जिस से ज्ञात हो कि वह तुझे बचावेगा। किन्तु अहाज ने न मांगा। तब यशाया नबी ने उस से कहा कि खुदा स्वयं तुझे निशान देगा अर्थात् एक कुंवारी गर्भवती होगी और बेटा जनेगी और उस का नाम अमान वाईल रखेगी। अब इस साध्य विषय की सत्यता पर विचार किया जाए कि प्रथम अर्थ इस निशान के यह हैं कि उस समय के यहूदी सूर और इसराईल के बादशाहों से बचेंगे और हर अवस्था में पहिले अर्थ अवश्य हैं किन्तु दूसरे अर्थ यह भी निकलते हैं कि यह निशान (चमत्कार) यसूअ मसीह से सम्बन्ध रखता है जो कुंवारी से उत्पन्न हुआ और अमा नवाईल अर्थात् खुदा हमारे साथ है और जो हमें अपने शत्रुओं से बचाता है। किन्तु जो कोई समझे कि दूसरा अभिप्राय उस नबुव्वत से नहीं निकलता तो यही उसको व्याख्या हो सकती है कि जो खुदा तआला ने उस लड़के के सम्बन्ध में नबी के द्वारा कहा था, वह यसूअ के उत्पन्न होने से सब अनुकुल है अर्थात् अनुकूलता की दृष्टि से पूरा हुआ कि एक बात का वर्णन हुआ और दूसरी बात इस को भान्ति घटित हुई (मती १।२३)

यशाया नबी के वर्णन से उस का प्रगट अभिप्राय यह पाया जाता है कि खुदा अपने लोगों का रक्षक व सहायक होगा। किन्तु संभव है कि इस स्थान पर एक उच्च अर्थ निकलते हैं कि खुदा शरीरी हो कर हमारे मध्य वर्तमान है। कुछ भी हो यसूअ की पवित्रता केवल इस नाम से सिद्ध न हो तो भी यदि हम विचार करें कि मती किस अनुमान और किस अवसर पर उसका वर्णन करता है तो एक युक्ति नि.सन्देह उस की पवित्रता के प्रमाण की निकलती है।" (देखो हनरी टी जी स्काट की तफसीर (भाष्य) इञ्जील मती रोमन पृ० २५ इलाहाबाद)

अब एक बात विचारणीय है और वह यह है कि यशाया अध्याय ९ आयत ६ में एक प्रतीक शेष है जिसका अनुवाद उर्दु बाईबल में यह किया गया है कि :—

"अजीब मशीर खुदाए कादिर, अबदीयत का बाप, सलामती का शाहजादा।"

ज्ञात हो कि यह अनुवाद यथार्थ नहीं क्योंकि जिस शब्द का अनुवाद खुदाए कादिर (सर्व शक्तिमान् ईश्वर) किया गया है वह मूल इबरानी की बाईबल में "ईल गिबोअर" है जिस के अर्थ हैं सरदार

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जोर आवर (बलवान् सेनापति अथवा पहलवान) न कि खुदाए कादिर (देखो विलियम होपर का इबरानी कोष पृष्ठ ५६ और उर्दु बाईबल १८६७ ईस्वी मिरजापुर पृष्ठ ७११ और जबूर ३२ की आयत ३) इनमें इसी इबरानी गबोअर शब्द का अनुवाद पहलवान किया गया है। इसके अतिरिक्त स्वयं बाईबल में भी यह शब्द बहुत बार मनुष्य के लिये आया है। विचार से बाईबल इबरानी के निम्न स्थानों को देखो :—

उत्पत्ति १८।१२ सारा ने इबराहीम को कहा। निर्गमन ७।१ में खुदा ने मसा को कहा जबूर १२।६ में पदाधिकारियों के लिए बोला गया।

जिबराईल और गिबराईल भी उस के समानार्थक प्रतीत होता है। ईरानियों और इबरानियों में गिबर और अरबी में जिबर एक हैं। गिबराईल के उलटाने से ईल गबूअर बन जाता है। अत: इस का अनुवाद बलवान् पहलवान है न कि खुदाए कादिर।

दूसरा शब्द जिस का अनुवाद "अबदीयत का बाप" किया गया है। वह इबरानी में "अबीअद" है। इसके अर्थ अबदीयत का बाप अर्थात् नित्यत्व का पिता नहीं। क्योंकि अद के अर्थ समय के हैं और इसी समीप अरबी अहद है और अबी के अर्थ पिता के हैं। जिस के समीप अरबी "अब" है और अबी, अबू भी इस अर्थ में आए हैं। परन्तु यहूदी परिभाषा में पिता शब्द के अर्थ मालिक के हैं। अत: अर्थ हुए समय का बादशाह।

अब जो कुछ विचार से देखा जावे तो बाईबल का जानने वाला मनुष्य भली भान्ति समझ सकता है कि यह सारे गुण हिजकियाह बादशाह में विद्यमान थे। अर्थात् बहुत बुद्धिमान्, बलवानों का सरदार, समय का बादशाह, शान्ति का वाहक, क्योंकि उस को विचित्र विजय प्राप्ति हुई उसके साम्मुख में शाह असूर की एक लाख पचासी हजार सेना युद्ध के विना मर गई। और शाह असूर भाग गया। (विस्तार देखो सलातीन २ अध्याय १६ आयत १-३६ तक और देखो सलातीन २-१८।१५-१६)]

चतुर्थ कारण :—

वह लड़का जिस के उत्पन्न होने की सूचना थी और जिस के सम्बन्ध में अहाज को सुसमाचार दिया गया था वह उन्हीं दिनों में उत्पन्न होकर युवावस्था में लड़कर विजय प्राप्ति में सफल होकर यहूदियों को शान्ति तथा अन्य शोभनीय विजय प्राप्त कराने के पश्चात् चिर समय तक राज्य कर के मर भी गया (देखो सलातीन २ अध्याय २० आयत २१)

अब कुंवारी गर्भवती होगी। इस शब्द का अन्वेषण भी आवश्यक है। और इसी पर ईसाईयों का आधार है। इस को कुछ अधिक ध्यान से देखो। मूल शब्द यशाया की पुस्तक में अलमा है। जिस का अनुवाद याहूदियों ने मसीह के विश्वास के लिये कुंवारी किया है। और हमारे हिन्दु भाई अज्ञान वश इसी की नासमझी में सत्यमार्ग से विचलित होकर मसीह दास और ईसा चरण बन गए। शोक !

ज्ञात हो कि यह अनुवाद ठीक नहीं। अलमा के अर्थ वास्तव में बालिग युवति के हैं।
(देखो विलियम हूपर का इबरानी कोष पृ० २६०)

कुंवारी के लिए इब्रानी में शब्द बहतूला है। (देखो वही कोष पृष्ठ ५६)

प्रोफेसर राबिनसन की भी यही सम्मति है कि अलमा नव वधू अथवा उस स्त्री को कहते हैं जिस

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

का नया विवाह हुआ हो और इस प्रोफैसर ने अपने इस वचन की पुष्टि में यूनानी भाषा के प्रसिद्ध नामी कवि हूमर का एक छन्द भी लिखा है और उक्त प्रोफैसर का विचार है कि उक्त आयतों में नबी का शब्द अ़लमा से युवती नव वधू की ओर इंगित है। (देखो कीटो साईकलो पेडिया रौमन कैथुलिक)

और विलियम ग्रीनूस साहब जिन्होंने आंगल भाषा में इबरानी कोष के वर्णन में पूर्ण अन्वेषण के पश्चात् एक पुस्तक लिखी है। कहते हैं कि "अ़लीम पुल्लिग है उसके अर्थ युवा, विवाह योग्य के हैं। (देखो उनकी पुस्तक संस्करण १८५८ ईस्वी)

समवाईल १ अध्याय १७।५६ में यही शब्द है वहां यही अर्थ लिये गए हैं। अ़लमा इसका स्त्री-लिंग में रूप बनता है। उसके अर्थ हुए जवान लड़की। देवी, स्त्री, विवाह योग्य। और यही (अ़लमा के) फ्रेंड डिक्शनरी यूनानी और अनुवाद अक्वैला और थोडोशन, समक्षन में किए गये हैं—जो हमने किए।

इस काल के पादरियों ने मसीह को कुंवारी से सिद्ध करने के लिए (जिससे कहीं चमत्कार मिथ्या न हो जाए और यूसुफ़ का बेटा सिद्ध न हो जाए) बाईबल के सब स्थानों को ईसाई मत की पुष्टि के लिए बदल कर सब स्थानों पर कुंवारी कर दिया। जज़ाकल्लाहो।+

किन्तु हम उनको डंके की चोट से कहते हैं कि इस कोष का अ़लमा में कुंवारापन किसी प्रकार प्रविष्ट नहीं है। कुंवारी के लिए इबरानी में शब्द "बतूला" है (देखो ग़ज़लुल्ग़जलात अध्याय ६।७)

और यह बात जिसके अन्वेषणार्थ हमने लेखनी उठाई है, साधारण ईसाईयों को छोड़कर विशिष्ट यथार्थवादियों को ज्ञात भी है परन्तु वह भी (ईश्वर जाने किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं) समझने पर भी तटस्थ हो रहे हैं और सत्यता पर कटिबद्ध होने के लिए समुद्यत नहीं हुए। जैसा कि एक अन्वेषण स्वभाव पादरी अर्थात् मिस्टर अब्दुल्लाह आथम साहब कहते हैं कि यह तो हम को ज्ञात है कि अलमा और बटेल शब्द में यह भेद है कि अ़लमा में विवाहिता और अविवाहिता की कोई शर्त नहीं। जब कि बतेल अविवाहिता को कहते हैं। (देखो उनकी पुस्तक नमूनाए आज़ादी पृष्ठ १२ अमृतसर)

श्रीमन्! निःसन्देह हमारा भी तो यही भाव है कि अलमा में विवाहिता और अविवाहिता का विशेष शर्त नहीं है। अर्थात् विवाहित, अविवाहित, बालिग़ युवती, विवाह योग्य को कहते हैं। विवाहिता को भी अलमा कहते हैं। और युवती बालिग़ स्त्री को भी अलमा कहते हैं। किन्तु कुछ कहिए तो सही कि पुनः ईसाईयों ने क्यों अकारण खुदावंद मसीह के पक्षपात में "कुंवारी गर्भवती होगी" अनुवाद किया। जब कि कुंवारी के लिए बतेल शब्द है अतः यह अनुवाद चाहिये था और ऐसा ही है कि विवाहिता स्त्री गर्भवती होगी अथवा युवती स्त्री गर्भवती होगी।

क्योंकि मरियम किसी अवस्था में और किसी प्रकार कुंवारी नहीं थी। किन्तु बालिग़ युवती विवाहिता स्त्री थी। और रोमन कैथुलिक संप्रदाय की ओर से इञ्जील उर्दू आगरा कैथोलिक चर्च में बिकती है। उसमें भी कुंवारी अनुवाद नहीं किया गया। किन्तु "बियाही हुई" अनुवाद किया गया है।

हमारे कृपालु पादरी आथम साहब ने एक युक्ति दी हैं। अलमा का अनुवाद कुंवारी करने पर जिस युक्ति से बढ़कर किसी पादरी के पास और कोई युक्ति नहीं। हम उस पर बहुत ध्यान से विचार करते हैं।

+ईश्वर तुम्हें यथार्थ फल दे। (भावार्थ) (अनुवादक)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

डिप्टी अब्दुल्लाह आथम उसी पुस्तक में लिखते हैं कि :—

"सपोरजन्ट में जो अनुवाद प्राचीन काल का इबरानी से यूनानी में सत्तर यहूदी विद्वानों ने लगभग मसीह जन्म से तीन सौ वर्ष पूर्व किया था (उसमें) अलमा शब्द का अनुवाद कुंवारी ही किया गया है।"

(खंडन) जब कि उसी सपोर जंट वाले अनुवाद में अलीम का अनुवाद बालिग युवा हुआ है। और अलमा उसका स्त्रीलिंग है। अतः पुल्लिग के अर्थ युवा पुरुष और स्त्रीलिंग के अर्थ युवती स्त्री ही होने चाहियें। जिसमें कुंवारापन अथवा अविवाहित अवस्था किसी प्रकार प्रविष्ट नहीं। अतः स्पोरजंट में यशाया के अलमा शब्द का अनुवाद यथार्थ हुआ है। क्योंकि वह यशाया नबी की स्त्री विवाहिता थी। जैसा कि वह कहता है कि :—

बा अहलिया नज़दीकी करदम ओ हामला शुदा पिसरा राज़ायद।

अर्थात् मैं नबिया के पास गया। सो वह पेट से हुई और एक बेटा जनी।

(यशाया अध्याय ८।३-४)

मसीही विद्वान् भी इस बात (प्रगट अंधकार) से परिचित नहीं हैं कि अलमा के अर्थ युवती स्त्री अथवा विवाहिता नव वधू के हैं। किन्तु शोक है तो यह है कि वह ईसाई होने की अवस्था में मती पर भी संदेह नहीं कर सकते। जैसा कि हमारे कृपालु विद्वान् श्रीमान् अब्दुल्लाह आथम साहब कहते हैं कि :—

"यथार्थ अन्वेषण का दावा मती और लूका में से केवल लूका को हो है" अर्थात् मती को नहीं।

(देखो नमूना आज़ादी पृ० ८)

×मती की भूलों को अन्य पादरियों ने भी स्वीकार किया है। और यही कारण है कि पादरियों को इस भविष्यवाणी और मती को इञ्जील में मिलान करते हुए बहुत कठिनता उपस्थित हो रही है।

कुछ का विचार है क्योंकि मसीह कुंवारी मरयम से उत्पन्न हुए थे अतः युवती स्त्री से उत्तम रीत्या उत्पन्न हुए और वह सुसमाचार जिस में इन का प्रत्यक्षतः युवती से उत्पन्न होना वर्णन हुआ है और दूर की खेंचातानी द्वारा कुंवारी से भी अभिप्राय प्रतीत होता है। (भविष्याणी) पूर्ण रीत्य ठीक रही।

इस का उत्तर यह है कि यह सब सम्मतियां उसी मिथ्या विश्वास पर आधारित है कि मसीह वास्तव में मरियम कुंवारी से (खुदा नखास्ता=ईश्वर न चाहे) उत्पन्न हुए थे। किन्तु इस प्रकार का तर्क करना और मसीह की उत्पत्ति को सृष्टि नियम के विरुद्ध प्रथम मान लेना-उसके पश्चात् हजरत यशाया नबी के सुसमाचार से अनुकूलता करने के लिये खेंचातानी करना लाभरहित यत्न है जो बुद्धिमता और सत्यान्वेषण के सर्वथा विरुद्ध है।

×तारीखे ईस्वी श्री डाक्टर डैविड फ्रीडर्क अस्ट्रास साहब लिखित में मती की बहुत सी अशुद्धियां प्रगट की गई हैं जिनका उत्तर आज तक किसी ईसाई से न बना। वह लिखते हैं कि मती से इतिहास या तिथि लिखने में बहुत सी अशुद्धियाँ हुईं। अतः इसकी वाणी विश्वसनीय नहीं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Vedic Mission

www.aryamantavya.in

क्योंकि यशाया का सुसमाचार (बुशारत) अहाज बादशाह के लिए है। जो मसीह से सात सौ वर्ष पूव हुआ है और उस की रक्षा के लिये एक लड़के के होने का उसे शुभ समाचार दिया गया और वह लड़का हो भी गया, विजय प्राप्ति कर गया। यहूदियों को सलामती (सुरक्षा) भी दे गया। अतः मसीह से यशाया की पुस्तक का किसी प्रकार और कदापि राई समान भी सम्बन्ध नहीं।

माननीय श्रेष्ठ पादरी रिचार्ड वाटसन साहब फरमाते हैं कि :—

"यह सामान्य निश्चय था कि हजरत ईसा यूसुफ के बेटे हैं और उनका चमत्कार रूपेण उत्पन्न होना (जैसा कि आज कल ईसाई मानते हैं) सर्वथा प्रसिद्ध नहीं किया गया था। किन्तु यूसुफ और मरियम के हृदयों में छिपा था। यदि यह बात प्रसिद्ध हो जाती तो लोग प्रायः हजरत मरियम को तंग किया करते। लूका के इस बाक्य से कि "वह यूसुफ का बेटा समझा जाता था" यह प्रगट होता है कि मसीह के उन्नत होने के पश्चात् यह बात ज्ञात हुई और किसी सन्देह के बिना (केवल धार्मिक विश्वास युक्ति और तर्क के बिना) यह मान लिया गया। इसी कारण से यह बात मती और लूका ने इञ्जील में प्रविष्ट की है।

यहां पर हम यह भी बताना चाहते हैं कि यशाया की भविष्यवाणी का मसीह से किसी प्रकार का सम्बन्ध हो भी नहीं सकता। निम्न युक्तियों के आधार पर :—

(१) मसीह का नाम अम्मानवाईल नहीं रखा गया किन्तु यसूअ रखा गया। जो दोनों नाम-नाम और अर्थ की दृष्टि से भी परस्पर विरुद्ध हैं। क्योंकि यसूअ के अर्थ हैं लोगों को पाप से बचाने वाला। (देखो मती १।३३) और अम्मानवाईल के अर्थ हैं—खुदा हमारे साथ (मती १।२४) किन्तु हिजकियाह बादशाह का दूसरा नाम भी अथवा वास्तविक नाम भी अम्मानवाईल रखा गया।

(देखो यशाया की पुस्तक अध्याय ८।८)

(२) दही और शहद खाया करेगा। मसीह ने यह वस्तु सारी आयु में नहीं खाई। परन्तु हिजकियाद बादशाह खाया करते थे। किन्तु उस कै समय में उसकी बहुत ही अरजानी (सस्तापन) थी।

(देखो यशाया अध्याय ७।२,२३)

(३) दोनों बादशाहों के मरने का मसीह से कोई सम्बन्ध नहीं किन्तु आखिर और हिजकिया से है। (देखो यशाया की पुस्तक और सलातीन की पुस्तक)

पंचम कारण :—

दाऊद के तख्त पर बैठना भी हजरत मसीह के भाष्य में नही हुआ और न होना चाहिये था। पादरी साहिबान मती का प्रमाण देते हैं :—

"नबी के द्वारा यूं कहा है। बैतुल्लहम यहूवाद की भूमि ! तू यहूपाह के सरदारों में कदापि तुच्छ नहीं है। क्योंकि तुप्त में से एक सरदार निकलेगा जो मेरी जाति इसराईल का पक्षपोषक होगा।"

(मती २।६)

और योहन्ना की इञ्जील का प्रमाण देते हैं कि :—

"क्या पुस्तकों में यह बात नहीं कि मसीह दाऊद की नसल (जाति) से और बैतुल्लहम की बसती (नगर) से जहां दाऊद था आता है। (योहन्ना ७-४२)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

और लूका का प्रमाण भी देते हैं कि "खुदावन्द खुदा उस के बाप दाऊद का तख्त उसे देगा।" (लूका २।३२)

और इन प्रत्येक दोनों प्रमाणों में पादरियों ने मीकाहनवी ५।२ का प्रमाण भी दिया है। किन्तु वहां मसीह का कोई नाम भी नहीं है।

अब हम इन सब प्रमाणों का मौखिक बातों से नहीं किन्तु स्वयं बाईबल से ही खंडन करते हैं। जहाँ पर लिखा है कि :—

"इसलिए यहूवाह के बादशाह यहू यकम के सम्बन्ध में खुदावन्द यूं कहता है कि उस की नसल में से कोई न रहेगा, जो दाऊद के तख्त पर बैठे।" (यरमियाह नबी की पुस्तक ३६।३०)

अब कुछ कृपा करके मती १।१२ को देखिये। जहां लिखा है कि मसीह उस की नसल से है। अतः वह किसी प्रकार भी दाऊद के तख्त पर नहीं बैठ सकता।

मती और लूका के अतिरिक्त मरकस और यूहन्ना मसीह की उत्पत्ति का वर्णन तक भी नहीं करते। हां, यूसुफ का बेटा होने को स्वीकार करते हैं।

"वह यूसुफ का बेटा यसूअ नासरी है।" (यूहन्ना १।२५)

"और उन्होंने कहा कि यह यसूअ यूसुफ का बेटा नहीं जिस के बाप को हम जानते हैं। (यूहन्ना ६।४२)

"क्या यह मरियम का बेटा बढ़ई नहीं ? और यअकूब और यूबिस और यहूबाह व शमऊन का भाई नहीं और क्या उस की बहनें हमारे पास नहीं है ? (मरकस ६।३)

इनके अतिरिक्त स्वयं मती और लूका में उस को यूसुफ का बेटा लिखा है :—

"क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं और उसकी मां मरियम नहीं कहलाती" (मती १३।५५)

"और जिस समय+माता पिता उस लड़के यसूअ को अन्दर लाते थे जिस से उस के लिए शरीयत की पद्धति पर आचरण करें।" (लूका ३/२७)

+पादरी ठाकुरदास साहिब फ़रमाते हैं कि निःसन्देह इञ्जील से ऐसा ही प्रतीत होता है कि प्रथम मरियम और यूसुफ़ के अतिरिक्त अन्यों पर यह बात छिपी थी और हम यह बात भी मान लेते हैं कि यदि मरियम यूसुफ़ इस बात को प्रसिद्ध करते तो लोग प्रायः मरियम को कष्ट देते क्योंकि सामान्य विचार ऐसी ही उत्पत्ति के विरुद्ध था और न सृष्टि नियम के विरुद्ध उत्पत्ति की आशा की जाती थी।

और जब मरियम और यूसुफ़ को यह भय था। और दूसरी ओर लोगों के विचार अन्य प्रकार के थे तो ऐसे विचारों के कारण वह बैतुल्लहम के कार्यालय में यूसुफ़ का बेटा लिखा गया। जिस विचार का लूका वर्णन करता है। जब उसने देखा जिससे मसीह की वंशावली लिखे और अपनी ओर से यह बढ़ाया कि जैसा समझा जाता था और पुनः जैसी वंशावली को उपस्थित करता है। (इनफसाल विलादते मसीह १८८२ ई० सियाल कोट पृ० २९)

यह फरमाते हैं कि "आप लोगों के विचार से समझते हैं क मसीह यूसुफ़ के बीज से था। तो हम लोगों के ऐसे विचार या वगाही को इस दृष्टि से मिथ्या समझते हैं कि इस विषय में केवल मानुषी गवाही कुछ महत्ता नहीं रखती क्योंकि वह उस गर्भ के आंख देखे गवाह न थे और न हो सकते हैं।" (पृ० २९)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

वह यूसुफ का बेटा था। (लूका ३।२३)

यह यूसुफ का बेटा यसूअ नासरी है। (यूहन्ना १।४५)

उसके माता पिता प्रतिवर्ष ईद फसह में यरोशलम जाते थे। (लूका २।४१)

वह लड़का यसूअ यरोशलम में रह गया। पर यूसुफ और उस (मसीह) की मां ने न जाना। (लूका २।४३)

उस की मां ने उस से कहा। हे पुत्र ! किस लिये तू ने हम से ऐसा किया, अर्थात् गुम हो गया। देख ? तेरा बाप×और मैं कुढ़ते हुए तुझे ढूंढते थे। (लूका २।४८)

विशेष बात :—ईमानदार ईसाई भी मसीह को शारीरिक दृष्टि से मनुष्य मानते हैं। अतः आवश्यक है कि वह शारीरिक दृष्टि से मनुष्य के बीज से उत्पन्न हुआ। अन्यथा मनुष्य न होगा।

लतीफ़ा

ईसाई कहते हैं कि वह कुंवारी से उत्पन्न हुआ। हम कहते हैं कि सारा संसार कुंवारियों से उत्पन्न होता है। उसकी कोई विशेषता नहीं क्योंकि सब स्त्रियां आरम्भ में कुंवारी होती हैं।

कुछ लोग इस बात पर भूल कर जाते हैं कि यदि मसीह खुदा नहीं था। अथवा खुदा का बेटा नहीं था तो शिष्य उसे रब्बी क्यों कहते थे अर्थात् खुदा।

इसका उत्तर यह है कि यह पादरियों का धोखा और तुम्हारी ना समझी है। रब्बी के अर्थ खुदा के नहीं हैं किन्तु उस्ताद (गुरु) के हैं। (देखो लूका १।३८)

इब्ने मरियम के शब्द ने भी बहुत लोगों को धोखे में डाला है। किन्तु इस का कारण बहुत थोड़े लोग जानते हैं। और वह यह है कि अल्पायु में और मसीह की प्रसिद्धि से पूर्व ही यूसुफ की मृत्यु हो गई थी। सारे घराने पर मरियम के अतिरिक्त अन्य कोई बड़ा न रहा था।

(देखो जीवन चरित मसीह सैन्ट अनीन साहिब पृ० ७९)

किन्तु इब्ने मरियम (मरियम का बेटा) वर्णन करने से मसीह बिन बाप सिद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि मूसा की उत्पत्ति जो कुरान में है। उस में केवल उस की माता का वर्णन है। उस के पिता का कुछ भी वर्णन नहीं। और न बाईबल में ही उस के माता पिता का नाम विद्यमान है। किन्तु संक्षिप्त

+पादरी ठाकुरदास साहब इस पर लिखते है कि :—

"इस स्थान पर नबियों शिष्यों ने मरियम का वचन वर्णन किया है। जिसने "तेरा बाप" का शब्द प्रयुक्त किया। किन्तु मरियम जानती थी कि वास्तव में यूं नहीं है। जैसा कि इसका भी शिष्यों ने वर्णन किया था। तो उससे स्पष्ट परिणाम यही निकलता है कि मरियम ने प्रगट रूपेण अथवा अपेक्षा से ऐसा कहा था और अधिक संभव है कि कहा करती होगी। (इनफसाले वलादत पृष्ठ २६)

पाठक वृन्द ! मरियम तो यूसुफ़ को मसीह का बाप बताती है और पादरी साहब इनकार करते हैं। किन्तु क्या ऐसे अवसर की गवाही माता से बढ़कर कोई हो सकती है।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

लिखा हुआ है कि लावी के घराने के एक व्यक्ति+ने जा कर लावी की नसल में एक स्त्री से विवाह किया। वह स्त्री गर्भवती हुई और बालक जनी और उसने उसे सुन्दर देख कर तीन मास तक छिपा रखा। जब आगे को न छिपा सकी तो टोकरी में रख कर नदी में डाल दिया। हां, जब फिरऔन की बेटी ने नदी से उसे निकलवा कर उसे पाला और जब लड़का बड़ा तब वह फिरऔन की बेटी का बेटा ठहरा और उस ने उस का नाम मूसा रखा।

(देखो खुरूज-(बहिर्गमन) अध्याय २ आयत १-१० तक)

मूसा के अतिरिक्त अन्य बहुत लोगों की प्रसिद्धि माता से प्रसिद्ध है। इब्ने हिन्दह और इब्ने अमीना। यह दोनों प्रसिद्ध कवि हुए हैं किन्तु दोनों अपनी माता के नाम से प्रसिद्ध हैं।

(देखो दारुल्म आरिफ जिल्दी)

इन के अतिरिक्त इब्ने मरियम एक कवि भी हुआ है। (देखो विलादते मसीह पृष्ठ ७५)

हिन्दुओं में भी पिता होने पर भी कुछ व्यक्ति केवल माताओं के नाम से प्रसिद्ध हैं—कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर=कुन्ती का बेटा युधिष्ठिर (देखो महाभात)

सत्यवती सुत=सत्यवती का बेटा व्यास। (देखो महाभारत)

अंजना पुत्र हनुमान्। (देखो रामायण)

गांगेय भीष्म=गंगा का पुत्र भीष्म (महाभारत)

गरुड़ का नाम वैनतेय=विनता का पुत्र। (रामायण)

मआ़ज़ल्लाह (ईश्वर से रक्षा मांगता हूं)

क्या यह सब खुदा के बेटे थे! जिस प्रकार यह सब माता के नाम पर प्रसिद्ध हो जाने के कारण भी खुदा के बेटे नहीं थे। इसी प्रकार मसीह भी इब्ने मरियम=मरियम का बेटा कहलाने पर भी यूसुफ़ का बेटा था न कि खुदा का।

कुछ ईसाई अविद्या वश मसीह के प्रेमपाश में फंसे हुए मरियम को समस्त जीवन चार पांच पुत्र पुत्रियां उत्पन्न होने पर भी कुंवारी रहने का विश्वास रखते हैं और ऐसे ही मुसलमान भी। क्योंकि उन का सारा विश्वास मौखिक तक़लीद (अनुकरण) पर है। हज़रत स्वयं उम्मी (अनपढ़) थे।

किन्तु शोक कि वह इञ्जील से अपरिचित हैं। यदि यूसुफ़ मरियम का पति है। यदि मरियम यूसुफ़ की पत्नी है। यदि ईसा मरियम और यूसुफ़ का बेटा है तो युबीस, यअ़क़ूब, यहूदा और शमऊन अवश्य उसके भाई हैं। अर्थात् मरियम कुंवारी के उदर से उत्पन्न हुए हैं और इसी प्रकार उसकी बहनें भी हैं। क्योंकि इञ्जील में लिखा है। क्या यह मरियम का बेटा बढ़ई नहीं? और यअ़क़ूब और योबीस और यहूदा शमऊन का भाई नहीं और क्या उसकी बहनें हमारे पास नहीं हैं? (मरकस ६।३)

यसूअ़ ने भी इसका इनकार नहीं किया किन्तु केवल यह कहा कि :—

+शोक कि बाईबल के खुदा को भी मूसा के माता पिता का पता नहीं लगा। अन्यथा अवश्य लिखते। जब कि साधारण २ लोगों की वंशावली लिखी हैं। यह नादानी और खुदाई का दावा।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

"नबी बेइज्ज़त नहीं किन्तु अपने देश में और अपने परिवार और घर में। और वह कोई चमत्कार वहां न दिखा सका।" (मरक़स ६।४)

इसी प्रकार देखो (योहन्ना २।१२ मती १३।५५ मरक़स ३।३१ से ३५ लूका ८।१० से २१ योहन्ना ७।३-१० लूका २३।१९)

फ्रांस देश के एक योग्यतम इतिहासज्ञ अरनिष्ट अनीन साहब ने इस कठिनाई को इस प्रकार खोला है कि यह चार व्यक्ति जो कि इञ्जील मती १३।५५ मरक़स ६।३ में वर्णित हुए हैं और भी दूसरे स्थान पर मरियम और कलियाफस के बेटे गिने गए हैं। यह कठिनाई इस बात के समझने से दूर होती है कि इन दो सहनाम बहनों मरियम के तीन २ चार २ लड़के एक ही नाम के थे। मसीह के वास्तविक भाई पूर्व उससे शत्रुता रखते थे। जब इञ्जील के लिखने वालों ने कलियाफ़स के लड़कों को प्रत्येक समय मसीह के साथ देखा और इनका भाई कहलाते सुना तो भूल से कुछ स्थानों पर सगे भाईयों के नाम के स्थान पर उनका नाम लिख दिया। मसीह के सगे भाई अपनी माता की भान्ति उनकी मौत के पश्चात् प्रसिद्ध हुए। किन्तु पुनरपि उनको इतनी प्रसिद्धि प्राप्त न हुई थी। जैसा कि उनके मुसेरे भाईयों को हुई। मसीह की बहनें नासिरह में ब्याही गई थीं। मसीह ने अपनी आरंभिक युवावस्था के दिन वहां ही व्यतीत किये।" (देखो मसीह का जीवन चरित लंडन पृष्ठ ४९)

एक और अन्वेषक विद्वान् इतिहास वेत्ता भी इसका समर्थन करके मरियम के संबंध में लिखता है कि इञ्जील से हर अवस्था में सिद्ध है कि मसीह के सगे भाई बहनें कुवारी मरियम के उदर से थीं।

पुनः वह लेखक लिखता है कि :—

"इस बात के मानने में उन लोगों के अतिरिक्त जो मरियम को नित्य कुंवारी के सिद्धान्त को मानते हैं (अन्य) किसी को कुछ कठिनाई प्रतीत नहीं होती और यदि सब आक्षेपों को मान भी लिया जाए तो भी इञ्जील मती १।२४,२५ का क्या उत्तर होगा ? जहां लिखा है कि यूसुफ अपनी पत्नी को अपने पास ले आया और उसको न जाना, जब तक वह अपना पहलोठा बेटा न जनी। इसी प्रकार इञ्जील लूका २।६,७ में लिखा है कि उसके जनने के दिन पूरे हुए और वह अपना पहलोठा बेटा जनी।"

अतः यदि शिष्यों (नबियों) को यह निश्चय न होता कि मसीह के अन्य छोटे भाई बहिनें भी हैं। तो वह कदापि उसको पहलोठा बेटा न कहते।" (देखो साईकलो० बरतानिया जिल्द ४)

योग्य और ईमानदार पादरियों ने जिन्हें मसीह से बहुत अधिक प्रेम था—बहुत यत्न किया है कि मरियम को सदैव के लिये कुंवारी सिद्ध करें। इस अतिशय प्रेम ने उनके मन में यहां तक प्रभाव डाला कि उन्होंने मसीह और मरियम पर बहुत अधिक संदेह करने वाले वाक्य इञ्जील से जान बूझ कर निकाल दिये। जैसा कि योरोपियन विद्वान् हारन साहिब ने फ़ाफ़ साहब की पुस्तक से इञ्जील में दीनदारों की प्रशंसा करने के संबंध में भी सविस्तार वर्णन किया है। जैसा कि इञ्जील मती १।१८ में यह शब्द "पूर्व इसके कि वह सहवास करें और मती १।२५ में "उसका पहलोठा" शब्द कुछ पुराने ग्रन्थों में जान बूझ कर छोड़े गये हैं, जिससे हज़रत मरियम के सदैव के कुंवारेपन पर संदेह न होने पाए" देखो हारन साहब की पुस्तक जिल्द २ अध्याय ८ संस्करण १८८२ ईस्वी।

www.aryamantavya.in

और रोमन भाष्य में हनरी टी. जी स्काट साहब ने भी पक्षपाती पादरियों से डरते २ दबी ज़बान से उसको स्वीकार किया है। (देखो उक्त भाष्य इलाहाबाद पृष्ठ २५ मिशन प्रैस)

मती के इस वाक्य (जब उसकी सगाई) मरियम की मंगनी यूसुफ़ के साथ हुई तो उनके इकट्ठे होने से पूर्व वह पवित्रात्मा से गर्भवती पाई गई। (मती १।१८)

(इस वाक्य) ने भी बहुत से लोगों को भ्रम में डाला है। और यह वास्तव में दो कठिन वाक्य हैं। प्रथम मंगनी और दूसरा इकट्ठे आने से पहिले।

स्पष्ट हो कि मंगनी का उस समय एक ढंग यह भी था कि पति पत्नी सहवास करें। जैसा कि लिखा है कि :—

"मंगनी (सगाई) के उचित होने के लिए अवश्य था कि तीन पद्धतियों में से एक पर अवश्य आचरण किया जाए।

(१) धन वा कोई वस्तु सगाई के चिह्नरूप में लड़की को (यदि वह आवश्यक हो) तो उसके पिता को दिया जाता।

(२) पत्र या लेख बद्ध वचन लड़की या उसके पिता को पुरुष देता।

(३) सहवास जबकि स्त्री पुरुष दो गवाहों के सम्मुख सगाई का वचन कहकर एकान्त में चले जाते थे। किन्तु यह आश्चर्य माना जाता था और पुरुष को सावधान रहने की आज्ञा दी जाती थी। (देखो केटोज़ साहब का साईक्लोपीडिया मैरिज की व्याख्या)

और ऐसा ही डाक्टर समिथ साहब की बाईबल डिकशनरी में भी तालमूल यहूद से यह तीनों बातें लिखी हुई हैं, अर्थात् धन, वचन बद्धता और सहवास। और इसको पादरी ठाकुरदास साहब ने भी इनफसाल पृष्ठ ३६ पर स्वीकार किया है।

इससे स्पष्ट प्रगट है कि शरीयत+ यहूद के अनुसार सगाई समय यूसुफ और मरियम एकत्र हुये थे और सहवास किया था और उसी प्रथम सहवास में जैसा कि सहस्रों बार होता है। मरियम गर्भवती हो गई थी। अतः सिद्ध है कि मंगनी वाली स्त्री केवल एक बार सहवास करके जब तक माता पिता के घर रहती थी तब तक वह मंगेतर कहलाती थी और जब पति के घर आ बसती थी अथवा पति उसे अपने घर ले आता था। तब मंगेतर के स्थान पर जोरू (पत्नी) कहलाती थी।

+तौरेत में लिखी यहूदी शरीयत:—

'यदि कोई पुरुष पति वाली स्त्री से दुराचार करते पाया जाए तो वह दोनों मार डाले जाएं।" और जो लड़की किसी की मंगेतर हो और कोई अन्य व्यक्ति उसे नगर में पाकर सहवास करे तो उन दोनों को पथराव करो कि वह मर जाएं, इसलिये कि उसने अपने हमसाए की जोरू को दोष युक्त किया।

किन्तु यदि कोई पुरुष एक लड़की को जो किसी की मंगेतर है, मैदान में पाए और पुरुष बलपूर्वक उससे मिल बैठे तो केवल पुरुष मार डाला जाए।"

और यदि कोई पुरुष कुंवारी लड़की को पावे जो किसी की मंगेतर हो और उसे पकड़ के उससे सहवास करे

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जैसा कि तौरेत की शरीयत निम्न टिप्पणी से प्रगट है कि उसने अपने पड़ौसी की पत्नी को रद्द किया। न यह कि कुवारापन नष्ट किया।

अत: स्पष्ट सिद्ध है कि मरियम मंगनी के समय यूसुफ़ से गर्भवती हो गई और उन दोनों के यूसुफ के घर में एकत्र एक स्थान पर निवास करने से पूर्व ही वह गर्भवती पाई गई।

एक साथ आने के लिये यूनानी में दो शब्द हैं। एक सव, दूसरा अलतहापन, सबके अर्थ एक साथ और अलतहापन के अर्थ आना जाना के हैं। अत: अर्थ हुए एक साथ आना या जाना। अर्थात् पिता के घर के अतिरिक्त अपने पृथक् घर में पिता के घर से आना या पति के घर से पिता के घर में जाना। अर्थात् मरियम उस समय गर्भवती हो गई कि जब वह पिता के घर में प्रथम एकान्त वास में यूसुफ़ के पास गई थी और उसी समय वह यूसुफ़ के घर में एक साथ आने से पूर्व गर्भवती पाई गई और इस एक साथ आने के अर्थ जैसा कि हमने वर्णन किये हैं। वैसे ही इञ्जील में भी विद्यमान हैं।

(देखो मती १।२५)

अत: स्पष्ट सिद्ध है कि यदि यूसुफ का अपना गर्भ था। तो वह डरा क्यों ?

इसका पुण्यमय उत्तर यह है कि यहूदियों के नियमानुसार यदि उसकी स्त्री प्रथम सहवास में गर्भवती हो जाती थी। तो उसे संभवत: स्त्रियां डाँटती थीं अथवा केवल बड़ों की दृष्टि में कुछ शीघ्र कारी प्रतीत होता। जो प्रथम अवसर होने के कारण लज्जित होता है। इस से मती के कथनानुसार यूसुफ थोड़ा सा डरा और विचार किया (जैसाकि शीघ्रकारी (उतावला) जब पारिवारिक कष्ट सामने आता है तो घबराता है) कि छोड़ दूं किन्तु निर्धनता अथवा मरियम के सौन्दर्य या समझ आ जाने के कारण मौन हो गया। समझ गया कि सब के सिर पर यही बात गुजरा करती है। अत: इस कारण से न छोड़ सका। और यह भी ज्ञात हो कि यह बात केवल मती की ना समझी से ज्ञात होती है और उस को सत्यान्वेषण का दावा भी नहीं। किन्तु ऐसा ठीक दावा केवल लूका को है जैसाकि अब्दुल्लाह आथम के कथन से पोछे हम सिद्ध कर चुके हैं। अब देखिये कि लूका जैसा अन्वेषण स्वभाव क्या कहता है ? वह उस समय से पूर्व यूसुफ का कोई वर्णन नहीं करता। जब तक कि नाम लिखवाने के लिये यूसुफ अपनी धर्म पत्नी मरियम के साथ बैतुल्लस्म को गया। जैसाकि लिखता है :

और वह पकड़े जाएं तो पुरुष ने जो उसके साथ दुराचार किया। लड़की के पिता को ५० मिसकाल रुपये दे और वह उसकी पत्नी होवे। देखो इसतिस्ता (अध्याय २२ आयत २२,२३,२५,२९)

हमने तौरेत को ध्यान से देखा। कहीं भी विवाह पद्धति इससे अधिक विस्तार अथवा संक्षेप से भी नहीं पाई गई। यदि है तो कोई ईसाई बताए।

पादरी ठाकुरदास साहब ने भी "इन्फसाल" पृष्ठ ३६,३७ पर इसको स्वीकार किया है और आगे चलकर लिखा है कि यहूदियों की मंगनी की रसम में पुरुष और स्त्री के पति पत्नी रूपेण होकर रहने के वचन दृढ़ और पूर्ण हो जाते थे, और पुन: दोहराए न जाते थे और पुरुष स्त्री को तलाक़ के विना नहीं छोड़ सकता था और लड़की शरीयत की दृष्टि में उस भावी पति की पत्नी समझी जाती थी। (इनफसाले वलादत पृष्ठ १३८)

Pandit Lekhram Vedic Mission

"और यूसुफ भी जलील के नगर नासरत से यहूदिया में दाऊद के नगर की जो बैतुल्लहम कहलाता है गया इसलिये कि वह दाऊद के घराने और सन्तान से था कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखा जाए और ऐसा हुआ कि जब वह वहां थे उसके जनने के दिन पूरे हुए और अपना पहलोठा बेटा जनी।" (देखो लूका २।४-६)

पादरी साहेबान ! न्याय स्वभाव ! कुछ ध्यान से देखें कि मती १।२५ में लिखा है कि "वह अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया परन्तु उस को न जाना। जब तक कि वह अपना पहलोठा बेटा न जनी और उस का नाम यसूअ रखा।"

लूका अन्वेषण लिखता है कि यूसुफ गर्भवती मरियम के साथ नाम लिखाने गया। उसे ज्ञात था कि उसे गर्भ है और वह मेरा है क्योंकि उस ने वहां कुछ भी किसी प्रकार का आश्चर्य या दुःख या शोक तक नहीं किया। और पुनः नियमानुसार प्रसन्नता पूर्वक उस का नाम रखा। खतना कराया और खुदावन्द के उपस्थित करने को दोनों पति पत्नी पहलोटे बेटे को यरोशलम में लाए और पुनः लिखा है कि जिस समय माता पिता उस लड़के यसूअ को अन्दर लाते थे जिससे उस के लिए शरीयत की रीत्यनुसार कर्म करें। तब यूसुफ उसके बाप और मरियम उस की माता ने इन बातों से आश्चर्य किया और जब वह खुदावन्द की शरीयत के अनुसार सब कर चुके, तो जलील में अपने नासरत नगर को चले गए। उस के माता पिता प्रति वर्ष फसह की ईद में यरोशलम को जाते थे।"

(देखो लूका अध्याय २ आयत ४ से ४१)

शोक कि इतने कार्य होते रहे। लड़का हुआ। खतना हुआ। मूसा की शरीयत पर आचरण आदि आदि किन्तु मरियम बेचारी अभी तक मंगेतर रही। विवाहिता नहीं लिखा और न विवाह का वर्णन किसी इञ्जील में है। विवाह के विना सहवास पाप है। अतः वह मंगेतर नहीं थी और यूसुफ के वीर्य से ही गर्भवती थी। और केवल यही एक बार नहीं किन्तु ५, ६ बार गर्भवती हुई। बाल बच्चे हुए। किन्तु शोक कि अब तक कुंवारी और मंगेतर रही। न कुवारापन टूटा और न विवाह हुआ। किन्तु यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। क्योंकि लूका की इञ्जील में ही लिखा है :—

"और असीर के घराने से अना नाम फानोरेल की पुत्री एक बनियह थी। जो बहुत बूढ़ी थी। और उसने अपने कुंवारेपन से सात वर्ष एक पति के साथ विवाह किया था और वह विधवा लगभग चौरासी वर्ष की थी।" (लूका २।३६)

वास्तविक बात यह है कि लड़की माता पिता के घर में सदैव लड़की ही कहलाती है। चाहे कुछ लड़के बालों की माता भी हो। और सुसराल के घर में बेटी विवाहिता भी बहू (स्त्री) कहलाती हैं। और बूढ़ी होने तक भी वह बहू ही कहलाएगी। चाहे उस के बेटे की नववधू भी आजाए।

माताओं के नाम पर लड़के क्यों प्रसिद्ध होते हैं :—निम्न कारण हैं :—

(१) माता किसी धनी की लड़की और पिता निर्धन हो तो भी प्रायः ऐसा ही होता है। अथवा माता प्रसिद्ध वंश से और पिता अप्रसिद्ध से। × (१)

+ (१) शम्साबाद जिला फ़रुखाबाद के नवाबज़ादे अपनी माता के नाम से लिखे जाते हैं जैसे नवाब जाफ़र अली खान बिन्त नवाब जाफ़र बेगम साहिबा और श्रीमती मलका क्वीन विक्टोरिया कैसरे हिन्द के राजकुमार अपनी माता के नाम से।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

(२) नानके में लड़का उत्पन्न हो अथवा उसका पिता भी धर्म पत्नी के कारण उसके पिता के घर जा रहे।^(२)

(३) पिता छोटी आयु में मरजाए और घर का प्रबन्ध स्त्री के पास रहे।×(३)

(४) किसी व्यक्ति की बहुत स्त्रियां हूं। तो भी लड़के माताओं के नाम से प्रसिद्ध होते हैं।+(४)

(५) अथवा पति जीवित होने पर भी स्त्री कुलटा हो जाए या मरने पर दुराचारिणी हो अथवा हराम का लड़का हो। दुराचार से लिया गया हो तो भी माता के नाम से प्रसिद्ध होता है।×(५)

अब हम बताते हैं कि ईसाई ईसा को खुदा का कैसा बेटा कहते हैं।

(१) खुदा को किसी ने कभी न देखा। इकलौता बेट जो बाप की गोद में है। उसी ने बता दिया। (यूहन्ना १८)

(२) क्योंकि खुदा ने संसार को ऐसा प्यार किया कि उसने अपना इकलौता बेटा प्रदान किया। (यूहन्ना ३।१६)

(३) क्योंकि खुदाने अपने बेटे को जगत् में इसलिये नहीं भेजा कि संसार पर दंड की आज्ञा दे। (यूहन्ना ३।१७)

(४) बाप बेटे को प्रेम करता है। (यूहन्ना ३।२५)

(५) यही खुदा का बेटा है। (यूहन्ना १।३४

(६) आरंभ में कलाम (वचन) था, कलाम खुदा के साथ था और कलाम खुदा था और यही प्रारंभ में खुदा के साथ था। (यूहन्ना १।१-२)

(७) क्योंकि बाप भी अपने पूजकों को चाहता है। (यूहन्ना ४-२३)

(८) यह मेरा प्यारा बेटा है। जिस से मैं प्रसन्न हूं। (मती ३।१७)

(९) और मेरा प्यारा जिस से मेरा मन प्रसन्न है। (मती १२।१८)

(१०) उस बादल से एक आवाज आई इस विषय की कि यह मेरा प्यारा बेटा है। (मती १७।५)

(११) और उन्होंने जो नौका पर थे आ के उसे प्रणाम किया कि तू सत्यमेव खुदा का बेटा है। (मती १४।३३)

^(२) हनुमान् अंजना पुत्र।

×(३) मसीह मरियम का पुत्र।

+(४) कौशल्या पुत्र राम। केकयी पुत्र भरत। कुन्ती पुत्र युधिष्ठिर। कौन्तेय=अर्जुन।

×(५) वेश्याओं के लड़के प्राय: माताओं के नाम से पुकारे जाते हैं अथवा अन्य हरामी लड़के भी केवल माताओं के नाम से कहलाते हैं।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

(१२) और बादल से एक आवाज निकली कि यह मेरा प्यारा बेटा है उसकी सुनो।
(लूका ९।३५)

(१३) बादल से एक आवाज आई और यह कहती थी कि यह मेरा प्यारा बेटा है।
(मरकस ९।७)

(१४) पवित्रात्मा शरीर के रूप में कबूतर की भान्ति उतरी और आकाश से एक आवाज यह कहती आई कि तू मेरा बेटा है। (लूका ३।२२)

(१५) ऐसी आवाज आई कि यह मेरा प्यारा बेटा है। जिससे मैं प्रसन्न हूं। (पतरस १।१७)

(१६) जिस कृपा से उस ने हमें उस प्यारे में स्वीकृति प्रदान की। (इफीस्यून १।६)

(१७) पिता मुझे इस लिए प्रेम करता है कि मैं कपना बलिदान देता हूं। (यूहन्ना १०।१७)

(१८) अपने प्रिय पुत्र के राज्य में शामिल कराया।× (कुलिस्सूं १।१३)

(१९) खुदा के बेटे यसूअ मसीह की इञ्जील का आरंभ। (मरफस १।२)

(२०) आप को बचा यदि खुदा का बेटा है। (मती २७।४०)

(२१) क्योंकि वह कहता था कि मैं खुदा का बेटा हूं। (मती २७।४३)

(२२) आसमान से एक आवाज आई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है। (मरकस १।११)

(२३) वह महान् होगा और खुदावन्द तआला का बेटा कहलाएगा। (लूका १।३२)

(२४) सरदार काहन ने कहा कि यदि तू मसीह खुदा का बेटा है तो हम से कह। यसूअ ने कहा, उस से, हां, वही जो तू कहता है। (मती २६।६३)

(२५) उस के पश्चात् तुम आदम पुत्र को सर्वशक्तिमान् के दक्षिण ओर बैठे और आसमान के बादलों पर आता देखोगे। (मती २६।६४)

(२६) जिस से तुम ईमान लाओ कि यसूअ मसीह खुदा का बेटा है। (यूहन्ना २०।२१)

(२७) कुदरत के साथ उस के जी उठने के पश्चात् खुदा का बेटा सिद्ध हुआ।
(रोमियों का पत्र १।४०)

(२८) उस के बेटे यसूअ मसीह का रक्त है कि सारे पापों से पवित्र करता है।
(यूहन्ना की पत्री १।७)

(२९) पिता ईश्वर, और ईश्वर के पुत्र खुदावन्द यसूअ मसीह की ओर से।
(यूहन्ना की पत्री २ १।३)

(३०) इसलिये तुम जा कर उन्हें पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतस्मा दो।
(मती २८।२९)

+यह यूनानी शब्द है और इबरानी में प्रिय पुत्र की।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

यह उपरिलिखित प्रमाण हैं। जिन को पादरी लोग पुस्तकों अथवा व्याख्यानों में, मेला, बाजारों में सुनाया करते हैं। उनमें से संख्या ८, ९, १०, १२, १३, १४, १५, २२ वह प्रमाण हैं, जो बादलों उन की प्रतिध्वनियों अथवा आसमानी आवाजें या कुमरियों, कबूतरों की आवाजें गुट गू आदि हैं। जिनका मसीह अथवा इञ्जील लेखकों के अतिरिक्त और कोई गवःह नहीं।

शेष+संख्या १, २ उसे इकलौता बेटा कहते हैं।

संख्या ३, ५, ९, २३, २६, २७, २८, २९, २० में केवल बेटा कहा है।

संख्या ४ में प्रिय पुत्र कहा है।

संख्या ६ में उसे खुदा कहा है।

संख्या ७, १६, १७, १८ में केवल प्रेम करने के कारण बेटा कहा है क्योंकि मैं खुदा से प्रेम करता हूं। अतः उस का बेटा हूं।

इन समस्त उपरिलिखित प्रमाणों से सिद्ध है कि वह केवल प्रेम करने के कारण से ईश्वर पुत्र अपने आप को कहता था और क्योंकि ईश्वर को प्यार करता था। जिससे कोई विशेष वैशिष्ट्य सिद्ध नहीं होता।

क्योंकि उन्हीं इञ्जीलों में उसे आदम पुत्र, दाऊद पुत्र, इबराहीम पुत्र, यूसुफ पुत्र, मरियम पुत्र और नबी भी कहा है।×

अब हम यह बताते हैं कि और लोग भी संसार में ईश्वर पुत्र, पहलोठा, प्यारा, खुदा, नबी, मसीह कहलाते रहे। न कि केवल मसीह। विस्तार देखो बाईबल के निम्न स्थलों को :—

इसराईल खुदा का बेटा किन्तु पहलोठा था (खुरूज ४।२३)

फरिश्ते खुदा के बेटे (अयूब १।६)

नबी खुदा के बेटे (अयूब २८।७)

मैं ने तो कहा कि तुम सब इलाह हो और सब खुदा के बेटे हो। (जबूर ८२।६)

दाऊद बादशाह मसीह है। खुदा का बेटा है। खुदा उसका पिता है। वह खुदा का पहलोठा है। (जबूर ८९।२१, २६, २७ १३२।१०)

+मती १६।२७ २४।३० २५।३१ २६।६४

योहन्ना १।५१ मती १६।१३ १६।२७ १८।११

×मती १।१ २०।३२

मती १।२

यूहन्ना १।४५ ६।४२

मरकस ६।३ मती १३।५५

लूका २।२७ २।२१ २।२३

मती २१।११ यूहन्ना १७।३ २।४८ मती १।१६ लूका ४।२२

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

सुलेमान पैगाम्बर खुदा का बेटा और खुदा उसका बाप और सुलेमान मसीह और महान् है।
(समवईल २ ७।१४ सलातीक १।१.३६ तवारीख २ २६।१, २२)

यसाया नबी अपने आप को मसीह कहता है (६१।१)

खोरस बादशाह मसीह है। (यसाया ४५।१)

प्रेम करने वाले ईश्वर पुत्र। (मती ५।६)

आदम ईश पुत्र है। (लूका ३।३८)

सब ईश्वर पुत्र (यूहन्ना ११।३५)

सहस्रों लाखों ईश्वर पुत्र। सब संसार के लोग ईश्वर पुत्र हैं। (उत्पत्ति २।६)

इन के अतिरिक्त फिरऔन, नमरूद, शद्दाद, हिण्य कश्यप, बहलोल, मनसूर, यजीद, भुलाशाह, आदि समस्त संसार के सूफी, नवीन वेदान्ती मायावादी लोग अपने आपको खुदा कहते हैं। जब यह अवस्था है। तो मसीह की कोई विशेषता न रही।

किन्तु सर्वसाधारण की भान्ति वह भी एक मनुष्य ठहरा, न कि (ईश्वर रक्षा करे) खुदा या खुदा का बेटा। अब हम यह दिखलाते हैं कि खुदा का बेटा कहने का विचार ईसाईयों को कहां से सूझा और मसीह को किस लिये खुदा का बेटा लिखना और बनाना पड़ा।

स्पष्ट हो कि यूनानियों की यह साधारण बोल चाल की बात थी कि बहुत पूज्य और महान् व्यक्तियों को खुदा का बेटा कहते थे। जैसा कि प्रसिद्ध विद्वान् और योग्य लोग खुदा का बेटा कहलाए। फीसा गोर्स, रामेवल्स, हर क्यूलस, इन सब को यूनानी खुदा का बेटा पुकारते थे। सिकंदर बादशाह भी अपने आप को खुदा का बेटा कहलाता और सब दार्शनिक उसे ईश्वर पुत्र पुकारते थे जब कि उन सब के पिता विद्यनाम थे।

जब यूनान के लोगों की योग्यता और महत्ता होने पर भी यह अवस्था थी तो इस को दृष्टि में रख कर जब शिष्यों को इञ्जील का यूनानी भाषा में अनुवाद करके ईसाईमत को लेख बद्ध करना चाहा तो उन्होंने पौलुस (रसूल) के इस वचनानुसार कि :—

"यदि मेरे असत्य के कारण खुदा की सच्चाई उस के जलाल (प्रकाश) के लिये अधिक प्रगट हुई, तो मुझ को क्यों पापी की भान्ति आज्ञा होती है। और हम क्यों बुराई न करें जिस से भलाई निकले।" (रूमियों ३।८)

यह भयानक नियम फैलाना शुरू किया। क्योंकि जब तक मसीह को ऐसी उत्तम पदवियों से विभूषित न करते तब तक मूर्ख लोग कभी उन की बातों पर कान न धरते। इसी लिये ऐसी महती पदवियों से मसीह को प्रसिद्ध करना पड़ा क्योंकि ऐसे ही विचार यूनानियों के सर्वथा अनुकूल थे और अवश्य ऐसा ही किया गया।

इस पर पादरी ठाकुरदास महोदय फ़रमाते हैं कि :—

"यूनानी अपने महान् पुरुषों को उन खुदाओं का बेटा कहते थे जो स्वयं मनुष्य थे और वास्तव

www.aryamantavya.in

में हरक्यूलस और जोपड़ आदि के पिता थे। किन्तु मृत्यु के उपरान्त खुदा बन गए थे। क्या यहूदी जो एक उत्पत्ति कर्ता भगवान् के मानने वाले और उस पर विश्वास रखने में गर्व करते थे। उस सदीनी के विचार को अपने विचारों का सांचा समझते और उसके अनुसरण से अपने विचारों के अनुरूप होते। कदापि नहीं।" (इन्फ़साले वलादत पृ० ३३)

शोक कि पादरी महोदय ने उत्तर लिखने से पूर्व यह न सोचा कि यहूदियों का ईश्वर वही है जिसने बादल में होकर बनी इसराईल का नेतृत्व किया। आग में मूसा से बातें कीं और मुख दर्शन के बदले में पीठ दिखाई। क्या वह उत्पत्तिमान् ईश्वर नहीं ? जो पछताता दुःखी होता है। जिसने शैतान के बहकाने से मुफ्त में अय्यूब नबी का घर बरबाद किया। यूनान+ को बौद्धिक चालाकियां तो यूनान के साथ रहने दीजिये। हम तो आपको भारत में भी वह सारी कारवाई बताते हैं। देखिये, ईसाईयों का एक भजन है कि :—

ईसा मेरा राम रमय्या। ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया॥
मुख से ईसा ईसा बोल। तेरा क्या लगेगा मोल॥

वर्तमान में ही मुक्ति फौज (साल्वेशन आरमी) वालों ने ठाकुरदास, ईशरदास, रामदास, विशन दास, भगवान् दास आदि अपने नाम रखकर और गेरवे वस्त्र पहन कर हिन्दुओं को बहुत धोखा में डाला है और केवल इसी को पर्याप्त नहीं समझा किन्तु "यसूअ मसीह प्रचोदयात्" वाली गायत्री बना ली है। नंगे पांव फिरते और चंदन का तिलक आदि लगाते हैं। अतः इन सारी बातों पर विचार कीजिये कि ठाकुर, ईश्वर, राम, भगवान्, विष्णु आदि नाम हिन्दुओं के महापुरुषों के हैं। जिनको वह ईश्वर मानते हैं और वही यहां ईसाईयों ने इस प्रकाश युग में भी स्वीकार कर लिये तो क्या उस अन्धकार के युग में इनके पूर्वजों ने ऐसी कारवाई न की होगी ? अथवा करने में कुछ कमी रहने दी होगी ? कदापि नहीं।

+(१) इञ्जील से प्रतीत होता है कि मसीह खुदा का बेटा नहीं क्योंकि वह स्वयं कहता है कि मैं भूमि पर शान्ति कराने नहीं किन्तु तलवार चलाने को आया हूं क्योंकि मैं आया हूं कि पुरुष को उसके पिता और बेटे को उसकी माता और पुत्र वधू को उसकी सास से पृथक् करूं और मनुष्य के शत्रु उसके घर के ही लोग होंगे।

(मती १०।३४-३६)

(२)पुनः खुदावंद मसीह अपनी आग बरसाने वाली जिह्वा से फ़रमाते हैं कि मैं पृथिवी पर आग लगाने आया हूं और मैं क्या ही चाहता हूं कि लग चुकी होती। क्या तुम विचार करते हो कि मैं पृथिवी पर मेल करवाने आया हूं, नहीं, मैं तुम्हें कहता हूं प्रत्युत पृथकता। (लूका १२।४३)

मुसलमानों की एक हदीस में है "अल्खल्को अयालुल्लाहे फ़ाअहब्बुल्खल्का इलल्लाहे मिन अहसिन ली अयालूह, (अनुवाद) खलकत अर्थात् समस्त लोग खुदा के बेटे हैं अतः प्रियतर मनुष्यों में खुदा के समीप वह मनुष्य है जो भलाई करे खुदा के हां बच्चों के साथ। इसी हदीस पर मौलवी रूमी मस्नवी में लिखते हैं।—मा अय्यालो हजरै हिम बंशमशीरखाह ; गुफ्त अल्खल्को अय्यालुल्लाहे।

CC-0. Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जब यह अवस्था है तो किसी प्रकार भी मसीह का खुदा होना या खुदा के बेटा या इकलौता या पहलोठा होना सिद्ध नहीं हो सकता। केवल एक मिथ्या और धोका देने वाला वर्णन पीछे से पौलुस आदि ने सम्मिलित कर इञ्जील को बढ़ा दिया। जो सत्यान्वेषकों के पक्षपातपूर्ण अन्वेषण के विना सिद्धि के पद तक न पहुंच सका और इसीलिये बहिष्कृत है और शुद्ध करने योग्य है। परमात्मा जन्म मृत्यु, दुःख, रोग, शोक से शुद्ध है। वह सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी है और शरीर रहित तथा निराकार है। उसकी सत्ता में कोई किसी प्रकार का दोष नहीं। यह सारे दोष मनुष्यों में हैं। ईश्वर में नहीं।

अब हम अन्त में यह बताते हैं कि बाईबल की दृष्टि से भी प्रायः स्थानों पर केवल ईश्वर के एक होने की शिक्षा मिलती है। तीन की नहीं और तीन अकनूम का वर्णन भी पाया जाता है। देखो:—

यशाया ४५।५ ४६।९ इसतिस्ना ४।३५,३९ ६।४ खुरूज ६।३,७ १५।१९-३७ २०।१-३ मती २२।२५ २०।२०,२२ ९।१६,१७ २७।४६ १।२४ २३।२३ मरकस १२।३८ १३।३२ १०।२६,२९ यूहन्ना १७।३ १६।१७ तमताऊस २।५ ॥

एक बार पेशावर छावनी में लेखक बाबू सर्जन मल मंत्री आर्यसमाज पेशावर के साथ पादरी जोकस महोदय मिशनरी मिशन अफ़ग़ानिस्तान से मिलने गया। परस्पर के वार्तालाप में पादरी महोदय ने दावा किया कि बाईबल में खुदा को बाप कहा है। ऐसी उत्तम शिक्षा किसी धार्मिक पुस्तक में नहीं है।

मैंने उत्तर दिया कि नहीं और धार्मिक पुस्तकों विशेषतः आर्ष ग्रन्थों में इससे बढ़कर विद्यमान है। उन्होंने कहा किसी में भी नहीं, उनको सूझी ही नहीं। उनकी इस शेखी बघारने पर मैंने कहा कि आर्ष ऋषि तो एक ओर रहे वह तो विद्वान् ही थे। बाबा नानक जी ने भी बाईबल से बढ़कर शिक्षा दी है। पूछा, कहां ? मैंने कहा, देखिये :—

तुम मात पिता हम बालक तेरे।
तुमरी कृपा सुख घनेरे॥

देखिये ! बाईबल से सहस्रगुना बढ़कर माता भी कहा है कि ईश्वर को तुम माता पिता से अधिक अथवा माता पिता के समान प्रेम करो।

बतलाईये ! ऐसी शिक्षा बाईबल में कहां है ? यह तो प्रगट ही है कि माता का प्रेम पिता की अपेक्षा अधिक होता है। और संभवतः इस प्रेमाधिक्य के कारण मसीह भी मरियम पुत्र कहलाया, यूसुफ़ पुत्र नहीं। पादरी महोदय निरुत्तर हो गए।

अजमेर में पादरी गिरी महोदय से मिलने का अवसर बना। पादरी महोदय ने फ़रमाया कि तुम लोग बातें बाईबल से चुराकर कहते हो कि यह शिक्षा वेद की है जब कि वेद में कोई अच्छी शिक्षा ईश्वर संबंधी नहीं है। मैंने कहा कि यदि कोई आर्य ऐसा करता है, तो मैं उसे छली कपटी समझता हूं। आप कृपा करके कोई ऐसी शिक्षा बाईबल की बताएं जो वेद में न हो, आर्य लोग वेद की ठहराते हों और वह बाईबल की हो। फ़रमाया कि ईश्वर को पिता कहना यह शिक्षा केवल बाईबल है। तुम भी पादरियों की देखा देखी खुदा को बाप कहते हो। भला बताओ तो सही। यह वेदों में कहां है ?

http://dekhrahe.blogspot.com

www.aryamantavya.in

मैंने निवेदन किया कि यह शिक्षा वेद की है। बाईबल की नहीं। देखिये पवित्र वेद की श्रुति :—

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानिविश्वा।
यत्र देवाः अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥

(यज० ३२।१०)

वह परमात्मा हमारा बन्धु, पिता, माता वह सर्व कार्यों का पूर्ण कर्ता, समस्त लोक मात्र नाम, स्थान, जन्मों को जानता है और जिस नित्यानंद को अमृत लोक प्राप्त होके स्वेच्छा से विचरते हैं। वही हमारा प्रेरक, राजा न्यायकारी है। उसी की भक्ति करना आवश्यक है।

और इसी प्रकार देखो ऋ० १०।८२।३

इस पर पादरी महोदय लाल, पीले हो गए और कुछ उत्तर न दे सके।

—०—

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

दूसरा अध्याय

मसीह निष्पाप नहीं किन्तु पाप युक्त था

ईसाई पादरी कहते हैं कि मसीह निष्पाप था, अतः हमें मुक्ति दे या दिला सकता है। हम कहते हैं कि ऐसा नहीं किन्तु वह पाप युक्त था और इसी लिए ईसाईयों की मोक्ष आशिरःपाद असंभव है।

शोक कि ईसाईयों ने अपने इस निराधार दावा को पूर्ण करने के लिये मसीह का जीवन चरित कहीं नहीं रहने दिया और न इंजील ही कुछ बतलाती है। क्योंकि ३२ वर्ष को उमको आयु थी। जिनमें से ३० वर्ष का कोई यथार्थ वृत्तान्त किसी को ज्ञात नहीं। ३० वर्ष की जीवनी में उसने उपदेश शुरू किया और दो वर्ष ही व्याख्यान दिये कि सलीब पर लटकाए गये।

हम उस का प्रमाण किसी बाह्य गवाही से नहीं किन्तु इञ्जील से ही देते है। देखो लिखा है कि :—

यसूअ आप तीस वर्ष का हुआ जब शुरू किया।" (लूका ३।२३)

तीस वर्ष की आन्तरिक जीवनी का यथार्थ और विस्तृत वृत्तान्त किसी को ज्ञात है तो मसीह के पक्षपात में प्रगट करना नहीं चाहता जिस से कहीं सारे के सारे कलंक प्रगट न हो जाएँ। विचार का स्थान है कि सभ्य जाति ईसाई, संसार के अन्वेषक ईसाई, समस्त संसार के इतिहासज्ञ ईसाई और घर के संस्थापक के इतिहास पर यह अंधेरी घटा छाई हो। शोक! शतसहस्र शोक !!

क्योंकि मसीह का जीवन चरित सम्पूर्ण नहीं मिलता। केवल दो वर्षों के वृत्तान्त थोड़े थोड़े इञ्जीलों से प्राप्त होते हैं। इसलिए हम बाधित होकर उस पर सन्तोष करके मसीह के चाल चलन को संसार पर प्रगट करते हैं। ऐसा न हो कि कोई अज्ञोनता से धोखा खाये। और धर्म और आत्मा को किसी की चाटुकारिता में आकर हानि पहुंचाए। नंबर (१) मसीह को निर्दयता :—

"यह मत समझो कि मैं भूमि पर मेल कराने आया हूं किन्तु तलवार चलाने को आया हूं। क्योंकि मैं आया हूं कि पुरुष को उस के पिता और पुत्री को उस का माता और पुत्र वधू को उस की सास से पृथक् करूं।" (१०।३४, ३५)

पुनः वह स्वयं फरमाता है कि—

"मैं भूमि पर आग लगाने आया हूं। और मैं क्या हो चाहता हूं कि लग ही चुकी होती। परन्तु मुझे एक बपतिस्मा पाना है और मैं कैसा तंग हूं जब तक कि पूरा न हो। और क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवी पर मेल कराने आया हूं। नहीं, मैं तुम्हें कहता हूं किन्तु जुदाई।" (लूका १२।४९-५१)

पुनः मसीह प्रेरित करता है कि—

"यदि कोई मेरे पास आवे और अपने माता पिता, पत्नी, लड़के, भाई बहिनें अपनी आत्मा की शत्रता न करें मेरा शिष्य हो नहीं सकता। (लूका १४।२६-२७)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

पुनः रसूल मसीह फरमाता है—

"और उस समय भूमि के सब घराने छाती पीटेंगे।" (मती २४।३०)

पुनः दयालु मसीह के सम्बन्ध में लिखा है—

"और उनसे कुछ दूर बहुत सूरों का समूह चरता था। सो देवों ने उस की स्तुति कर के कहा कि यदि तू हम को निकालता है तो हमें उन सूरों के समूह में जाने दे। तब उसने उन्हें कहा कि जाओ और वे निकल के सूरों के समूह में गए और देखो सूरों का सारा समूह तट पर से नदी में कूदा और पानी में डूब मरा।" (मती ६।३१, ३२)

पादरी क्लारक महोदय ने इस पर भाष्य किया है कि "वह सूर संख्या में दो सहस्र थे।" इस पर मौलवा नूरुद्दीन महोदय ने क्या अच्छा कहा है कि "बौद्ध, आर्यों और जेनियों के सिद्धान्त ईसाई मत की दया से अधिक दया पर आधारित हैं कि किसी एक भी प्राणधारी को सताना धर्म और उचित नहीं समझते।"

पुनः मसीह ने तलवारें खरीदने को सब शिष्यों को आज्ञा दी। जैसाकि लिखा है कि "और जिस के पास नहीं अपने वस्त्र बेचकर तलवार खरीदे।" (लूका २२।३६)

इंजील में मसीह के तलवार चलाने का वर्णन भी विद्यमान है। "जब यहूदा जो उन बारहों में से एक था, आया और इस के साथ एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियां लिये सरदार काहिनों और कौम के बुजुर्गों की ओर से आ पहुंची। उसके पकड़वाने वाले ने उन्हें यह कह कर पता दिया था कि जिसे मैं चूमूं, वही है, उसे पकड़ लेना उस ने वहीं यसूअ के पास आ कर कहा हे रब्बी? सलाम। और चूम लिया। यसूअ ने कहा। ऐ मियां। तू काहे को आया? तब उन्होंने यसूअ पास आ कर यसूअ पर हाथ डाले और उसे पकड़ लिया और देखो यसूअ के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खेंची और सरदार काहिन के नौकर पर चला कर उस का कान उड़ा दिया।" (मती २६।४७-५२)

पुनः लिखा है कि :—

"जब उन्होंने जो उसके आस पास थे जो अवस्था होने वाली थी-देखी तो उस से कहा हे खुदावन्द? क्या हम तलवार चलाएं? उन में से एक ने सरदार काहन के नौकर पर तलवार लगाई और उस का दक्षिण कान उड़ा दिया।" (लूका २-४९, ५० यूहन्ना १८।१० मरकस १४।४६-४७)

(२) मसीह का झूठ

"तब उस के भाईयों ने उस से कहा यहां से चला जा और यहूदिया में जा। जिससे उन कार्यों को जो तू करता है तेरे शिष्य भी देखें।

क्योंकि ऐसा कोई नहीं जो कुछ काम छिप कर करे और चाहे कि आप प्रसिद्ध हो। यदि तू यह कार्य करता है तो अपने को संसार को दिखा। क्योंकि उस के भाई भी उस पर ईमान न लाए। तब यसूअ ने कहा कि मेरा समय अभी नहीं आया। पुनः तुम्हारा समय सदैव बना है। संसार तुम से शत्रुता नहीं रखता। परन्तु मुझ से शत्रुता रखता है। क्योंकि उस पर गवाही देता हूं कि उस के कार्य बुरे नहीं तुम ईद में जाओ मैं अभी ईद में नहीं जाता कि मेरा अभी समय पूरा नहीं हुआ। सो वह यह बातें

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

उन्हें कह के जलील में रहा। किन्तु जब उसके भाई चले गए थे तब वह भी ईद में गया, प्रगट नहीं किन्तु छिप के। तब यहूदी उसे ईद में ढूंडने लगे। (देखो यूहन्ना १७।५-११)

(३) मसीह शराबी था

इञ्जील में लिखा है :—इब्ने आदम खाता पीता आया और वह कहते हैं कि देखो एक खाऊ, शराबी, महसूल लेने वालों और गुंडों का यार है।" (मती ११।१९)

पुनः मसीह फरमाता है कि :—

"मैं तुम से सत्य कहता हूं कि मैं अंगूर का रस (अंगरी शराब) जिस दिन तक खुदा की बादशाहत में उसे नया न पियों पुनः न पियूंगा।" (मरकस १४।२५)

पुनः एक जलील में एक विवाह हुआ यसूअ का शिष्यों सहित वहां निमंत्रण था। पीते २ शराब घट गई। मसीह ने वहां छः मटके शराब के (ईसाईयों के कथनानुसार चमत्कार से) उत्पन्न कर दिये। प्रत्येक मटके में दो या तीन मन शराब की समाई थी अतः ३×६=१८ मन शराब वहां पर मसीह ने लोगों पर (खुदा के मार्ग में) बांटी और पिलाई। (विस्तार देखो यूहन्ना २।१-११)

(४) माता का निरादर

लिखा है कि "उस की माता और उसके भाई बाहिर खड़े हुए उस से बात किया चाहते हैं पर उस ने उत्तर में सूचना देने वाले से कहा "कौन है मेरी माता और कौन हैं मेरे भाई"
(मती २।४७ लूका ८।१८ मरकस ३।४)

पुनः लिखा है कि जब शराब घट गई तो यसूअ की माता ने उससे कहा कि उन के पास शराब नहीं रही। यसूअ ने उससे कहा कि हे औरत (स्त्री) मुझे तुझ से क्या काम ? (यूहन्ना २।४)

(५) चोरी=पशु चुराना

मसीह ने एक गधी उसके बच्चे सहित चुरवाई और फरेब सिखाया कि यदि कोई पूछे तो कहना कि मालिक ने मांगी है।

(६) धोखा

जैसाकि इञ्जील में लिखा है और जब वह यरोशलम के समीप पहुंचके बैतफिगा जैतून के पर्वत पास आए तब यसूअ ने दो शिष्यों से यह कह कर भेजा कि सामने के ग्राम में जाओ और वहां एक गधी बंधी है। उस के साथ उसका एक बच्चा पाओगे। खोल कर मेरे पास लाओ यदि कोई तुमसे कुछ कहे तो कहियो कि खुदावन्द को आवश्यकता है। वह उसी समय उन्हें भेज देगा। शिष्यों ने जैसा यसूअ ने फरमाया था वैसा किया और उस गधी को बच्चा समेत ले आए और वस्त्र उन पर डाले और उसे उस पर बिठलाया। (मती २१।१-७)

इंजीलों का इस में परस्पर विरोध है चूंकि मती की इञ्जील प्रथम नंबर पर है इस आधार पर हम भी इसी को पर्याप्त समझते हैं। किन्तु हम समझते हैं कि इतना विरोध क्यों हुआ ? मती जो सीधा

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

सादा मनुष्य था उस ने यथार्थ रूपेण गधी और बच्चा दो लिखे और सब स्थानों पर बहु वचन का प्रयोग किया। किन्तु दूसरे शिष्यों को यह बात सूझ गई कि यह तो चोरी है और मसीह पापी ठहर जाता है अतः गधी को दूर कर केवल गधी का बच्चा रहने दिया। (देखो मरकस ११-६ लूका १९-३० यूहन्ना १२।१४)

जिससे जुर्म बहुत थोड़ा हो जाए और मसीह दोषी न कहलाये। किन्तु सूर्य प्रकाशवत् बात कब छिप सकती है।

देखिये! एक तो मसीह ने गधी चुरवाई या चुराई और दूसरा गधी का बच्चा चोरी किया है। इस का उत्तर भारतीय दंड विधान में देखो। कि स्वामो की आज्ञा के बिना वस्तु लेना। सो मसीह ने किया। गधी का मूल्य न्यून १०) और बच्चा का मूल्य ५) कुल योग १५) चोरी हुए माल के होते हैं।
(देखो भारतीय दंड विधान धारा ३७९)

फ्रेब (धोखा) इसलिए है कि शिष्यों को कहा कि यदि कोई पूछे तो कहना कि खुदावन्द मांगता है। खुदावन्द के अर्थ कोष में स्वामी=मालिक के हैं। ऐसा ही सामान्येन मालिक के अर्थों में प्रयुक्त होता है और मसीह को शिष्य भी खुदावन्द कहते थे। अभिप्राय यह कि जब कोई मार्ग गुजरन वाला देखकर पूछे तो खुदावन्द के अर्थ मालिक समझ कर चला जावेगा. और उनका अभिप्राय दोधारी तलवार की भान्ति मालिक और ईसा से था। जिससे स्पष्ट चोरी और फरेब=धोखा प्रगट होता है। जैसे कोई व्यक्ति किसी मकान का स्वामी=मालिक है और उसका नाम इब्राहीम है, एक चोर है उसका नाम भी इब्राहीम है। मालिक की अनुपस्थिति में एक व्यक्ति उस के अन्दर जा कर उस का कुर्ता उतारता है और ले जाता हो। जब कोई नौकर अथवा साधारण परिचित व्यक्ति उस से पूछे कि कहां ले जाता है? तो वह कहे कि इब्राहीम ने मांगा है। वह वहां बाजार में खड़ा है। तो निस्सन्देह उस पर विश्वास करके जाने देगा। ऐसी धोखा दही की चोरी प्रायः नगरों में होती है। ठीक ऐसो ही अवस्था इस स्थान पर हुई। इस आधार पर यह दो जुर्म (दोष) हैं। एक पशु चोरी तथा दूसरा दोष फरेब का है। (३७९ भारतीय दंड विधान और १७० धारा, भारतीय दंड विधान) और मसीह इन दोनों धाराओं के दोष का दोषी है। स्पष्ट हो कि यह गधी और गधा दोनों मसीह के जीवन काल तक स्वामी को लौटाए नहीं गए और न उन का मूल्य दिया गया। अतः स्पष्ट चोरी है। कोई सत्य स्वभाव जन इस से इन्कार नहीं कर सकता और न उसके दोषी को छोड़ सकता है।

(७) मसीह की अज्ञानता

इञ्जील में लिखा है कि प्रातः वह बैतेअनीना से बाहिर आए। उसको भूख लगी और दूर से अंजीर का एक वृक्ष पत्तों से लदा हुआ देख के वह (मसीह) निकट गया कि संभवतः उस में कुछ पावे। जब वह समीप आया तो पत्रों के अतिरिक्त कुछ न पाया, क्योंकि अञ्जीर की ऋतु न थी। यसूअ ने उसे संबोधित करके कहा कि तुझ से फल कोई कभी न खावे। और इस के शिष्यों ने सुना।
(मरकस ११।१२-१४ मती)

एक योरोपियन विद्वान् ने इस पर क्या अच्छा फरमाया है कि "यदि ईसाई मत के वाहयात सिद्धान्त, अकारण अत्याचार और अविद्या देखनी चाहो तो मती और मरकस की इञ्जील खोलकर अञ्जीर की गाथा पढ़ो। उस वृक्ष के ऋतु के न होने से फल उत्पन्न न होने के कारण भूख के समय

www.aryamantavya.in

शाप देकर सुखा दिया था। यदि ईसा शक्तिमान् खुदा था। तो अञ्जीर के वृक्ष को उसने स्वयं बनाया था। उसके पढ़ने की स्वयं नियत की थी, स्वयं ही उस के फल देने के लिये समय ठहरा दिया था। इस प्रकार स्वयं ही उस को ऋतु न होने पर फल देने से रोका था। स्वयं ही उस वृक्ष से फल देने की आशा की। जिस पर फल का होना असंभव बना दिया था। और अपने असीम प्रेम से इस दोष पर क्रोध आया कि वृक्ष ने वह वस्तु क्यों नहीं दी जो वस्तु उत्पन्न करने से स्वयं खुदा ने उस वृक्ष को निषेध कर दिया था यदि ईसा का यही प्रम है, तो उस के शिष्य बहिश्त स्वर्ग (यदि कोई है) नहीं जा चुके।"

(८) पर नारियों से अकारण प्रेम

पहिली घटना इञ्जील में है कि वह एक ग्राम में पहुंचा और मिरथा नामी एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा। मरियम नामी उस की बहिन थी। जो यसूअ के पांव के समीप बैठ के उस का कलाम—वचन सुनती थी। पर मिरथा बहुत सेवा से घबराई हुई उस के समीप आकर बोली कि हे खुदाबन्द ? क्या तुझे अपेक्षा नहीं कि मेरी बहन ने मुझे अकेली सेवा में छोड़ा है, अब उसे कहे कि मेरी सहायता करे। तब यसूअ ने उत्तर में उसे कहा मिरथा ? तू बहुत वस्तुओं के लिए चिन्ता और घबराहट में है। सो मरियम ने वह अच्छा भाग चुना है। जो उससे पुनः न लिया जायेगा। (लूका १०।३८ ४२)

पुनः लिखा है कि मिरथाने जब सुना कि यसूअ आता है, उसका स्वागत किया। पर मरियम घर में बैठी रही। (यूहन्ना ११।२०)

पुनः लिखा है कि मिरथा यह कह के चली गई और चुपके अपनी बहिन मरियम को बुला के कहा कि उस्ताद=गुरु आया है। और तुझे बुलाता है, वह बात सुनते ही शीघ्र उठी और उस के पास आई। (योहन्ना ११।२८)

दूसरी बार शिष्य खाने को मोल लेने नगर में गए। सामरिया को एक स्त्री कुप पर पानी भरने आई। यसूअ ने कहा कि मुझे पीने को दे। सामरिया की इस स्त्री ने उससे कहा क्योंकर तू जा यहूदी है। मुझ से जो सामरिया की स्त्री हूं। पानी पीने को मांगता है ? क्योंकि यहूदी सामरियों से प्रेम नहीं रखते हैं। यसूअ ने उत्तर में उससे कहा कि यदि तू खुदा की बखशीश को और जो तुझसे कहता है कि मुझे पीने को दे। यह जानती है कि वह कौन है ? तो तू उससे मांगती। और वह तुझे पानी देता है।"

पुनः लिखा है कि :—

यसूअ ने उससे कहा कि जाके अपने पति को बुला और यहां आ। स्त्री ने उत्तर दिया कि मैं पति रहित हूं। यसूअ ने कहा कि तूने ठीक कहा कि मैं पति रहित हूं क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है और वह जो अब तू रखती है तेरा पति नहीं। तूने यह सत्य कहा कि इतने में उसके शिष्य आए और आश्चर्य किया कि वह स्त्री से बातें करता था। पर किसी ने कहा कि तू क्या चाहता है, अथवा उससे किसलिये बातें करता है ?" (योहन्ना ७।७-२० मती २६।७-१३)

तीसरी घटना - यसूअ ने एक दुराचारिणी स्त्री को अकारण बहाना बनाकर बचा दिया। जबकि उसने दुराचार कराया और पकड़ी गई थी ज्ञात नहीं इस परदा डालने से क्या प्रयोजन था ?

(देखो योहना अ० ८)

चौथी घटना—बैतअना के स्थान पर एक स्त्री मरियम नामी (संभवतः वही पहिली घटना वाली)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

संगमरमर के इतर दान में बहुमूल्य इतर उस के पास लाई। जब वह खाने बैठा, तो उसके सिर पर डाला। शिष्यों ने कई बार आक्षेप किया। किन्तु मसीह ने उसको न रोका और यह कहा कि जहां इञ्जील की मनादी=घोषणा होगी। यह भी उसकी स्मृति के लिये कहा जाएगा।

(देखो मती २६।६-१३ योहन्ना १२।४)

(९) सब्त के दिन कार्य किया

लिखा है। उस समय यसूअ सब्त के दिन खेतों में से जाता था। और उसके शिष्य भूखे थे। वह बालें तोड़ तोड़ कर खाने लगे। तब फ़रीसियों ने देख के उससे कहा। देख तेरे शिष्य वह कार्य करते हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं। (मती १२।१,२)

और खुदा की आज्ञा थी कि :-

"सब्त को काम करने वाला मार डाला जाए।" (इसतिसना २१।३३)

(१०) मसीह गाली निकालता था।

इञ्जील में लिखा है। मसीह के वचन-हे फ़रेबी फ़क़ीहो ! और फ़रीसियो ! तुम पर शोक। हे अंधे मार्ग प्रदर्शको ! तुम पर शाक। हे बेसमझो और अन्धो ! तुम प्रगट में सत्यवादी दिखाई देते हो पर आन्तरिक रूपेण ठगी और शरारत से भरे हो इत्यादि २।

देखो मती अ० २३—लूका अ० १२—मरकस अ० १२

इतने दोष हमने उस चुने हुये और मसीह के कल्याणेच्छु शिष्यों के बने हुये इञ्जील नामी पुस्तक से उद्धृत किये हैं। जो वास्तव में शपथ ग्रहण करके बैठे थे कि मसीह की बुराई को पुस्तक में न लिखेंगे। किन्तु (कल्याण हो) इस सावधानी के होते हुए भी मसीह दोषी हैं।

स्त्री का बच्चा नेक नहीं है।

"मनुष्य कौन है कि पवित्र हो सके। और वह जो स्त्री से उत्पन्न हुआ ? क्या है कि सच्चा ठहरे ?" (अयूब १५।१४)

"कौन है जो अपवित्र से पवित्र निकाले ? कोई नहीं।" (अय्यूब १४।४)

"क्या मरणधर्मा मनुष्य खुदा के सम्मुख सच्चा ठहरेगा ?" (अय्यूब ४।१८)

"मनुष्य खुदा के आगे क्योंकर सत्यवादी ठहरेगा ?" (अय्यूब ९।२)

"पस खुदा के सम्मुख मनुष्य क्यों कर सच्चा समझा जाए और वह जो स्त्री से उत्पन्न हुआ है क्योंकर पवित्र ठहरे।" (अय्यूब २५।४)

"कोई मनुष्य प्राणधारी तेरे सम्मुख सत्यवादी नहीं ठहर सकता।" (ज़बूर १४३।२)

"यदि हम कहें कि निष्पाप हैं तो हम झूठे हैं और आपको धोखा देते हैं।"

(योहन्ना की पत्री १।८)

Pandit Lekhram Vedic Mission

"कोई सत्यवादी नहीं। एक भी नहीं। कोई शुभ कर्मा नहीं। एक भी नहीं।"
(रूमियों की पत्री ३।११,१३)

"कौन कह सकता है कि मैंने अपने हृदय को पवित्र किया है? मैं पाप से पवित्र हूं।"
(अमसाल २०।१६)

"कोई मनुष्य भूमि पर ऐसा सच्चा नहीं कि पुण्य करे और भूल न करे।" (वाइज़ ७ २०)

परिणाम—१

मसीह क्योंकि स्त्री का बच्चा है। इसलिये नेक नहीं। मरियम हव्वा के क्रम से अपवित्र थीं। अतः उससे पवित्र नहीं निकल सकता और न कोई निकाल सकता है। अतः मसीह न तो नेक है और न पवित्र है। और यह हम ही नहीं कहते किन्तु स्वयं मसीह को भी स्वीकार्य है कि "तू मुझे नेक क्यों कहता है? नेक कोई नहीं किन्तु एक अर्थात् खुदा। (मरक़स १०।१८ मती १६।१७)

शरीयत की पाबंदी?

मसीह कहता है "यह मत समझो कि मैं तोरेत या नबियों की पुस्तक मन्सूख=स्थगित करने आया हूं। मन्सूख=रद्द करने नहीं किन्तु पूरी करने आया हूं।" (मती ५।१७)

मसीह ने अपना ख़तना कराया। बपतस्मा पाया। योहन्ना का शिष्य हुआ इत्यादि शरीयत की रीतियों को पूरा किया। अब हज़रत पौलुस कहते हैं कि "पर कोई मनुष्य शरीयत पर आचरण करने से सच्चा न ठहरेगा। (रूमियों ३।२०)

पुनः लिखा है "जो शरीयत पर विश्वास रखता है वह लानत क आधीन में है।"
(गलतियों ३।१०)

पुनः स्पष्ट लिखा है "मसीह ने हमें मोल लेके (खरीदकर) शरीयत की लानत से छुड़ाया कि वह हमारे बदले में लानती हुआ।"

परिणाम

न स्वयं उसकी मुक्ति हुई और न किसी को (ईश्वर रक्षा करे) मुक्ति दिला सकता है। अतः उस पर विश्वास रखना भयावह है।

मसीह लकड़ी पर फांसी दिया गया।

जैसा कि मूसा पैगम्बर फरमाते हैं "क्योंकि वह जो फांसी दिया जाता है। खुदा का लानती है।
(इसतिसना २१।२३)

पुनः पौलुस फरमाते हैं "क्योंकि लिखा गया, जो कोई काठ पर लटकाया गया सो लानती है।"
(गलीतों ३।३)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जजमेंट=फैसला=निर्णय

हज़रत पौलुस फ़रमाते हैं कि :—

"चोर, लालची, शराबी, गाली बकने वाले लुटेरे, खुदा की बादशाहत के वारिस=उत्तराधिकारी न होंगे। (फ़नतियों १।६।१०)

"प्रत्येक जो खुदा से उत्पन्न हुआ वह पाप नहीं करता। और जो पाप करता है वह ····का बेटा है।" (योहन्ना १।३।८,९)

लानती सदैव की आग में रहेंगे। जैसा कि लिखा है "हे लानतियो ! मेरे सम्मुख से चले जाओ, उस सदैव की आग में जो इबलीस=शैतान और फ़रिश्तों के लिए तैय्यार की गई है। (मती २५।४१)

ईसाई न तो ईमानदार हैं और न मुक्ति प्राप्त करेंगे।

इञ्जील में ईमानदारों के यह चिह्न लिखे हैं :—"और वे जो ईमान लाएंगे। उनके साथ यह चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से देवों को निकालेंगे और नई भाषाएं बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे और यदि कोई मार देने वाली वस्तु पीयेंगे, उन्हें कुछ हानि न होगी। वे रोगियों पर हाथ रखेंगे तो चंगे हो जायेंगे।" (मरकस १६।१७,१८)

क्योंकि मैं तुम से सत्य कहता हूं कि यदि तुम्हें राई के दाने के बराबर ईमान होता तो यदि तुम इस पर्वत से कहते कि यहां से वहां चला जा तो चला जाता और कोई बात तुम्हारी असंभव न होती। किन्तु इस प्रकार के देव प्रार्थना और व्रत के विना नहीं निकाले जाते। (१७।२०,२१)

क्योंकि ऐसा संसार में कोई नहीं। अतः गतं न शोचामि कह कर हम दावा के साथ कहते हैं कि इस समय कोई ईमानदार नहीं। क्योंकि ऐसे चिह्न ईसा के कथनानुसार किसी के साथ नहीं। किन्तु योहन्ना के कथनानुसार सब पापी हैं। यह तो इञ्जील में ही लिखा है कि जो पाप करता है वह ··· का बेटा है।

जैसा कि पादरी सफ़दर अली महोदय फ़रमाते हैं कि "इसीलिये पवित्र इञ्जील की आज्ञा हुई है कि जो लोग ईश्वरीय आदेशों और वाणी से परिचित नहीं हैं और पाप करते हैं। न्यून दंड भुक्तेंगे। किन्तु जो ईश्वरीय वाणी पाकर और जान बूझ कर पाप संयुक्त होते हैं वह अधिक दंड के भागी बनेंगे। अतः यह आदेश निस्संदेह न्यायकारी भगवान् का है। जिसके सामने किसी का पक्षपात नहीं है।

(न्याज़ नामा पृष्ठ ३८ लखनऊ १९७८ ईस्वी)

इन सब प्रमाणों से प्रगट है कि मसीह ने मोक्ष प्राप्त नहीं किया और न ईसाई मोक्ष पावेंगे। यदि बाईबल सच्ची है तो भी ईसाईयों की मुक्ति बाईबल की दृष्टि से असंभव है।

तौरेत की दृष्टि से नियोग ठीक है।

नियोग सम्बन्धी आदेश :—यदि कई भाई एक स्थान पर रहते हूं। और एक उनसे सन्तान रहित मर जाए तो उस मृत को स्त्री का विवाह किसी अपरिचित से न किया जाए किन्तु उसके पति का भाई

www.aryamantavya.in

उससे एकान्त वास करे और उसे अपनी पत्नी करले । भावज का अधिकार उसे प्रदान करे और यूं होगा कि उसका पहलोठा जो उससे उत्पन्न हो, तो उसके मृत भाई के नाम पर स्थिर होगा । जिससे उसका नाम इसराईल में से न मिट जाए ।" (तौरेत इसतिसना २५:५,६)

नियोग न करने पर दंड :—

और यदि वह पुरुष अपने भाई को पत्नी को लेना न चाहे तो उस मृत भाई की पत्नी द्वार पर बुजुर्गों के पास जाए और कहे कि मेरे पति के भाई के इसराईल में अपने भाई का नाम स्थिर रखने से इन्कार किया और भावज का अधिकार देना स्वीकार नहीं किया । तब उसके पति के वंश के बड़े उस पुरुष को बुलाएं और उससे बातचीत करें । सो यदि वह इस बात पर स्थिर रहे और कहे कि मैं नहीं चाहता कि इसे लूं । तब उसके भाई की पत्नी बड़ों के सम्मुख उसके समीप आवे और उसके पांव से जूती निकाले और उसके मुख पर थूक दे और उस पुरुष के साथ जो अपने भाई का घर न बनावे यही किया जाएगा । और इसराईल में उसका यह नाम रखा जाएगा कि यह उस मनुष्य का घर है जिसका जूता निकाला गया ।" (इसतिसना २५।७-१०)

पुनः रूत की पुस्तक में रूत की गाथा पढ़ो और राखिल और लियाह दो अन्य स्त्रियों के समाचार का अध्ययन करो । इसी रूत के उदर से बूअज़ के वीर्य से उबेद नाम का लड़का उत्पन्न हुआ । जिसका पोता दाऊद नबी था । और इसी के वंश से ईसाईयों के कथनानुसार मसीह उत्पन्न हुआ ।"

(रूत की पुस्तक ४।१-२२)

पादरी डी जी महोदय अस्काट फरमाते हैं—"एक वंशावली लूक़ा की इञ्जील में भी है । उसमें प्रत्येक कुछ उसके विरुद्ध पाया जाता है । (लूक़ा ३।२३-४८)

किन्तु इन दोनों का सामंजस्य कठिन नहीं । अधिकतर भाष्यकारों का यह विचार है कि जो यसूअ का पिता कहलाता है । याकूब का सगा पुत्र और शरीयत की दृष्टि से हेली का उत्तराधिकारी और बेटा था । अर्थात् जब हेली निःसन्तान मर गया तो उसके भाई याकूब ने शरीयत के आदेशानुसार अपने भाई की पत्नी ले कर उसके लिये वंश चलाया । (लूका २० २८ इसतिसना २५।५)

जैसा कि यह बात वंशावली से प्रगट हो सकती है । इसका विस्तार यह है कि सुलैमान और नाहितान दाऊद के दोनों पुत्र थे और नाथान सुलेमान के वंश से हुआ । और मथान नाहितान से । जब मथान ने असथा को पत्नी बनाया और उससे हेली उत्पन्न हुआ । अतः यह दोनों अर्थात् याकूब और हेली एक ही माता के पुत्र थे । और जब हेली पत्नी कर सन्तान विहीन ही मर गया तब उसके भाई याकूब ने उसकी विधवा को अपनी पत्नी कर लिया । जिससे यूसुफ उत्पन्न हुआ । अतः यूसुफ याकूब का औरस पुत्र और हेली का क्षेत्रज पुत्र था । और इससे दोनों वंशावलियों की सच्चाई प्रगट है ।

(तफ़सीरे मती इलाहाबाद संस्करण पृ० २१,२२)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

वंशावली यह है ।

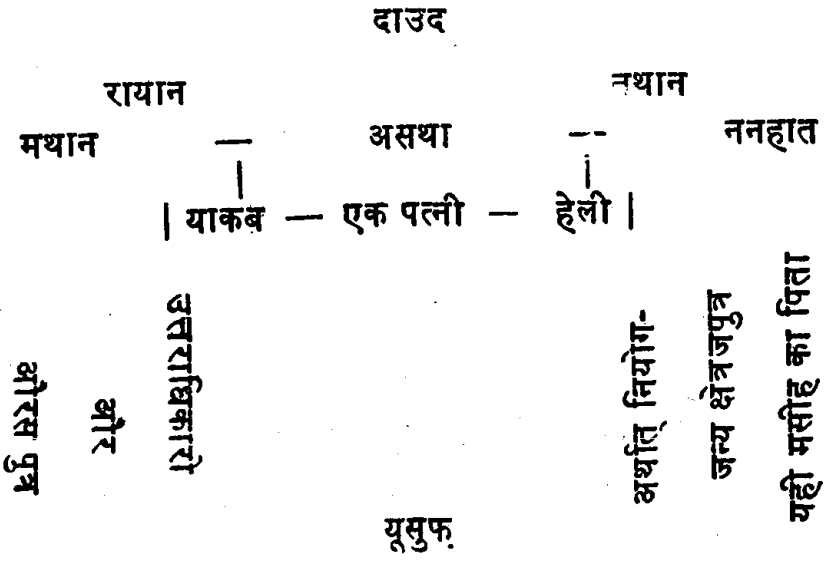

—o—

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

तीसरा अध्याय

मसीह के चमत्कार

मूर्ख हिन्दुओं को फुसलाने और जाल में फंसाने के लिए ईसाई लोग चमत्कार का वर्णन किया करते हैं कि ईसाई मत की सच्चाई का यह प्रमाण है कि मसीह ने चमत्कार दिखाए । अतः वह खुदा था । इत्यादि ।

स्पष्ट हो कि यदि चमत्कार दिखाना ही धर्म के सच्चा होने का प्रमाण है तो संसार में कोई मत भी झूठा नहीं है । और सभी चमत्कार दिखाने वाले खुदा हैं । जैसे यहूदियों में नूह, इब्राहीम, दाऊद, मूसा, याकूब, यसूअ आदि ने बाईबल की दृष्टि से चमत्कार दिखाए । और मोहम्मदियों में मोहम्मद, अब्दुल्कादिर जैलानी, शम्स तबरेज़, मुईयुद्दीन चिश्ती आदि ने हदीसों और इसलामी पुस्तकों की दृष्टि से चमत्कार दिखाए ।

बुद्धों और जैनियों में बुद्ध, आदि नाथ, पारसनाथ, महावोर आदि ने आश्चर्ययुक्त बातें अर्थात् बौद्ध, शास्त्रादि की दृष्टि से किए । पारसियों में ज़रदुश्त ने असंख्य चमत्कार दिखाए ।

(देखो ज़न्दावस्ता)

हिन्दुओं में गोरख नाथ, शंकराचार्य, नानक, कबीर, पूर्ण, महादेव, विष्णु, कृष्ण, राम, बावन, काली, भैरों आदि ने सैंकड़ों चमत्कार दिखाए । किन्तु ईसाई इन सब मतों को मिथ्या और चमत्कारों को झूठा जानते हैं । तो पुनः हम इन्हीं बातों से मसीह को और बाईबल को किस प्रकार सच्चा मान सकते हैं ? जब कि स्वयं बाईबल में लिखा है कि:—

"बहुत से झूठे नबी उठेंगे जो बहुतों को गुमराह करेंगे । और अधर्म के बढ़ाने से बहुतों का प्रेम ठंडा हो जाएगा ।" (मती २४।११)

"यदि कोई तुम से कहे कि मसीह यहाँ या वहां है तो उसे न मानना । क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठेंगे और ऐसे बड़े चिह्न और चमत्कार दिखावेंगे कि यदि हो सकता तो वह पूज्यों को भी मार्ग भ्रष्ट करते ।" (मती २४।११)

"नबी मेरा नाम लेके झूठी नबुव्वत करते हैं । वह झूठे स्वप्नों, झूठे परोक्षज्ञान और निराधार बातें तथा अपने हृदयों की मक्कारियां नबुव्वत की भान्ति पर प्रगट करते हैं ।" (यरमियाह १४।१४)

"मैं ने सुना जो नबियों ने कहा । मेरा नाम लेके झूठी नबुव्वत करते हैं और कहते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा । कब तक यह नबियों के मन में रहेगा कि झूठी नबुव्वत करें । हां, वे अपने मन की कायरता के नबी हैं ।" (यरमियाह ४३।२५, २६)

"बहुत से झूठे पैग़म्बर संसार में निकल आए हैं ।" (योहन्ना १।१६।१)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

"पर झूठे नबियों से सावधान रहो जो तुम्हारे पास भेड़ों के वेश में आते हैं । पर अन्दर में फाड़ने वाले भेड़िए हैं ।" (मती ७।१५)

"झूठे नबी ही उस जाति में थे जैसे कि झूठे गुरु तुम में हूंगे ।" (पतरस २।२।१)

"क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठेंगे और निशानियां (चिह्न) और चमत्कार दिखायेंगे। यदि संभव होता तो महा पुरुषों को भी मार्गभ्रष्ट करते ।" (मरकस १३।४२)

"वे तुम से झूठी नबुव्वत करते हैं कि तुम को तुम्हारे देश से आवारा करें (भटका दें ।"
(यरमियाह २७।१०)

झूठे नबी तलवार और काल से मारे जाएंगे ।" (यरमियाह १४।१५)

अब हम मसीह के सम्बन्ध में ऊपरि लिखित स्मृतियों की पड़ताल करते हैं। संख्या (१) मसीह ने चमत्कार दिखाए। संख्या (२) मसीह सलीब से मारा गया। अर्थात् अपनी मौत से नहीं मरा।

संख्या (३) देश में फूट डलवाना और लोगों को घर बार से खदेड़ना चाहता था।

संख्या (४) मसीह के चमत्कारों के सब गवाह बेईमान हैं। निम्न प्रमाणों :—

(क) यहूदाह बेईमान हैं। (मती २६।१४, २१, २५)

(ख) पतरस बेईमान और शैतान के भक्त हैं। (मती २६।६९, ७५, १४ २९, १४।२६)

(ग) याकूब और योहना बेईमान हैं। (मती १,,१७।१७)

(घ) सब बारह शिष्य बेईमान हैं। (मरकुस १६।१५ मती १६।६-८, १०।२
पतरस १, २।२ योहन्ना ६।६६
मती १७।१४-२१)

अतः मसीह झूठा नबी है। जब अन्य चमत्कार दिखाने वाले झूठे हैं तो मसीह किस प्रकार सच्चा हो सकता है ? जबकि जहाँ किसी विद्वान् योग्य यहूदी ने चमत्कार के सम्बन्ध में प्रश्न किया। वहां हज़रत मसीह स्पष्ट टाल गए। चमत्कार सर्वथा न दिखा सके। अतः हम अथवा कोई अन्य उन के सच्चा होने पर किस प्रकार और कब विश्वास कर सकता है ?

मसीह के चमत्कारों के प्रकार

(१) मृतकों को जीवित करना।

(२) अन्धों को आंखें देना। कोढ़ियों को चंगा करना।

(३) जिनों, भूतों, देवी, बुरी रूहों का स्त्रियों और बच्चों से निकालना।

(४) मछली का शिकार जाल से मारना।

(५) थोड़ी वस्तु बहुत लोगों को खिला देना।

इन पांच प्रकार से बहुत अधिक चमत्कार मसीह के जिनों, भूतों, देवी और बदरूहों का स्त्रियों और बच्चों से निकालना। जिन का हम ही खंडन नहीं करते प्रत्युत स्वयं पढ़े लिखे ईसाई और विशेषकर

www.aryamantavya.in

योरोपियन डाक्टर महोदय इस प्रकार के चमत्कारों का खंडन कर रहे हैं, और कहते हैं कि यह मूर्खता के युग की बातें हैं।

अन्धों को आंखें देना आदि आज कल के युग के बौद्धिक युग में सैंकड़ों डाक्टर आंखों का उपचार करते हैं और आंखें निकाल कर बना देते हैं जिससे सहस्रों, लक्षों मनुष्य ठीक हो जाते हैं। यह वैद्यक की बात है। चमत्कार का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। भारत में भी सैंकड़ों सियाने अन्धों का उपचार करते और उनकी आंखों में मट्टी डालकर आखें देते हैं। उन दिनों वहां एक तालाब में भी ऐसा ही प्रभाव विद्यमान था। (योहन्ना ५।१-६)

मृतकों को जीवित कर देना यह केवल एक कहानी है। क्योंकि मसीह महोदय का वहाँ यह कथन विद्यमान है। यह मरा नहीं किन्तु केवल बेहोश है। लड़की मरी नहीं किन्तु सोती है।

(मती ६।२४, मरकस ५।३६)

क्योंकि मसीह ईसाईयों के कथनानुसार सच्चा मनुष्य था, छली कपटी नहीं था। अतः उसने अवश्यमेव सत्य कहा कि वह सोती है, मरी नहीं। अतः यह किसी प्रकार का चमत्कार नहीं है।

मछली का शिकार भी सैंकड़ों मछली पकड़ना जानने वाले करते हैं, और लाखों ऐसे विद्यमान हैं, जो मसीह से बहुत अधिक मछली पकड़ सकते हैं। गंगा नदी में नरोरा राज घाट जिला बुलन्दशहर जहां से बड़ी नहर निकली है। अंग्रेजों ने ऐसी चतुराई की है कि मिनटों में मनों मछली पकड़ सकते हैं। अतः यह उस से सहस्र गुना बढ़ कर चमत्कार है। शेष रहा, थोड़ी वस्तु से बहुतों की भूख मिटाना। यद्यपि यह चमत्कार घी में भी विद्यमान है किन्तु ऐसे ही घोषित चमत्कार सहस्रों व्यक्ति मानते हैं कि मुहम्मद साहिब, पीर रत्न नाथ साहिब और खाजा मुय्यीयुद्दीन साहिब ने किये। आगे झूठ कहने वालों की गर्दन पर। और वास्तविक बात सब के लिए यही है कि :—

पीरां नमेपरन्द मगर मुरीदां मे परानंद।+

अब केवल एक चमत्कार अवशिष्ट है। अर्थात् मसीह का मृतकों से जी उठना। पाठक इस को भी देखलें कि यह कई कारणों से मिथ्या है। ईसाई कहते हैं कि मसीह आसमान पर खुदा के दाएं (दक्षिण) हाथ बैठा है। हम पूछते हैं कि क्या खुदा के दक्षिण, वाम हाथ भी हैं। यदि नहीं तो बैठना स्वयं असंभव है। दूसरी बात क्या आसमान कोई बहुत है ? यदि नहीं ? जैसा कि समस्त ज्ञानी बुद्धिमान् मानते हैं। तो मसीह का जाना, बैठना और जीवित होना तीनों केवल झूठ हैं। इस के अतिरिक्त मृतकों से जीवित होने के जितने गवाह है, वह विश्वास के पद से गिरे हुए हैं।

(१) हाकिम, वह मसीह का सहायक था। (देखो मती २७।२६)

(२) हाकिम (अधिकारी) की स्त्री, वह मसीह की बहुत शुभेच्छु थी। (मती २७।१६)

(३) पहरेदार, यह सारे वही बात चाहते थे। (मती २७।५४)

पलातुस हाकिम को मसीह के मरने पर आश्चर्य है। (मरकस १५।४४)

बहुत लोग दुबदह (सन्देह) में रहे। (मती २८।१७)

+पीर नहीं उड़ते किन्तु मुरीद (शिष्य) उड़ाया करते हैं। (अनुवादक)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

अतः अवश्य लाश छिपा दी गई और उसका आसमान पर जाना प्रसिद्ध किया गया। जिस प्रकार अब तक भी सहस्रों वर्षों के मृतक पीर मुरीदों को हरे तोते के रूप से एकान्त में दृष्टि गोचर होते हैं। ऐसे ही मसीह भी शिष्यों को दिखलाई दिया और आंखों के तोते उड़जाने से उस का आसमान पर चला जाना मान लिया किन्तु शोक कि दुबदहा (संदेह) में रहे। और अब जो आसमान ही सिद्ध नहीं होता तो समस्त ईसाई और भी कठोर दुबदह (संशय) में हैं।

दुब्धा में दो रस गए।
न माया मिली न राम ॥

प्रसिद्ध विद्वान श्री ह्यूम महोदय करामत (चमत्कार) के सम्बन्ध में फरमाते हैं:—

"चमत्कार सृष्टि नियम का टूटना है। क्योंकि इन सृष्टि नियमों को एक सीधे=अपरिवर्तित अनुभव ने स्थापित किया है, अतः इस वास्तविकता का वास्तव में स्वभाव ही से चमत्कार के विरुद्ध ऐसा पूर्ण प्रमाण है। जैसा कि संभव अनुभव से कोई तर्क युक्तियुक्त हो सकता हो"

अब भ्रान्त में हम इंगलिस्तान के अनुपम विद्वान्, वैज्ञानिक, समय के महा वेत्ता, प्रोफेसर हक्सले महोदय की सम्मति का उल्लेख करते हैं, जो उन्होंने सामान्यता इञ्जीलों और विशेषतः इञ्जीली चमत्कारों के सम्बन्ध हे प्रगट की है।

प्रोफेसर हक्ससे महोदय फरमाते हैं कि—

"दूसरी (इञ्जील मरफ़स) में एक वर्णन पाता हूं। जिसकी साक्षी प्रगट रूप से उसी प्रकार है। जिस प्रकार कि किसी और घटना की जो उस इतिहास में हैं। यह प्रसिद्ध देवों अथवा भूतों की कहानी है जो कि एक व्यक्ति से निकाले गए थे और जिनको आज्ञा दी गई थी कि वे एक सूरों के गल्ले में प्रविष्ट हो जाएं। जिस से गडरियों अर्थात् सूरों के निर्धन और निर्दोष मालिकों की बहुत हानि हुई। इस में कुछ संदेह नहीं हो सकता कि चमत्कारों का प्रचारक पाठकों पर यह प्रगट करना चाहता है कि उसका विश्वास है कि यह (भूतों को) निकालना और प्रविष्ट करना यसूअ नासरी (नासरत के निवासी) की ओर से हुआ। उस कार्य से यसूअ ने इस विश्वास पर बल दिया कि कोई कानूनी अथवा सदाचार सम्बन्धी प्रश्न उस के मन में उत्पन्न न हुए।

इसके विरुद्ध जो कुछ मैं फरनायोजी और पैथालोजी के सम्बन्ध में जानता हूं। उससे मुझे विश्वास करना पड़ता है, कि वह घटनाएं जो देवों के पकड़ने से बताई जाती हैं, वह ऐसी नियमित हैं जैसे कि चेचक के रोग और जो कुछ मैं इन अरापालोजी अर्थात् मनुष्य विद्या के सम्बन्ध में जानता हूं, यह ज्ञान मुझ में यह विश्वास उत्पन्न करता है कि देवों और उन को पकड़ का विश्वास पुराने अविद्या के युग के मिथ्या भ्रमों में से अवशिष्ट अज्ञात है और इस युग में इस की प्रथा साधारण शिक्षा, बुद्धि और सुनिश्चित विचार युक्त मनुष्यों के विचारों से विरुद्ध है (अर्थात् ज्यों २ ज्ञान और बुद्धि तथा निश्चित धारणा लोगों की बढ़ती जाती है, वह विचार बलहीन होते जाते हैं)

जो कुछ मुझे कानून और न्याय के सम्बन्ध में ज्ञात है। मुझे निश्चय दिलाता है कि अन्य लोगों की मलकियत अकारण व्यर्थ गंवा देना एक बड़े नमूना की बदमाशी है। इतिहास विशेषतः पंद्रहवीं, सोलहवीं, सत्रहवीं शती के इतिहास का अध्ययन मेरे मन में कुछ भी सन्देह शेष नहीं रहने देता कि

www.aryamantavya.in

पकड़ और भूत विद्या की सत्यता में विश्वास जो रौमन कैथुलिक और प्रोटेस्टेन्ट लोगों ने इस अध्याय और अन्य असंख्यवाक्यों पर जो नए और पुराने टेस्टामेंट में पाए जाते हैं। ठीक रूप में आधारित किया। इस विश्वास ने बहुत से भयावह कष्ट उठाए। निर्दोष व्यक्तियों, स्त्रियों, बच्चों को न्यायालय की आज्ञा से वध कराया। जो ईसाईयों और पादरियों कि विशेष प्रभाव से गठित हुए। जबकि मैं विचार करता हूं कि ऐसे अवसर पर एक सीधे सादे वक्तव्य का लेख कि भूत विद्या और पकड़ में विश्वास एक व्यर्थ शरारत की बात है। मिडिल अञ्जीर के प्रति विस्तृत कष्ट को असंभव कर देती।

एक अपमानित करने वाला समझ कर दूर करने को उद्यत हूं।

"ऐ नापाक रूह (हे अपवित्र जीव) तू मनुष्य से निकल आ"। (मरकस ५।८)

यह शब्द हैं जो यसूअ से बताए गए हैं।

यदि मैं यह कहूं जैसे कि मुझ को कहने में कोई लज्जा नहीं है। कि मैं अपवित्र रूहों (भूतों) की सत्ता और इस अपेक्षा से कि मनुष्यों से उन के बाहिर निकालने की सम्भावना पर सर्वथा विश्वास नहीं रखता। मैं समझता हूं कि डाक्टर वाक मुझ को यह कहेगा कि मैं अपने खुदावन्द (ईसा मसीह) की साक्षी को वजनदार नहीं समझता। किन्तु यदि यह शब्द वास्तव में प्रयुक्त किये गए थे तो सामंजस्य करने वालों में से बहुत चतुर मनुष्य भी इस बात के कहने के लिए कठिनता से साहस करेगा कि यह शब्द इन बातो में अविश्वास से मेल खाते हैं। जैसा कि विद्वान् और न्यायप्रिय तथा धर्मप्रिय डाक्टर अलगजन्डर बिलेबिकल साईकलोपेडिया में डी मोती ऐक्स आर्टीकल (लेख) पर अग्रलेख के टिप्पण में कहते हैं कि—

"न्यून से न्यून हमें खुदावन्द और उसके शिष्यों को एक सत्य प्रिय व्यक्ति मानना चाहिये। यद्यपि सत्य भाषण की आवश्यकताओं में से यह नहीं है कि शब्दों को सदैव केवल उन के अपने धातुज अर्थों में प्रयुक्त किया जाए किन्तु यह आवश्यक है कि वह इस प्रकार से प्रयुक्त न किए जाएं कि जिन से वह अर्थ निकलै कि जिनको कहने वाला झूठा समझना है। यद्यपि हमारे खुदावन्द और उसके शिष्य पकड़ आदि के शब्दों को कुछ एक रोगों की अपेक्षा साधारण शब्दों के रूप में प्रयुक्त कर सकते थे। उस बात पर विश्वास करने के बिना कि इस प्रकार की प्रगट करने की पद्धति को जड़ में थे किन्तु वे भूतों का मनुष्यों मे प्रविष्ट होना अथवा उन से बाहिर निकाला जाना नहीं कह सकते, जब तक कि वे इस बात को न मानें कि मनुष्य वास्तव में देवों में जाते हैं। अतः उन का यह विश्वास नहीं था तो वह सत्यप्रिय मनुष्यों की भान्ति नहीं बोले।" (देखो बेली कल साईकलोपीडिया जिल्द १ पृष्ठ ६६४ की टिप्पणी)

यह बात जिस पर हम बहस कर रहे हैं केवल दूसरी इञ्जील की गवाही पर ही आधारित नहीं है। तीसरी इञ्जील दूसरी का विशेषतः अपवित्र रूहों को मनुष्य से बाहिर निकालने के आदेश के बारे में समर्थन करती है। यद्यपि पहिली इञ्जील या तो उसी किस्सा को भिन्न रूप में वर्णन करती है अथवा उसी प्रकार का किस्सा वर्णित करती है। किन्तु आवश्यक वाक्य उसमें भी लिखा है "यदि तू हमको बाहिर निकालता है तो सूरों के समूह में हमको भेज दे और उसने उनको कहा कि जाओ।"

(मती ८।३१,३२)

यदि तीनों इञ्जीलों की गवाही एक ऐसे विषय में समस्त बौद्धिक सन्देह को दूर करने के लिये

वास्तव में पर्याप्त है। कि जो कर्म और ज्ञान रूपेण बहुत महत्व रखती है और जिसमें विश्वास अथवा अविश्वास मनुष्य की जीवनी अथवा उनका दूसरे मनुष्यों से बरतने पर बड़ी धीरता से प्रभाव रखती है। तब मैं इस बात के विश्वास करने पर बाधित हूं कि यसूअ ने तिरोहित रूप से वर्णन किया कि मुझ को अदृश्य संसार का ज्ञान है। जिसने भूतों और पकड़ों में विश्वास किया जो कि उस समय उसके काल में रहने वालों में विद्यमान था, कहानी सत्य है तो मध्य युग का अनुमान अदृश्य संसार के संबंध में संभव और बहुत संभव है कि सर्वथा सत्य हो और सपरिचर ऐलेक सगंस और मेथर तक चुड़ैलों को ढूंडने वाले बहुत बदनाम किये हुए लोग हैं।

इसके विरुद्ध मनुष्यता इस विश्वास के बहुत भयावह परिणाम को देखकर और साधारण बुद्धि उन सब विषयों में जिनकी उचित और पूर्णरूपेण खोज की गई है। गवाही को अयोग्य समझकर तथा विज्ञान विद्या "पकड़" के विषय को पैथालोजी अर्थात् चिकित्सा की मर्यादा में धीरे २ लाकर जहां तक कि वह पोलोस की पकड़ में नहीं आते यह समस्त बलवती शक्तियां हमें इस विश्वास को उस गवाही पर जिस पर यह आधारित है। बहुत बल के साथ खोज करने के बिना स्वीकार करने के विरुद्ध सूचित करने में सहमत होती हैं।

मैं इस परस्पर विरोध से रक्षा का कोई प्रकार नहीं देखता। या तो यसूअ ने वह कहा जो लेख में है। उसने कहा या उसने नहीं कहा। पहिली अवस्था में यह आवश्यक है कि उसकी मान्यता ऐसे विषयों में जो अदृश्य संसार से संबंध रखती हैं, बहुत बलपूर्वक हिलाई जाए। दूसरी अवस्था में इञ्जीलों की गवाहियों पर चोट लगती है। यदि इञ्जीलों की रिपोर्ट ऐसी बड़ी भारी और दूर तक प्रभाव डालने में क्रियात्मक रूप में अविश्वासनीय है तो हम कैसे विश्वास कर सकते हैं कि वह और विषयों में विश्वसनीय हो। वह मुख चढ़ा उत्तर जिसमें बहुत बाधित किया हुआ समर्थन करने वाला आश्रय लेता है कि बाईबल पदार्थ विद्या सिखाने के लिए नहीं है।"

इस विषय में ठीक नहीं हो सकता कि भूतों और उनसे पकड़ की सत्ता का प्रश्न यद्यपि साईंस के साथ संबन्धित है किन्तु साथ ही सदाचार और धर्म से भी दृढ़ संबंध रखता है। यदि शारीरिक और मानसिक रोग भूतों के कारण से होते हैं तो ग्रे गरी आफ़ टावर्म और उसके समकालीन लोगों का यह विचार ठीक था कि "जिन भूतों के निकालने वाले डाक्टरों से अधिक लाभदायक हैं।" और उन व्यक्तियों के मानसिक और क़ानूनी उत्तरदायित्व के लिये बड़े भारी प्रश्न उत्पन्न होते हैं जो कि भूतों से ग्रस्त हूं। और संसार तथा उससे हमारे सम्बन्धों के सारे विचार सर्वथा भिन्न हो जाते हैं। यदि हम दूसरा विचार न रखें।

एक मध्य युगीन साधारण ईसाई के जीवन का विचार एक उन्नीसवी शताब्दी के साधारण अंग्रेज से उस प्रकार भिन्न था कि जिस प्रकार पश्चिमी अफ्रीका के हबशी का इन विषयों में इस समय है। आजकल का संसार धीरे किन्तु निश्चय पूर्वक इन और इसी प्रकार के शेष असभ्य भ्रमों को दूर करता जाता है। और चाहे कुछ ही क्यों न हो पुनः कीचड़ में आसन्न होने के लिए नहीं आएगा कि जब तक इसके विरुद्ध सिद्ध न किया जाए।

मैं इस संदेह करने का साहस करता हूं कि इस समय में कोई प्रोटैस्टैंट आत्मविद्या में निष्णात जिसके पास कोई प्रतिष्ठा खोने को है—कहेगा कि वह गैदरिंग की घटना पर विश्वास रखता है। अतः

www.aryamantavya.in

दो बातों में से एक को स्वीकार करना चाहिये। या तो यह कि जिन्होंने इञ्जीलें लिखीं उन पर विश्वास न करना अथवा खुदावन्द पर विश्वास न करना जिस खुदावन्द की वह सरल लोग शैतान को अदृश्य संसार पर राज्य की ऐसी कथायें लिखने से प्रतिष्ठा करना चाहते थे। यही परस्पर विरोध है×। किसी बड़ी भारी योग्यता के और ठीक किये हुए अनुवाद के अतिरिक्त जिसके लिए यह समझा जाता है कि जो कुछ विद्या कर सकती है - कर चुकी है अन्य किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। और न साधारण बुद्धि के ज्ञान विना साधारण नियमों के बरताव के किसी और बात की आवश्यकता है। हम इस बात के स्वीकार करने वाला बनाने के लिए कि इन दो बातों में से एक बात चुनलें। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं हो सकता कि कहानी जो प्रथम इञ्जील में लिखी गयी है। वह दूसरी और तीसरी इञ्जील का अनुकरण है। तो भी जो विरोध हैं। वह भारी और इस प्रकार के हैं कि उनमें सामंजस्य नहीं हो सकता। और इसी कारण पर न्यून से न्यून हमको चाहिए कि सम्मति देने से मौन रहें। किन्तु इसके अतिरिक्त और भी बहुत कहा जा सकता है। उस समय से जब तर्क के साथ बाईबल का अन्वेषण आरंभ हुआ—इस समय तक इस देर तक रहने वाले विचार के विरुद्ध कि तीन इञ्जीलें तीन स्वतन्त्र व्यक्तियों की बनी हुई हैं जिनको खुदा की ओर से इलहाम हुआ—प्रबल गवाहो से एकत्र हो गई हैं। यहां तक कि इस समय इस परिणाम से सुरक्षा नहीं हो सकती कि इन तीनों में से प्रत्येक एक एक की कृति है जिसके दो भाग हैं। एक तो आधार जो तीनों के लिए सामान्य है और दूसरा वह जो प्रत्येक के लिए विशेष है। शब्द, आधार और मकान से यह अर्थ कदापि नहीं निकलना चाहिए कि मकान आधार से पीछे तैय्यार किया गया। इसके विरुद्ध इसके कुछ भाग संभव है कि हूं और अधिक संभव है कि आधारशिला के कुछ भागों से अधिक पुराने हों।

गेडरेन के सूरों की कहानी आधार से संबंधित है। न्यून से न्यून इसका वह आवश्यक भाग जिस में भूतों की पकड़ का विश्वास प्रगट किया गया है और इसलिए पहिली दूसरी और तीसरी इञ्जीलों के संपादक जो व्यक्ति थे। उन्होंने इस विश्वास को स्वीकार किया—(जो वास्तव में उस युग के यहूदियों और अन्य जातियों में बहुत था) और यसूअ से जोड़ दिया। इस आधार (अर्थात् इस तीन प्रकार की रिवायत=गवाही) के जिस पर यह तीनों सहमत हैं—उत्पन्न करने वाले या उत्पन्न करने वालों के सम्बन्ध में हमें क्या ज्ञात है ? कि हम केवल उनके कथन को इतना महत्वपूर्ण समझें कि जिससे मनुष्यता, बुद्धि और ज्ञान के विरुद्ध युक्तियों को न्यून कर दिया जाए। और उनके उस्ताद (गुरु) की

×क्या कोई व्यक्ति यह बात कह सकता है कि कोई आन्तरिक अथवा बाह्य नियम है कि जिससे एक बाईबल के वर्णन को पढ़ने वाला जिसमें कोई ज्ञान युक्त बात हो इस बात के लिए निर्णय कर सके कि उसको गंभीरता से लेना चाहिए या नहीं ! क्या तूफान का वृत्तान्त जो कि न्यू टैस्टामेंट में ठीक माना गया है वह इब्राहीम की मांग की अपेक्षा जो कि उसमें ठीक मानी गई है—वह न्यून स्पष्ट है। किस चिह्न से अरण्य के साथ मन (एक प्रकार के आसमानी भोजन ?) में पालन पोषण की घटना (जिसमें बहुत कुछ तर्क सम्बन्धी प्रश्न उत्पन्न हो सकते हैं यह प्रगट हो सकता है कि यह भक्ति के लिये है) और कानून का हव्वा के हाथ से पत्थर पर लिखे जाने की कथा शाब्दिक ठीक है—यदि आदम के निकाले जाने की घटना एक ऐतिहासिक घटना का ठीक वर्णन नहीं है तो पौलुस का मजहब कहां रहता है। किन्तु पौलुस की कहानी तर्क के उतने ही विरुद्ध है और विश्वसनीय शहादतों से इतनी दूर है जैसा कि उत्पत्ति और तूफान की घटना। जिनके साथ कहानियों का क्रम जोड़ता है।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

प्रतिष्ठा को भय में डाला जाए। जिससे बहुत लोग अनुकूल होने के लिए प्रसन्न होंगे। सर्वथा कुछ भी नहीं। इस बात के लिए कोई प्रमाण भी नहीं है और साधारण परिज़ीएशन से बढ़कर भी कुछ नहीं कि कोई इञ्जील जिस अवस्था में हम उसको शुद्ध अनुवाद में पाते हैं। दूसरी शताब्दी से पूर्व अथवा अन्य शब्दों में घटनाएं जो बर्णन की गई हैं। उनके पश्चात् साठ या सत्तर वर्ष के अन्दर वर्तमान थी। और उस समय से और अब से पुरानी इञ्जील के वर्तमान हस्तलिखित इञ्जीलों के मध्य यह नहीं कहा जा सकता कि कितने परिवर्तन और परिवर्द्धन हो गए हूं। यह कहा जा सकता है कि यह समस्त केवल विचार ही विचार है। किन्तु यह बहुत कुछ अधिक अर्थात् विचार से बढ़कर है। हमारे अनुवादक क्यों कि वह योग्य विद्वान् और ईमानदार(धर्मनिष्ठ) व्यक्ति हैं। वे इस बात के प्रगट करने में बाधित हुए हैं कि ऐसी वस्तुएं अर्थात् परिवर्तन और परिवर्द्धन सबसे वर्तमान पुरातन इतिहासों के पीछे भी घटित हुई हैं। दूसरी इञ्जील की सबसे पुरानी कापियां १६।८ तक समाप्त हो जाती हैं। शेष की १२ आयतें अर्थात् पीछे मिला दी गई हैं। और यह बात ध्यान देने योग्य है कि प्रक्षिप्त करने वाले ने इस कालम के प्रविष्ट करने में देर नहीं की। कि जहां यसूअ अपने शिष्यों को वचन देता है कि वे मेरे नाम से देवों को निकालेंगे। दूसरा टुकड़ा जो किनारे पर फेंका (अर्थात् लिखा) गया है। इससे भी अधिक शिक्षा वह है। यह वह प्रभावशाली समापन उस स्त्री का जो दुराचार करते पकड़ी गई थी—है कि जिसके सदाचार रूप से बड़े भारी अर्थ हैं। जिसके संबंध में यदि आन्तरिक गवाही निर्दोष होती तो यह कहा जा सकता था कि मसीह की शिक्षा का बड़ा भारी आदर्श है। किन्तु शोधक निर्दयता पूर्वक कहते हैं कि बहुत से पुरातन लेख योहन्ना ७।५३ से ८।११ तक प्रविष्ट नहीं करते हैं। अब कोई बुद्धिमान् व्यक्ति अपने आप से यह प्रश्न पूछे कि यदि इसके पश्चात् जब लगभग यह निर्णय हो गया कि न्यू टैस्टामेंट क्या है? और चौथी तथा पांचवीं शताब्दी के पीछे भी प्रक्षेप करने वाले लोगों में इतना साहस और कारीगरी थी कि वह इस प्रकार के प्रक्षेप और मिलावटें कर सकें। अतः उन्होंने क्या कुछ किया होगा? जब कि किसी व्यक्ति को यह प्रश्न सूझा भी नहीं था कि वास्तविक इञ्जील किसको समझा जाए? जबकि मौखिक गवाही जो अभी तक पूर्ण नहीं हो चुकी थी। उन लिखी हुई बातों से अधिक बहुमूल्य समझी जाती थी जो प्रथम शताब्दी के अन्तिम भाग में विद्यमान थीं। अथवा दूसरा विचार अच्छा समझने पर यदि वे व्यक्ति जिन्होंने केनन (इसमें वह इञ्जीलें प्रविष्ट हैं जो स्वीकार की जाती हैं) के संबंध में धीरे २ निर्णय किया। वे उन पुरातन लेखों की सत्ता से परिचित नहीं थे जो हमारे पास विद्यमान हैं। अथवा यदि परिचित हैं। तो उनकी गवाही को खंडित किया अर्थात् न माना। सत्यान्वेषकों की अवस्था में उनकी योग्यता का क्या अनुमान हो सकता है? वह लोग जो ईसाईयों की पवित्र पुस्तक की स्वतंत्रतापूर्वक अन्वेषण पर आक्षेप करते हैं। भूल जाते हैं कि जो कुछ वह हैं उसी स्वतन्त्रतापूर्ण अन्वेषण के कारण से हैं। जब तक इहलाम के विश्वासी इस बात के कहने के लिए उद्यत न हों कि बहुत सारे प्रतिष्ठित पादरी बहुत सारी शताब्दियों में भूलों से सुरक्षित रहे हैं। क्योंकि यदि हम इस बात को भी स्वीकार करलें कि उस काल की कुछ एक पुस्तकें इलहामी थीं तो वे बहुतों में से थोड़ी ही थीं। और उन लोगों को जिन्होंने केनन की पुस्तकें चुनीं। केवल सत्यान्वेषक ही समझना चाहिए। जब तक वे इलहामी न हों और उस गवाही से जो वह अपने बौद्धिक नमूना के लिये छोड़ गये हैं। सर्वथा सत्य की खोज न करने वाले अन्वेषक थे। जब कोई व्यक्ति समझता है कि ऐसे नाजुक प्रश्न ऐसे व्यक्तियों के हाथ में पड़े जैसे कि पी. पी. अस जिसका अंगूर की प्रसिद्ध कहानी में विश्वास था और एरीनी अस अपनी युक्तियों सहित जो उसने केवल चार इञ्जीलों के लिये दीं और ऐसे शान्त लेखक जैसे ट्रलोलो अनजस ने कहा

www.aryamantavya.in

कि मैं विश्वास करता हूं। वह जो असंभव है। आश्चर्य यह है कि वह चुनना जिससे हमारा न्यू टैस्टामेंट बना हु ा है। प्रकाश में आक्षेप वाली बातों से इतनी बड़ी है जितनी कि वह उपाकरफा (अर्थात् वह इञ्जीलें जो न्यू टैस्टामेंट में प्रविष्ट नहीं की गई हैं) वाली इञ्जीलें वास्तव में इसी योग्य हैं कि वह इपा करफा हूं×। किन्तु मनुष्य सन्देह कर सकता है कि कुछ अधिक अन्वेषणपूर्ण विशेषता इपाकरफा को बहुत बढ़ा देती है। इस स्थान पर एक स्पष्ट आक्षेप उत्पन्न होता है जिस पर ध्यान देना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि सत्यान्वेषण सन्देह इस सीमा पर जहां ले जा चुके हैं ऐतिहासिक रूप से पीरोनज़म है। कि यदि हमें किसी पुरातन अथवा नूतन इतिहासज्ञ पर सर्वथा विश्वास नहीं करना है। क्योंकि इसने एक असत्य बात को सत्य स्वीकार कर लिया है तो अच्छा यह होगा कि हम इतिहास की ओर सर्वथा ध्यान दें। यह कहा जा सकता है कि और बहुत ही न्याय से कि अजनहार्ड की लाइफ़ अफ़शाल में न्यून विश्वास के योग्य नहीं है क्योंकि हिस्ट्री आफ़ वी ट्रान्सलेशन आफ दी बलेसड मारटर्स मार सी ली नस ई पाल में सीमा से अधिक विश्वास की विचित्र अवस्था यथार्थ बुद्धि की न्यूनता और इसके साथ आठवीं आज्ञा की न्यूनता प्रगट होती है अथवा इस रिसाला के अन्तिम शब्दों से यदि हम पीछे न जावें। तो निश्चितरूपेण उस योग्य देवी मिस सटरक अवशिष्ट अस्थि पंजर के खाने के कारण से जिसको कि उसने ऐसा प्रतीत होता है कि जान बूझ के विना बनाई है। सर्वथा अविश्नीय नहीं समझना चाहिये। यह तो सर्वथा ठीक है। मुझे भय है कि कोई व्यक्ति जीवित नहीं जिसकी गवाही स्वीकार की जावे। यदि पहिली शर्त यह हो कि उसने कोई कहानी नहीं बनाई और प्रसिद्ध भी नहीं की। हम सबके मनों में ऐसे झूठे स्थान विद्यमान हैं। जैसा कि एक चट्टान पर छोटे चिह्न होते हैं। जैसा कि छोटी हरी घास उत्पन्न हो सकती है। जहां पर कोई खाने का बीज पड़ जावे। वहां अवश्य कुछ न कुछ निश्चित फल फूल लावेगा। इस बात के विना कि हमारी सत्यता अथवा पवित्रता को और विषयों में कुछ भी प्रभावित करे। सर वालटर स्काट को ज्ञात था कि वह एक कहानी का उसके विना जैसा उसने स्वयं कहा कि जब तक मैं उसकी नई टोपी और सोटी न दे दूं वर्णन नहीं कर सकता था।

हममें से बहुतों का सर वालटर से यही भेद है। हम परिचित नहीं हैं कि यह कहानी बनाने वाली शक्ति हमारे ज्ञान के विना अपना प्रभाव प्रगट कर देती है। किन्तु यह भी सर्वथा सत्य है कि यह किस्सा कहानी बनाने वाली शक्ति प्रत्येक मनुष्य में एक ही मन की प्रत्येक अवस्थाओं और प्रत्येक भागों में समान रूप से तीव्र नहीं होती। डैविड ह्यम वास्तव में इस कहानी घड़ने वाली शक्ति का इतना समर्थहीन नहीं था जितना कि दनेरेमिल बेडिया। कुछ एक नये इतिहासज्ञ जिनका नाम लिया जा सकता है। और ऋषियों से बड़ा वहमी व्यक्ति भी यदि उसने पांच पौंड देने हूं कभी यह विचार नहीं करता कि मुझे सौ देने हैं। साधारण बुद्धि का नियम तो यह है कि ऐसे गवाह पर इन सब बातों में

+विद्वान् पिपस्स की पुस्तक सायनीडेकन की इंजीलों के चुनने के सम्बन्ध में एक विचित्र कार्यवाई मैडिम बलैवस्टकी महोदया लिखती हैं कि "जब बहुत सी इंजीलें (जो ७४ से अधिक थीं) एकत्र हो गईं। तो कौन्सल नालीस ने उनके इलहामी गैरइलहामी होने के भेद के लिए यह निर्णय किया कि गिरजा में मेज के नीचे सम्पूर्ण इंजीलें मिलाकर रख दी जायें और सारी रात इस रूप में प्रार्थना करें कि हे खुदावन्द! जो पुस्तकें इलहामी हैं। वह मेज पर चढ़ जायें····· और जो इलहामी नहीं वह नीचे पड़ी रह जायें—जैसा कि उसी के अनुसार हुआ।"

(आईलस इनवेल्ड जिल्द २ पृष्ठ २५१ प्रकाशन १८७७ ईस्वी न्यूयार्क)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

विश्वास करना चाहिए। जिसमें उसका स्वार्थ अथवा उसका अपनापन अथवा उसके पक्षपात या उस वैचित्र्य का प्रेम जो सब मनुष्यों में थोड़ा बहुत विद्यमान रहता है बहुत बलके साथ विद्यमान न हों और यदि वह हों तो उस समय इतनी समर्थित गवाही का मांगना जितनी की वह वस्तु जिसकी वह गवाही दी गई है। संभावना के विरुद्ध हो। गडरियों के किस्सा पर युक्ति के विना मैं संदेह नहीं करता हूं। यदि मैं यह कहूं कि उन देवों की सत्ता जो मनुष्य से सूरों में इस प्रकार लाए जा सकते हैं संभावना के विरुद्ध है।

मैं स्वीकार करता हूं कि मेरे पास कोई अनुमान प्रमाण नहीं है। प्राकृतिक वस्तुएं ऐसी हैं जैसी कि टी० नी० ई० और टरक्की नी० ई० जो सूरों से मनुष्यों में और मनुष्यों से सूरों में जाई जा सकती हैं। तथा जो दोनों पर बहुत शैतानी और मृत्यु लाने वाला प्रभाव उत्पन्न करती हैं। संभव है कि आध्यात्मिक वस्तुएं भी ऐसी विद्यमान हूं जो इस प्रकार परिवर्तित हो सकें। और जिनके प्रभाव समान हूं। साथ ही मैं यह भी कहने को बाधित हूं कि बहुत ही सच्चे मनुष्य जिनके लिए मेरी बड़ी भारी प्रणति है। आज कल की रूहों की कहानियों में विश्वास रखते हैं जो कि विचाराधीन किस्सा की भांति सम्भावना से दूर है। अतः जहां तक पवित्रता से हो सकता है। मैं कहता हूं कि मेरे पास कोई कारण नहीं कि जिस से यह सिद्ध हो सके कि इन परिवर्तनशील देवों की सत्ता नहीं। न मैं इनकार कर सकता हूं कि केवल समस्त रौमन कैथुलिक चर्च ही नहीं। किन्तु बहुत प्रसिद्ध वेनीस काफ़िर (अर्थात् जिन को वीस महोदय काफ़िर = नास्तिक कहते हैं) इस बात में ईमानदारी और दृढ़ता से विश्वास रखते हैं कि ऐसे देवों की कार्य करने वाली शक्ति इस १८८९ ईस्वी में बड़े बलपूर्वक है। किन्तु तो भी जैसा कि नेक-विशप बट कहता है कि "पुरानी बिलटी जीवन की प्रेरक है।" और मुझ को प्रतीत होता है कि यह उन अवस्थाओं में से एक है कि जहां विश्वास और गवाही का वह नियम जिस को मैं ने वर्णन किया, पूर्ण बल रखता है। अतः पुरातन और नूतन भूत विद्या की सत्यता के लिए बहुत सारे (किसी कारण से सारे नहीं) गवाहों के लिए प्रतिष्ठा के साथ भी मैं ध्यान रखता हूं कि उन की इस विशेष विषय में शहादत (गवाही) उनके परिणाम निकालने के इतनी थोड़ी है कि उपहास होता है। जो कुछ कहा जा चुका है। इसके पीछे मैं कोई विचार नहीं करता कि कोई योग्य व्यक्ति यदि वह क्रोधित न हो, तो मुझ पर खुदावंद और उसके शिष्य के विरुद्ध कहने के विरुद्ध दोषारोपण करेगा। यदि मैं दूसरी बार इस बात को कहूं कि मैं समस्त गडरियों की कहानी में विश्वास नहीं करता। किन्तु यदि वह सारी कहानी विश्वास के योग्य नहीं है। तो अन्य समस्त भूतों की पकड़ की कहानियों के सम्बन्ध में सन्देह पड़ जाता है और यदि भूतों की पकड़ में विश्वास जोकि आरंभिक ईसाईमत का आधार है, हिल जावे (समाप्त हो जाए) तो उस अवस्था में इंजीलों की भविष्य वाणी आगामी संसार की अपेक्षा अविश्वस्त गवाही के लिए क्या कहना होगा? (पत्रिका नाईरिसी सेनेचरी अंग्रेजी प्रकाशित लंडन फ़रवरी १८९९ ईस्वी पृष्ठ १७१ से १७८ तक)

—०—

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

चतुर्थ अध्याय

बाईबल का खुदा न दयालु न न्यायकारी किन्तु अत्याचारी है

एक व्यक्ति पादरी खड़गसिंह जी ने ×अपने रिसाला अंक २,३ में परमेश्वर के प्रेम और न्याय के सम्बन्ध में धर्म के सिद्धांतों के विरुद्ध आक्षेप किये थे। जिसका उत्तर हमने "सदाक़त असूलों तअ़लीमे आर्यसमाज (आर्य समाज की शिक्षा और नियमों की सत्यता) अंक २, ३ में दिया। और बाईबल के खुदा की निर्दयता, अत्याचार और अन्याय प्रियता भी कुछ प्रगट कर दी थी। किन्तु अब हम इस रिसाला 'कृश्चनमत दर्पण' में बाईबल के सम्बन्ध में उसी मन्तव्य पर यथार्थतापूर्ण लिखना चाहते हैं।

पादरी महोदयो! क्या आप लोगों ने कभी सोचा भी? कि इस मन्तव्य पर ईसाईमत की क्या शिक्षा है?

कुछ न्याय की वस्तुस्थिति पर दृष्टिपात कीजिए। जिसके पूर्ण करने को ईसाईयों के कथनानुसार खुदा ने अपने इकलौते बेटे को (जो वास्तव में पिता था) यह था कि अबुल्बशर+ आदम को (इस शर्त के साथ कि मनुष्य जाति-विद्या के उदाहरणों में जिस से सिद्ध होता है कि मानवोत्पत्ति एक से नहीं किन्तु बहुत से भिन्न २ व्यक्तियों से हुई और मानव हज़रत आदम की सत्ता से करोड़ों वर्ष पूर्व विद्यमान थे, अपने कार्य व्यवहार करते और मरते थे) यह पदवी अबुल्बशर (मनुष्यों का बाप) हज़रत आदम के लिए शोभा दे। एक ऐसे वृक्ष के फल खाने से (जो देखने में शोभनीय भक्षण करने के योग्य बुद्धि प्रद बना) निषेध करके स्वयं तथा शैतान के सम्बन्ध से आज्ञा के उल्लंघनार्थ प्रेरित किया। क्योंकि लिखा है कि "खुदावन्द खुदा ने सांप शैतान और स्त्री-हव्वा के वंश के मध्य शत्रुता डाली।"

(पैदाएश ३।१४, ५)

"हे खुदावन्द! तू ने ही सम्पूर्ण वस्तुजात उत्पन्न कीं और वह तेरी ही इच्छा से हैं।"

(मुकाशफ़ात १४।६१)

"जब शैतान ने अपने छल कपट से हव्वा को ठगा।" (कुरसियान ११।३)

"क्योंकि लिखा है-- फ़रेब खाने वाला और फ़रेब देने वाला दोनों उसी (खुदा) के हैं।"

(अय्यूब १२।१७)

"क्योंकि तूने (खुदा ने) उनके मनों से बुद्धि को छिपाया!" (अय्यूब १७।४)

×पादरी महोदय के छे व्याख्यानों के उत्तर में लेखक ने छे व्याख्यान प्रकाशित किये हैं जिनका नाम सदाकते असूलो तअ़लीम आर्यसमाज व पक्षपाती पादरियों की नासमझी का प्रतिकार है।

+समस्त संसारस्थ मानव के पिता। (अनुवादक)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

"और पुनः उस खुदा सर्व शक्तिमान् जिसने सब कुछ अपने हाथ रखा है । हज़रत आदम से इस आज्ञा उल्लंघन का बदला लिया (दण्ड दिया) और न केवल हज़रत आदम से किन्तु हम तुम सब से (बदला लिया) ।

अब महोदय ! फ़रमाईये । हमारा क्या दोष ? केवल यही कि इन्जील की शिक्षानुसार आदम की सन्तान समझे जाते हैं । वाह वाह ! क्या प्रकाशयुक्त न्याय है ? और ईश्वरीय महत्ता का यही महत्व है कि स्वयं ही लोगों को बहकावे । जैसा कि लिखा है कि "खुदा ने एक बुरी रूह उन के मध्य डाली है ।" (यसाया १९।१४)

पुनः लिखा है कि :—

"खुदा ने अबीमलिक और सिकम के लोगों के मध्य झगड़ा कराने वाली रूह को भेजा ।" (काज़ी ९।२३)

"खुदा ने उस को बुद्धि वंचित किया ।" (अयूब २९।१७)

"खुदा ने तुम पर नींद लाने वाली रूह को विजयी बनाया और तुम्हारी आंखें मून्द लीं ।" (यसाया ३९।१०)

खुदा का श्वास जातियों के मुख में लगाम होकर उन्हें मार्ग भ्रष्ट करे ।" (यसाया ३०।२७,२८)

"उसने उनकी आंखें बन्द की हैं । वे देखती नहीं और उनके मन भी (बन्द किए हैं) समझते नहीं ।" (यसाया ४४।१८ प्रकाशन ६८ ईस्वी)

जैसा कि लिखा है कि :—

"खुदावन्द ने आज तक उन्हें ऊंघने वाली रूह और ऐसी आंखें कि न देखें और ऐसे कान कि न सुनें दिये हैं ।" (रूमियों ११।७, ८)

और पुनः स्वयं ही हिसाब लेने लगे और यही दया स्वरूप और न्यायकारी कहलावे । खुदा के लिए कुछ तो सोचिये कि बल हीन मनुष्य खुदा की शक्ति का मुकाबला क्योंकर कर सकता है और जब वह बुरा कार्य करने पर समुद्यत करे अथवा आज्ञा दे जैसा कि ख़रक़ील २०।२५ प्रकाशन १८६० ईस्वी से प्रगट है कि खुदा ने इसराईल के लागों को बुत परस्ती (मूर्ति पूजा) की प्रेरणा और आज्ञा दी, तो कौन इस से इन्कार करे, और जो ईश्वरीय आदेश अथवा ईश्वरीयेच्छा की आज्ञा पालन करे । यदि वह इसके विपरीत दंडनीय भी हो तो उससे कौन श्रेष्ठता की आशा रखे और वास्तव में इस से किसी को भलाई की आशा न रखनी चाहिए । क्योंकि वह सर्वथा स्वतंत्रता पूर्वक अपनी इच्छा और अधिकार को प्रयुक्त करता है । और किसी की इच्छा, कर्म, वचन पर कुछ भी ध्यान नहीं देता । "पस वह जिस पर चाहता है । दया करता है और जिसे चाहता है उद्दण्ड करता है ।" (रोमियों ९।१८) (ख़रूज ७।३,४)

हम नहीं समझते कि ऐसे स्वतंत्र और इगवा करने वाले (बहकाने वाले) खुदा को कौन प्रेम और न्याय के गुणों का गुणी बता सकता है । जैसा बाईबल में दाऊद नबी ने कहा है कि —

"दाऊद ने जब उस फरिश्ता को जो लोगों को मारता था तो खुदावन्द से कहा । पाप तो मैंने किया और बुराई मुझ से हुई । पुनः इन भेड़ों का क्या दोष है ?" (समवाईल २।२४।१७)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

क्या उपरिलिखित प्रमाणों से कुछ भी प्रेम और न्याय की गंध आती है ? कदापि नहीं। किसी ने किया और किसी को पकड़ लिया। और कहने लगे कि वाह ! हम ने तुम्हारे लिये अपनी गर्दन कटाई और गर्दन कटाकर भी प्रत्येक व्यक्ति को मुक्ति प्रदान नहीं की। किन्तु उन्हीं को (प्रदान की) जो मसीह की खुदाई पर विश्वास रखकर ईमान लाएं और बपतस्मा लें। मानो उस का रक्त पानी के छींटों की सहायता के बिना किसी के पाप का धब्बा नहीं धो सकता। और विश्वास को खूबी भी उपरिलिखित प्रमाणों के अनुसार मनुष्य के हाथ नहीं। वह या तो उसके हाथ में या किसी ऐसे बलवान् के अधिकार में जिस के मारे खुदावन्दी रूह भी कांपती है। और वह कौन ? हजरत शैतान दीन और ईमान का नाशक जिस की शक्ति का स्वीकार स्वयं खुदा ने यूं किया है। "इस बात के होते भी तूने मुझे उभारा है कि अकारण (संभवतः न्याय अथवा प्रेम की आवश्यकता से) उसे अर्थात् अयूब को दुःखों की मार मारूं।" (अय्यूब २।३)

और जिस की शक्ति का प्रकाश तसलीस (त्रिनेटी) के दूसरे खुदा पर इस प्रकार पूर्णता से हुआ कि जज़ाकल्लाह÷। जैसा कि स्वयं इञ्जील लिखने वालों को स्वीकार है कि "तब शैतान यहूदा में समाया और उसने जा के सरदार काहनों और सिपाहियों के सरदार से मंत्रणा की कि उस अर्थात् मसीह को किस प्रकार उन के सुपुर्द करे।" (लूका २२।३, ३१ यूहन्ना १३।२२)

और परिणामतः फांसी के तखते पर पहुंचाया। जिस के दुःख से मसीह (द्वितोत खुदा) यूं चिल्लाया। एली एली लिमा सबकतनी। हे खुदा ! हे खुदा !! तू ने मुझे क्यों भुला दिया। किन्तु शोक ! कि काम के समय कुतिया हगाई। प्रथम खुदा या मसीह का बाप उस समय सवथा सहायतार्थ न पहुंचा। संभवतः डर गया कि ऐसा न हो कि इस समय शैतान अलेहिररहमत (उस पर दया हो) मुझे भी सलीब पर चढ़ावे। वास्तव में अच्छो सोची। अन्यथा खुदा न खास्ता (खुदा न चाहे) कठिनाई पड़ जाती।

शैतान की शक्त मती १३।१८ और मरफस ४।१४ में इस प्रकार स्वीकार किया गया है :—

"तब शैतान आके उस कलाम को उनके मन से निकाल ले आता है। जिस से ऐसा न हो कि ईमान ला कर मोक्ष प्राप्त करें।"

"इस संसार के खुदा (शैतान) ने उन की बुद्धियों को सूक्ष्म कर दिया जिससे न होवे, मसीह जो खुदा की मसीह ही क्या आदम भी खुदा की सूरत था (पैदायश १।१७) (पैदायश ३।२२ जो उत्पन्न होते हो शैतान की उम्मत में प्रविष्ट हुआ। खुदा के भी केवल गजब (क्रोध) में आया और जिसकी सन्तान निर्दोष (केवल ईसाईयों के खुदा के न्याय पूर्ति के कारण से आदम के दंड भुक्तलेने पर भी और मनुष्यों के पाप के प्रायश्चित्त रूप में मसीह के फांसी चढ़ जाने पर भी लानत की जञ्जीर में बंधी है। सूरत है, उस के प्रकाश जलाल वाला इञ्जील का प्रकाश उन पर चमके।"

(फेन्तान २।४।४)

उस ने उन की आँखें अन्धी की और उन के हृदय कठोर किये है जिससे न होवे कि वे आंखों से देखें और मन से न होवे कि वे आंखों से देखें और मन से समझे तथा ईमान लावें और मैं उन्हें चंगा करूं।" (योहन्ना १२।४०)

÷ अल्लाह तुझे फल दे।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

"हे खुदावन्द ! तू ने क्यों हमें अपने मार्गों से भ्रष्ट किया। क्यों तू ने हमारे हृदय को कठोर किया कि तुझ से न डरें।" (यसाया ६३।१७)

इसीलिये बाईबल का दयालु खुदा फरमाता है कि—

मैं कृपा न करूंगा और न छोड़ूंगा और दया न करूंगा किन्तु उन्हें मारूंगा।

(यरमियाह ६३।१७)

"सो तू अब जा और अमालीक को मार। और सब कुछ जो उनका है एक साथ हराम कर और उन पर दया मत कर। किन्तु स्त्री पुरुष, छोटे बालक, दूध पीते शिशु सब की हत्या कर।"

(समबईल १ १५।३)

"इन का उत्पत्ति कर्ता इन पर दया नहीं करता। और उन का बनाने वाला उन पर तरस नहीं खाता है।" (यसाया १७।११)

कुछ तो फरमा दीजिये कि इस अवस्था में हमारा हजरत मसीह पर ईमान न लाना दोषयुक्त है। या मजबूरी में ?

हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि वह खुदा जो क्रोधातिरेक या बदला लेने के जोश में प्रायः सोचे समझे बिना जो चाहता वह कर बैठता था।

उदाहरणतः जब उसने नूह के काल में शीघ्रता से लोगों को मार दिया और न केवल लोगों को किन्तु उन के साथ (न्याय या प्रेम के तकाजा को पूरा करने के लिये) निर्दोष प्राणियों और वनस्पतियों को भी (हलाक किया) और परिणामतः पछताया और मन में दुःखी हुआ कि मैं पुनः ऐसा कार्य न करूंगा।

अथवा जैसा बनी इसराइल (इसराइल की सन्तान) को दाऊद के साथ (इस कारण से कि दाऊद ने शैतान के बहकाने से प्रत्युत सुलैमान २१।१ प्रकाशन इलाहाबाद १८५५ ईस्वी राजा का मन परमेश्वर के हाथ में नदियों के जल की न्याहि है। वह उसे जिधर चाहता है, उधर फेरता है" स्वयं दयालु खुदा के बहकाने से बनी इसराइल की जनगणना करानो चाहिये) जो सर्वथा निर्दोष थे उन को प्रेम अथवा न्याय के कारण प्रथम मार डाला और पुनः उदास हुआ।" (तवारीख २१।२ सन् १८ ५५ इस्वी)

अथवा जैसे खुदा अपनी दंड की व्यवस्था से जो उस ने ननवा नगर के लोगों पर यूनस के द्वारा प्रगट की थी पछताया और ईश्वर ने उनके कार्यों को देखा कि वह अपनी २ कुमार्ग से फिरे और ईश्वर इस बुराई से पछतावा जो उन पर लाने को उस ने कहा था और उसने उन से वह बुराई न की।"

(यूना ३।१०)

खुदावन्द फरमाता है (हे यरोशलम) तू पीछे फिर, मैं तुझ पर अपना हाथ बढ़ाऊंगा और तुझे बरबाद करूंगा। पछताते पछताते मैं थक गया।" (यरमियाहे १५।१६)

ऐसा खुदा परिणामतः अपनी करतूतों से यहां तक लज्जित हुआ कि अपनी गर्दन कटाने के बिना उसका चित्त शान्त न हुआ। अन्यथा कहां का प्रायश्चित्त और कैसा बलिदान ?

न्यायकारी पापी को कभी नहीं छोड़ता और न निर्दोष को किसी के पापों के बदले में दंड देता है। पुनः स्वयं अपनी पवित्र सत्ता को दंड देना जिसे इञ्जील के अनुसार अधिकार था कि चाहे रक्त

पात के बिना हजरत मसीह के कारण से पाप एक ही लेखनी से समाप्त कर देता। क्योंकि इस आज्ञा से सब को लाभ पहुंचता। निम्नलिखित इञ्जील मती २०।१-१५ के अच्छों को कड़कड़ाने का अधिकार न होता और अब तो बिचारे की जान गई और उनके भावे ही नहीं।

बहुत से लोग शिकायत का अधिकार रखते हैं। उदाहरणतः वह लोग जिनके कानों तक अभी मसीह की इञ्जील ही नहीं पहुंची। द्वितीय वह बालक जो उत्पन्न होते ही मर गये, या थोड़े दिन के पश्चात् मरे। तृतीय वह जो जन्मतः पागल हैं जो समस्त आयु इसी रोग में पकड़े रहे और मजबूरी के कारण न मसीह पर ईमान ला सके और न बपतस्मा पासके यदि क्षमा न किए जाएंगे तो न्यायालय की जंजीर अवश्य खड़कावेंगे। यदि क्षमा कर दिए गए तो बुद्धि से कोरे हैं और जो बुद्धि व ज्ञान के कारण जादूगर, साहिर, शोबदा बाज़, भूत पिशाच और झूठे चमत्कारों के निपुण लोगों पर ईमान न लाए। अथवा जो दयालु भगवान् या हज़रत शैतान की इच्छानुसार ईमान न ला सके अपनी निर्दोषता पर तर्क करेंगे। और पाप के बोझ को दयालु भगवान या शैतान या पादरी साहिबान (जिन्हों ने इच्छा या अनिच्छा द्वारा इंजील सुना कर पापी बनाया) के आगे सिर धरेंगे। तब न जाने प्रेम अभिभूत हो अथवा न्याय। हमें तो इंजील से मसीही खुदा के क्रोधाभिभूत अत्याचारी और रक्त पिपासु होने के असंख्य प्रमाण मिलते हैं। हम नहीं जानते कि इन प्रमाणों के आगे कौन उन से प्रेम कर सकता है! और यदि कहें तो इसके अतिरिक्त बुद्धिमान् यूं समझें कि बकता है और क्या समझा जा सकता है?

(१) देखो खुदा ने आदम से उसके उस कर्म की जो ईश्वरीय इच्छा के अनुसार और शैतान की प्रेरणा तथा विशेषावास्थाओं के बल पर घटना हुई थी कैसा बदला लिया? उसे तो उसे, उस की सन्तान को भी न छोड़ा किन्तु अपनी गर्दन पर छुरी चलाए बिना न रहा।

(२) शैतान जैसा प्रबल, अकारण हमारे बहकाने पर जिसका परिणाम नित्य काल के दंडरूप में होगा—नियुक्त किया। क्या वह सर्वशक्तिमान् दयालुता और शैतान के दोनों कार्य सम्पन्न कर देने से लाचार (बाधित) था। नहीं शैतानियत से हाथ उठा लेना अभी नहीं हुआ। जैसा कि उपरिलिखित प्रमाणों से प्रगट है। तो भी उसने अपने लिये एक उप कार्यकर्त्ता नियत किया। जो शक्ति और बल में उससे भी बढ़ गया। क्योंकि वह उसे धोखा देने लगा और कठिनाईयों तथा कष्टों में गिरफ्तार करने लगा (पकड़ने लगा) जैसा कि मसीह पर प्रकाश में आया कि वह "एली एली लिमा सबकतनी"

अनुवाद— हे खुदावन्द! तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया।" (मती २७।४६)

"हे बाप हे पिता! तुझ से सब कुछ हो सकता है। यह प्याला मुझ से टाल दे।"

(मरक़स १४।३६)

और प्रार्थना की कि यदि तुझ से हो सके तो यह घड़ी मुझ से टल जाए।" (मरक़स १४.३४)

पुकारता पुकारता मर गया। न जाने उस ने किस से प्रार्थना की और पुनः क्यों खाली गई वह तो आप ही खुदा था। सब कुछ कर सकता था। खुदा ही ने बेटा (पुत्र) बन कर अवतार लिया था। या ऐसा कहो कि बाप खुदा ही बेटा खुदा बन गया था। यदि वह चाहता था कि ऐसा अवश्य होना है और शैतान के पंजा से छुटकारा असम्भव है तो अपनी कमज़ोरी (बलहीनता) से क्यों न शरमाया?

(३) तूफ़ान नूह उसी की निर्दयता का नमूना था।

www.aryamantavya.in

(४) सदूम और अमूरा पर (पूर्ण दया से ?) आग और गंधक बरसाई।

(५) बनी इसराईल के कारण से मिश्र के लोगों के पहलोठे मार डाले और उन्हें नील नदी में डुबा दिया।

(६) समय २ पर बनी इसराईल को उभारता और उन से दूसरी जातियों को मरवाता रहा और प्रत्येक अवसर पर मिश्र की पराधीनता से निकाल लाने का तंग बरतन की भान्ति एहसान धरता रहा। (वर्तमान समय में) थियोडर पारकर की जीवनी पढ़ो। किस प्रकार उसने गुलामी का सत्यानाश किया। किन्तु गुलामों को कभी नहीं जतलाया कि मैं ने तुम को यूं स्वतंत्र किया है। बाईबली खुदा से तो थियोडर पारकर सहस्र गुना शुभ साहसी रहा। एहसान करके भुला देना, न जतलाना उच्च विचार सम्पन्नता है। किन्तु शोक ! कि बाईबली खुदा ने उसके विरुद्ध किया। निम्नलिखित प्रमाण खुदा की निर्दयता और क्रोध को सिद्ध करते हैं न कि प्रेम और प्यार को।

(१) मैं इफ़ारायम के लिए शेर बबर की भान्ति और यहूदा के घराने के लिए जवान सिंह की भान्ति होकर इन्हें फाड़ूंगा। (होसीअ ५।१४)

(नोहा यरमियाह २।८, ११)

(२) इसीलिए मेरी आपत्ति को देखा कि वह अधिक होती है। तू शेर की भान्ति मेरा शिकार करता और पुनः विचित्र रूपों में हो के अपने प्रति मुझ पर प्रगट करता। (अयूब १०।१६)

(३) और मैं मिश्र के लोगों को परस्पर विरुद्ध कर दूंगा और उनमें से प्रत्येक अपने भाई से लड़ेगा। (यसाया)

(४) और मैं ने उन्हें वह कष्ट दिए जो ठीक न थे और विधान कि जिन से वह जीते न रहें। (हिज़कील २०।२५)

(५) परमेश्वर तुम्हारे पूर्वजों पर सीमातीत क्रोधित हुआ। (ज़करिया १।२)

(६) और मेरे आसमानी दूत ने मुझे कहा कि यह कहके पुकार कि रब्बुल अफ़वाज़ (सेनाओं का रब्ब = ईश्वर) यूं फ़रमाता है कि मुझे यरोशलम के लिए जोश आता है किन्तु बड़े जोश और इन विजातियों से जो अब बड़े आराम से हैं, बहुत अप्रसन्न हूं कि मैं थोड़ा सा विरक्त था और उन्होंने इस आपत्ति को अधिककर दिया। (ज़करिया १।१४, १५)

(७) हे मकतीस के रहने वालो ! तुम मातम करो (रोवो) क्योंकि सारे व्यापारी मारे गए। वह जो चांदी को उठाए लिए जाते थे सो काटे गये और इस समय ऐसा होगा कि मैं दीपक ले के यरोशलम में ढूढूंगा और जितने अपने तलछट पर जम गए हैं और अपने मन में कहते हैं कि खुदावन्द न भला करेगा, न बुरा करेगा— उनको दंड दूंगा तब उनके धन दौलत और सामान न लूटे जायेंगे और उनके घर उजड़ जाएंगे। (सनफियाह १।११,१३)

(८) मैं देश के तल पर से सब के सब को सर्वथा नष्ट कर दूंगा। (सनफ़िया १।२)

(९) परमेश्वर क्रोधी और बदला लेने वाला ईश्वर है। और वैरियों के लिये क्रोधित होता है। परमेश्वर क्रोध में धीमा है किन्तु बहुत दृढ़ है। वह पापियों को निष्पापी कभी न ठहरावेगा। पुनः प्रायश्चित और दया कैसी ?

(१०) और मैं अपना मुख उनके विरुद्ध फेरूंगा। वह एक आग से निकालेंगे और दूसरी आग उन्हें जलावेगी और जब मैं अपना मुख तुम्हारे विरुद्ध फेरूं, तब तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं (क्रोध स्वरूप से भी डरा करते हैं) और प्रभु परमेश्वर कहता है कि उनके पाप के कारण से देश को उजाड़ डालूंगा। (हिज़क़ील १५।७-८)

अवश्य न्याय भी यही चाहता है।

(११) और परमेश्वर ने मुझे कहा कि यदि मूसा अथवा समवाईल मेरे सामने खड़ा हो तो भी उन लोगों पर दया करने को मेरा मन नहीं झुकता। मेरे आगे से उन्हें दूर कर वह चले जाएं। (यरमियाह १५।१)

(१२) "इस लिए तू उन लोगों के लिए प्रार्थना न कर क्योंकि आपत्ति के समय मैं इन की न सुनूंगा।" (यरमियाह १४।२)

(१३) और रब्बुल् अफ़वाज यूं फ़रमाता है कि देख, मैं इन पर दंड निपात करने को हूं। जवान तलवार से मारे जायेंगे और इनके पुत्र पुत्रियां अकाल से मरेंगे। (यरमियाह ११।२२)

(१४) इसलिये खुदावन्द यहूदा कहता है कि देख, मेरा ग़ज़ब और मेरा कहर इस मकान पर और इनसान पर और पशु पर और मैदान के वृक्षों पर और भूमि की उपज पर डाला जाएगा और वह भड़केगा और बुझेगा नहीं। (यरमियाह ७।२०-२१)

(१५) इस लिये परमेश्वर यूं कहता है कि देख मैं उन पर आपत्ति लाने को हूं जिससे वह अपने को न छुड़ा सकेंगे और चाहे वह मुझ से प्रार्थना करें तो भी मैं न सुनूंगा। (यरमियाह ११।११)

(१६) किन्तु तुम्हारे दोषों ने तुम्हारी और तुम्हारे रब्ब (खुदा) की परस्पर पृथक्ता की और तुम्हारे पापों ने उस के मुख को तुम से छिपाया, ऐसा कि वह नहीं सुनता। (यसायाह ५९।२)

प्रतीत होता है कि खुदा पापियों पर दया नहीं करता किन्तु मुख छिपाता है।

(१७) और जब खुदावन्द अय्यूब से यह बातें कर चुका तो खुदावन्द ने अलेफ़ज़तबमीनी से कहा कि मेरा क्रोध तुझ पर और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का। क्योंकि तुमने मेरे सम्बन्ध में मेरे भक्त अयूब की ओर नहीं कहा। (अय्यूब १२।७)

पहिले खुदा बात पर क्रुद्ध हो जाता था किन्तु जब से मर गया, ठंडा हो गया। देखो इन बेचारों से रिश्वत ले कर उन का पीछा छोड़ा और रिश्वत भी ली किन्तु अयूब की सफ़ारश से। जैसा कि लिखा है :—

सो अब अपने लिये सात बैल और सात मेंढे लेके मेरे भक्त अयूब पास जाओ और अपने लिये जलती पशु बलि गुजरानो। मेरा भक्त अयूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा कि मैं उस के कारण से स्वीकार करूंगा। ऐसा न हो कि मैं तुम्हारी मूर्खता के योग्य तुम्हारे साथ व्यवहार करूं। (अय्यूब ४२।५)

संक्षिप्त बात यह है कि ओल्डटैस्टामेंट खुदा का प्रेम सम्पूर्ण मनुष्य समाज के लिये कदापि सिद्ध नहीं करता हां, उस के क्रोध और ग़ज़ब के सहस्रों भड़कते हुए प्रमाण इस से एकत्र कर लीजिये। अब ओल्डटैस्टामेंट हम छोड़ कर कहते हैं कि स्वयम् मसीह संसार में प्रेम और प्यार का बीज बोने नहीं आया। उससे स्वयं यूं कहा है। देखो न्यूटैस्टामेंट।

www.aryamantavya.in

"यह मत समझो कि मैं भूमि पर मेल कराने आया हूं। मैं मिलाप कराने नहीं—तलवार चलाने आया हूं। क्योंकि मैं पुत्र को पिता से पुत्री को माता से और पुत्र वधू को उस की सास से फूट करवाने आया हूं और मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होंगे। जो कोई माता पिता को मुझ से अधिक प्रेम करता है वह मेरे योग्य नहीं जो कोई पुत्र वा पुत्री को मुझ से अधिक प्रेम करता है मेरे योग्य नहीं है।"
(मती १।३४-३८)

अब कुछ मसीह खुदा के सम्बन्ध में भी विचार कर लीजिये कि चाहे ८ और १६ के प्रमाणों के अनुसार पापियों को दंड के बिना कदापि न छोड़ेगा तो भी वह इन कर्मों के लिये जिनके करने में वह उपरिलिखित के अनुसार सर्वथा बाधित हैं, वह कुछ दंड देने में भी हिचकिचाता।

'यरोशलम को सान्त्वना दो और उसे पुकार के कहो कि उस की आपत्ति के दिन जो युद्ध और लड़ने के थे निकल गए। उस के पाप का प्रायश्चित्त हुआ और उसने खुदावन्द के हाथ से अपने सब पापों का दुगना पाया।" (यसाया ४०।२, ३)

पादरी खड़गसिंह जी को इस वैदिक सिद्धान्त पर कि कर्मों ही का फल मिलता है बड़ा आश्चर्य है किन्तु उन्होंने इञ्जील की इन आयतों को देखने से सर्वथा आंखें बंद कर ली हैं।

(१) तुम धोखे में न पड़ो। खुदा ठठ्ठों में नहीं उड़ाया जाता। क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है—वही काटेगा। (गलतियों ६।७)

(२) क्योंकि इब्ने आदम (यसूअ) अपने बाप के जलाल में (तेजस्वितामें) अपने फरिश्तों के साथ आवेगा। तब प्रत्येक को इस के कर्मों के अनुसार फल देगा। (मती १६।२७)

(३) क्योंकि तू अपनी बातों से ही निष्पाप और अपनी बातों ही से पापी ठहराया जाएगा।
(मती १२।३७)

(४) पुनः उसने उस से कहा सावधान रहो कि तुम क्या सुनते हो। जिस माप से तुम मापते हो उसी से तुम्हारे लिये नापा जाएगा (मती ४।२४)

(५) कि राज्याधिकारी शुभ कर्मा लोगों को नहीं किन्तु बदकारों को भय का कारण है। अतः यदि तू चाहे कि राज्य से भय न रहे तो नेकी कर। (रूमियों १३।३)

(६) इस लिये यदि उस के सेवक भी अपने स्वरूप को सत्य प्रियता के सेवकों से बदल डालें, तो कुछ यह बड़ी बात नहीं। परन्तु उन का परिणाम उन के कर्मों के अनुसार होगा। (फ्रिन्तियों २ ११।५)

(७) क्योंकि प्रभु की आंख धर्मी लोगों पर हैं और उसका कान उन की प्रार्थनाओं पर। किन्तु परमेश्वर का मुख अभिमान करने वालों के विरुद्ध है। (पतरस १।३-१२)

(८) क्योंकि जिस अवस्था में खुदा ने फरिश्तों को जब उन्होंने पाप किया न छोड़ा किन्तु अन्धकार की जंजीरों से बांधा और नरक में डाल के सुपुर्द किया तब न्यायालय के दिन तक उन की निगरानी हो और अगले संसार को भी न छोड़ा किन्तु तूफान के पानी को अधर्मियों के लोक में भेज कर जीव समेत जो सत्यवादिता की मनादी करने वाले थे आठ को बचा लिया और सदूम और अमूरा के नगरों को भूमिसात् करके तथा मिटजाने की आज्ञा फ़रमा के उन्हें आगामी के अधर्मियों की शिक्षा के

www.aryamantavya.in

लिये आदर्श बना रखा और उसने सत्यप्रिय लू को जो गुन्डों कीं अपवित्र चालों से दुःखी हुआ रिहाई प्रदान की। (पतरस २ २।८-७)

इन समस्त प्रमाणों से तो स्पष्ट प्रगट होता है कि चाहे मनुष्य स्वतन्त्र कर्ता भी न हो और चाहे खुदा ही उस से पाप कराए तो भी अपने कर्मों और आचरणों के सुख दुःख रूप फल से बच नहीं सकता। किसी के साथ पक्षपात न होगा। हां, अति हो जाए तो कुछ आश्चर्य नहीं। जैसा कि यसाया। ४०।२ के उपरिलिखित प्रमाण से प्रगट होता है।√ अपना काल की पुस्तक २१।१७ के इन शब्दों से प्रगट होता है कि—

"तब दाऊद ने खुदा से कहा कि क्या मैंने लोगों को नहीं गंवाया अर्थात् मैं ने ही पाप किया और सत्य यह है कि बुराई की। परन्तु इन भेडों (बनी इसराईल) ने क्या किया है कि मेरी आपत्ति इन पर पड़ी। हे मेरे खुदावन्द ? हे मेरे खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत (प्रार्थना) करता हूं कि तेरा हाथ मुझ पर और मेरे बाप के घराने पर पड़े किन्तु इन पर नहीं"

दाऊद की यह प्रार्थना सत्तर सहस्र मनुष्यों के मरणोपरान्त कुर्बानी छुड़ाने से स्वीकार हुई।

पादरी महोदयो। पवित्र वेद में जाति पाति का कोई भेद नहीं। इस की शिक्षा और समस्त मानव मात्र के लिए एक जैसा है (जैसा कि हम व्याख्यान नंबर ३ के उत्तर में सिद्ध कर चुके हैं। किन्तु तो भी अपरिचिति के कारण आप अधिक आश्चर्य चकित न हूजिये मसीह के खुदा की प्रारंभिक अवस्था आप भूल गए। यह बेचारा खुदा बनी इसराईल के घर जा कर बछड़े खाता रहा। नहों अग्नि में, अग्निस्तंय में अथवा बादल के मार्गगामी हुआ, कहीं लड़ा, याकूब से पहलवानी में पराजित हुआ, कभी मन (खाद्यवस्तु जो आकाश से खुदा गिराता था) और कभी बटेरे ला कर खिलाता और मीठा पानी चट्टान से निकाल कर पिलाता रहा।

संक्षेपतः छोटी सेवाकारी में बहुत समय व्यतीत किया यहां तक कि खेमों की चौकीदारी करता रहा परिणामतः वही कौम उस की न हुई किन्तु उसके, रसूलों और नबियों को बहुत नीच समझा और कष्ट दिये और बाधित बेचारे को उस राजा के समान (जिस का दृष्टान्त मती २२।१-१६ में लिखा है) और जिस के निमन्त्रण में निमन्त्रित लोग सम्मिलित नहीं हुए बाधित हो कर उसे अन्य लोगों को बुला कर खाना देना पड़ा और विजातीयों से अपने लिए लोग चुनने पड़े।

यदि हम आपके वक्तव्य को (जो वास्तव में असत्य और निराधार है) मान भी लें कि जात पात का भेदादि प्रामाणिक पुस्तकों में पाया जाता है तो सत्य कहना। वह भेद बनी इसराईल और विजातीयों से अधिक कठोर है क्या ? हम तो ओल्डटैस्टमेंट में पढ़ते है कि बनी इसराईल के लिये संसार के खुदावन्द ने वह २ कार्य किये जो उसकी ईश्वरीय शोभा के कदापि योग्य नहीं थे।

—०—

√ प्रत्येक ने स्पष्ट खोल दिया कि कोई भी छूटेगा नहीं, एक भी नहीं छूटेगा। भोले लोगों सावधान हो जाओ कोई अपवाद नहीं।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

पंचम अध्याय

ईसाई मत संसार में किस प्रकार फैला ?

समस्त चालाकियों से पादरी महोदय नासमझ बच्चों अथवा ग्रामीण सादा लोगों को इस प्रकार फुसलाया करते हैं और किसी समय नगर के प्रतिष्ठित धनी वर्ग को जो इतिहास का नाम तक भी नहीं जानते यही विश्वास दिलाया करते हैं कि क्रश्चन मत की सत्यता और उसकी कारवाई का यह खुला प्रमाण है कि वह सारे विश्व में फैलता जाता है, उसके राज्य में शान्ति है, वह शान्ति से बाईबल द्वारा प्रचार करते हैं। बल प्रयोग से नहीं। वह तलवार नहीं चलाते किन्तु बुद्धि पूर्वक समझाते हैं। प्रैस, रेल, इंजन, घंड़ी, विद्युत तार, डाक्टरी, कालिज, स्कूल सब ईसाई मत की बरकतें हैं। और कई अपनी गोरी चमड़ी को भी गवाही में उपस्थित किया करते हैं।

नि:सन्देह अनजान मनुष्य ऐसी बातें सुन कर फिसल जाता है। यदि ईसाई मत का वास्तव में यही दृश्य है। तो बेचारा गंवार क्या बुद्धिमानों को भी इस का साथ देना चाहिये। प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या ईसाई मत ऐसा नहीं है ?

(उत्तर) कदापि नहीं। और उस को हम विस्तार सहित एक पूर्ण अन्वेषण के साथ सिद्ध करना चाहते हैं।

स्पष्ट हो कि प्रथम तो ईसाई मत समस्त संसार में नहीं फैलता जाता और न फैल चुका है। इस समय भी इसाई मत से बुद्ध बहुत अधिक हैं। फ्रांस, जर्मन, इण्ग्लैंड, नारवे, अमरीका और अफ्रीका के भिन्न भिन्न भागों में लोग ईसाईयत का परत्याग कर रहे हैं। बीसियो समाचार पत्र बाइबल के विरुद्ध प्रचलित हैं। आर्य समाज का पवित्र यत्न ईसाई वृक्ष को सफल नहीं होने देता। बुद्ध वाद वेदवाद, योरुप के प्रायः स्थानों पर फैल रहा है और मन्दिर बन रहे हैं।

भारत के अधिक स्थानों पर भी लोग ईसाई मत का परित्याग करते जाते हैं। मद्रास और पंजाब के वृत्तान्त साक्षी हैं। अभी एक दो वर्ष हुए कि योरुप के एक प्रसिद्ध पादरी सर एज़क टेलर महोदय ने ईसाईमत का दिन प्रतिदिन गिरते जाना अति उत्तमरूपेण वर्णित किया था जिस पर बहुत सी खलबली मची। किन्तु जितना ईसाईयों के पास उन्नति करने का सामान है उतना यदि आर्यों के पास हो तो वह ईसाईयों से सैंकड़ों गुना अधिक उन्नति कर सकते हैं। वह कार्यकर्ता और सामान न होने पर भी वैतनिक पादरियों और बिशपों के मुकाबला में बहुत कुछ कर रहे हैं। ईसाईमत के कारण से राज्य में शान्ति नहीं किन्तु महारानी क्वीन विकटोरिया के सुप्रबन्ध और पार्लियामेंट की उत्तम कोन्सल के कारण से शान्ति है। यदि ईसाईमत के कारण से शान्ति है—तो रूस में कुप्रबन्ध क्यों है ? क्या वह ईसाई नहीं ? अथवा वहां गिरजे और इञ्जील नहीं ? पहिले योरुप के बादशाहों के कालों में कुप्रबन्ध क्यों था ?

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

यद्यपि उस समय इञ्जीलें, सलीबें, गिरजे सब थे। किन्तु जितना एक सहस्र वर्ष तक योरुप में पोप का राज (अर्थात् चतुर्थ शती से सोलहवीं शती तक) रहा। इसमें इतनी खराबियां, अत्याचार, शरारतें, नहूसतें, बेईमानियां, तबाहियां, दुराचार स्वार्थादि थे कि जिनकी गणना सीमातीत है। जो समस्त ईसाई, राहिरों, बिशपों, पोपों के हाथों से योरुप के देशों में केवल ईसाईमत के कारण से प्रगट हुई। केवल इन खराबियों के अन्य कोई उन्नति न हुई।

(विस्तार देखो डरबेपर महोदय की कानफ़लक बटक दीन असेजन इन साईंस अध्याय १० पृष्ठ २५५ से २८५ तक ८वीं बार लंडन १८८७ ईस्वी)

बाईबल की प्रीच (प्रचार) भी शान्ति से नहीं हुई और न अवसर प्राप्त होने पर ईसाईयों ने तलवार चलाने और बल प्रयोग करने से कुछ भी संकोच किया। किन्तु यथावसर शताब्दियों तक तलवार चलायी। स्वयं ईसाईयों में भी मज़हबी युद्धों ने चिरकाल तक रक्त की नदी बहाई।

रोमन कैथुलिकों का व्यवहार प्रोटैस्टेंटों से और उनका दूसरों से बहुत ही शिक्षाजनक था। एक दूसरे के रक्त पिपासु रहे। अतः प्रसन्नता उत्पन्न करना भी कोई ईसाईमत की विशेषता नहीं। प्रैस और रैल का आविष्कार भी ईसाईमत से नहीं। किन्तु भिन्न २ देशों के विद्वान् साईंसदानों और फलासफरों के पुरुषार्थ का परिणाम है। न कि पादरियों के साहस अथवा ईसाईयों को बरकत का। इन वस्तुओं के आविष्कारक प्रायः सच्चे ईश्वर भक्त और कुछ नास्तिक थे। अतः बाईबल से इसका कोई सम्बन्ध नहीं।

अब हम चाहते हैं कि ईसाईयों का ज्ञान, सदाचार, ज्ञान से प्रेम और ज्ञान संपन्न पुस्तकों तथा विद्वानों से व्यवहार और स्वयम् ईसाईयों का पारस्परिक वर्ताव इन सब बातों को योरोपियन विद्वानों और दार्शनिकों की खुली साक्षियों से निवेदन करें। जिससे हमारे न जानने वाले भाईयों को ज्ञात हो कि प्रत्यक्ष श्वेत रंगत के ईसाई क्षणिक टीपटाप में पौडर और साबुन से धुले हुए ईसाई आन्तरिक पवित्रता से कितनी मंजिलें दूर हैं।

"संगीनदिलस्त हरकि बजाहिर मुलायमस्त।"+(१)

पिनहांदरुं पुंबानिगर पुंबा दाना रा।×(२)

"वृक्ष अपने फल से पहचाना जाता है।" मती १५।२०

तीन सौ वर्ष मसीह की मृत्यु के पश्चात् कान्सनटन बादशाह इस नवीन मत का बड़ा रंकन था। वह नसिया की कौंसल में उपस्थित था। जहां से ईसाई तसलीस के तीन खुदाओं के पद नियत हुए। उसने कंफसा के बंद करने के लिए कानून (विधान) स्वीकृत किये। और ईमान वालों के लाभार्थ काफिरों की जायदाद को जब्त किया। उसने धन के द्वारा सहस्रों को ईसाई मत की ओर आकर्षित किया। गिरजे की गोद में बहुत ऐश्वर्य डाला। और सरकारी कोष को उस पर व्यय किया तथा अपने

+(१) वह कठोर हृदय है जो कोई प्रत्यक्षतः (देखने में) कोमल है।

×(२) रोई के अन्दर तिरोहित जिनोले को कोमल मत समझ। (अनुवादक)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

आदेश से बिशपों को रुपए दिए। संक्षेपत: जो कुछ एक बादशाह ईसाईमत के लिए कर सकता था। कांसटन्टन ने ईसाई मत के लिए किया। और जो ईसाई मत का परिणाम होना था। वह भी उस बादशाह में प्रगट हो गया अर्थात् यह कि वह अन्तिम काल तक बपतिस्मा से टाल मटोल करता रहा, जिससे वह स्वतन्त्रापूर्वक निर्भय होकर पाप कर सके। उसने अपने लड़के को मारा। अपनी पत्नी का वध किया। वह एक अत्याचारी बादशाह और फजूल खर्च था।

प्रथम शती के ईसाईयों का चाल चलन

यदि पाल पीटर जैविड की नविशतें (लिखी बातें) प्रथम शती में लिखी गई हों तो उस समय भी ईसाईयों का सदाचार बहुत संदिग्ध था। (देखो फ्रन्तियोन ५।१)

द्वितीय शती

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ कहता है कि 'जो व्यक्ति पुण्य पाप का विचार नहीं रखता तो वह आचार का बुरा मार्ग दर्शक है। यदि यह बात सत्य है तो यह पदवी पहिले ईसाई प्रचारकों को दी जा सकती है। कृश्चन लोगों ने छल कपट से कृत्रिम पुस्तकें बनाईं और दीन फैलाने के लिये बहुत से मज़हबी छल कपट किये।"

तृतीय व चतुर्थ शती

तीसरी शती में वही इतिहासज्ञ मौशीम ईसाईयों के बिशपों को ऐश व मौज और पादरियों की इसी प्रकार बुराईयों का वर्णन करता है। और चतुर्थ शती के वर्णन में वही इतिहासज्ञ शोक से लिखता है कि दुराचार, ऐश और आवारा लोगों के जत्थों से ईसाई दीन कलंकित हो रहा है। पापियों और मौज करने वाले लोगों की अधिकता के कारण अच्छे मनुष्य बहुत ही थोड़े रह गए थे। इससे स्पष्ट प्रगट होता है कि ईसाई दीन मुख्य पद के पुण्य कार्य सर्वसाधारण में फैलाने में असफल रहा।

पांचवीं शती

मार सिलेज का पादरी सेलवीअन पांचवीं शती के अपने सहधर्मियों की दुष्प्रवृत्तियों का वर्णन इन शब्दों में करता है। वह पूछता है कौन ऐसा व्यक्ति है जो दुराचार के दलदल में फंसा हुआ न हो।

यदि इससे अधिक पूछना चाहते हो तो मैं आगे बताता हूं। जो कुछ मैं आगे बताना चाहता हूं। वह बहुत गम्भीर किन्तु दु:ख से पूर्ण है। स्वयं खुदा का गिरजा और उसमें यह बुराईयां ? शोक ! और किस प्रकार खुदा को क्रोध दिला सकते हैं। कुछ व्यक्तियों के अतिरिक्त जो बुराई से भागते हैं। प्राय: प्रत्येक ईसाई का समस्त बुराईयों का दुर्गन्धित छज्जा है। क्योंकि तुम कठिनता से ऐसे व्यक्ति को पाओगे जो शराबी, पेट पूजक, दुराचारी, अय्याश, चोर, मानव घातक न हो और सबसे बुरी बात यह है कि यह सब प्रकार के मनुष्य असंख्य हैं। मैं अब समस्त ईसाई लोगों से ईमान से पूछता हूं। कि क्या तुम एक भी व्यक्ति पा सकते हो जो इन सभी बुराईयों और पापों में जो मैंने बताए हैं फंसा हुआ

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

न हो। किन्तु कौन ऐसा है जो सब का दोषी न हो। सत्य तो यह है कि ऐसा ईसाई पाना अधिक सुगम है इसकी अपेक्षा ऐसा ईसाई जो किसी बुराई का दोषी न हो। प्रायः सभी पादरियों का समूह इस लज्जास्पद बुराई में ऐसा डूबा हुआ है कि समस्त ईसाईयों में उसको एक प्रकार से पवित्र गिनते हैं जो अन्यों से न्यून दुष्काम हो। (देखो मियाल्ज मिमाएर्ज आफ अरली क्रश्चानेटी पृष्ठ ३६६, ३६७)

जान डेवन्पोर्ट कहते हैं कि वास्तव में मसीहोदीन के अगुआ लोगों की दुष्कामता से ईसाईयों के हृदय भर गए थे। ऐसा कि ब्रूस महोदय अपनी पुस्तक ट्रावलस नामी जिल्द १ पृष्ठ ५०१ में लिखते हैं कि :—

ईसाईदीन के अग्रगण्य ऐसे झूठे, दुर्वक्ता और मक्कार थे जो झूठे चमत्कार दिखाते थे। इन सब बातों से बढ़कर यह था कि इन लोगों ने धार्मिक बातों में ऐसी सुस्ती और बेपरवाई बरती थी कि अरब में ईसाईयों का नाम बदनाम हो गया था।"

इसी पाँचवीं शती में एक दार्शनिक स्त्री हेपेटिया नामा थी। उसकी इस जुर्म में कि फिलासफरी फैलाती है। पादरी सरल के शिष्यों की सेना ने अपने खुदा के बाईबली आदेशानुसार (खुरूज २२।२०) जब कि वह अपने व्याख्यान के लिए रोम को जा रही थी रथ पर से घसीट कर सिकन्दरिया की शोभायमान गिरजा में ले गए। पहिले नगा किया। पुनः गिरा दिया। और उसके शरीर को सीप के टुकड़ों से काटा, फिर जला दिया। (देखो फरूट आफ क्रश्चेनेटी पृष्ठ ५ वाक्य ३)

शारलमेन ने सकसन के मध्य सेना भेज कर आग और तलवार के द्वारा इस जाति को ईसाई किया। जिनको पादरी और राहिब लोग केवल उपदेश से कृष्टान न कर सके क्योंकि उन्होंने अपने यत्न, जबर और धमकी के बिना किये। (देखो मौशेम की अकली जीकल हिस्ट्री अर्थात् दीनी इतिहास पृष्ठ १७)

पुनः लिखा है कि--

"शकन लोगों ने जब उन्नति की तो इनमें से कुछ ईसाई दीन से काफिर हो गए। जिनमें से अन्ततः एक गाड्स केलस राजब ४४९ ईस्वी में बिशप की कौन्सल में यहाँ तक कोड़ों से मारा गया कि उसने अपने लेख जला दिये (इसीलिए मारा गया था) (देखो पृष्ठ ५ फरूट आफ कृशनेटी)

ईसाई दीन का वृक्ष जो फल पश्चिम में लाया। उससे पूर्व में भी फलदार हुआ। जैसा कि आर-मीनिया में थियोडोरा बादशाह के आदेश से पालोशीअन काफिर के मजहब के एक लाख मनुष्य पकड़े गए। उनका धनादि छीन लिया गया। और स्वयं शिकंजों के दुःख में पीले गये।"

हिम महोदय अपने इतिहास 'मिडिल ऐज्ज' में लिखते हैं कि स्वयं ईसाई दस लाख करोसीड्ज़ के जिहाद में मारे गए।"

दसवीं शती

इस शती में नारमन, पौलेंड, रूस, डनमार्क, नारवे इन सबने ईसाई दीन स्वीकार किया।

नारमन लोगों ने एक बहुत सा भूमि का टुकड़ा मांगा था, जिसके बदले में ईसाई दीन स्वीकार किया। और पोलेन्ड वालों ने इस कारण से कि काफिरों के विरुद्ध बड़े कठोर कानून बादशाह ने बनाए।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

इस भय के मारे पुरातन धर्म छोड़कर नवीन ईसाई मत स्वीकार किया। नारवे और डैनमार्क वालों ने एक बहुत बड़ी पराजय के पश्चात् ईसाई मत स्वीकार करके जान बचाई अन्यथा तलवार के घाट उतारे जाते।

१०९९ ईस्वी में यरोशलम पर विजय हुई। इस पवित्र नगर में डोडीअम का भजन गाया गया और पुनः ईसा के सैनिक घन्टों पर से उटकर नगर के महलों, गलियों में गए और निर्दयता से पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों का वध किया।

उसके पश्चात् दूसरी शती में बी. जाई रेसन नगर प्रान्त अलबी जंस ३३ पर विजय हुयी। "नदरलैंड में आलवा ने १८ सहस्र मनुष्य पाँच या छे वर्ष के राज्यकाल में वध किये।

बकल की हिस्ट्री में लिखा है कि एक वर्ष में आठ सहस्र मनुष्य जलाए गए और जब बपोगनाट लोगों पर आक्रमण हुआ तो उसमें चौदह सौ मनुष्यों का वध हुआ। बादशाह अपने भवन की खिड़की से भागते हुए लोगों पर गोलियां मारता था। गिरजाघर में सर्वसाधारण के वध का घंटा बजा और क़ातिलों का चिह्न सलीब का तमग़ा (पदक) था। यह पदक तेरहवें पोप गरगरी ने उसी जिहाद की स्मृति में बनवाया था।

२४ अगस्त १५७२ ईस्वी में सेंट भारथालमी का वध भी इसी जुर्म में हुआ।

१६८५ ईस्वी में प्रोटेंस्टैन्ट लोगों पर रौमन कैथुलिकों ने आक्रमण किया। जिसमें ऐसी कोई बुराई न रही जो दीन के स्वीकार कराने में उन्होंने न की हो। उन्होंने अपने विरोधियों को बांधा, शिकंजा में रखा, और इसी अवस्था में टूटी (नल) से उनके गले में इतनी शराब डाली गयी कि उसके ज्वर से उनकी बुद्धि मारी गयी और उन्होंने उसी अवस्था में रौमन कैथुलिक होना स्वीकार किया। कुछ को सर्वथा नग्न कर दिया गया और सहस्रों प्रकार का अपमान करके उनके आशिरःपाद सूईयां चारों ओर ठोक दीं, चाकू से उनको धीरे २ काटा, गरम चिमटों से उनको नासिकाओं को खींचा, उन को कमरों के अन्दर घसीटते थे, यहां तक कि रोमन कैथुलिक मत स्वीकार किया। अथवा कुछ को भयावह चीखें मारने और खुदा के नाम की शपथ लेने पर छोड़ दिया और कुछ के हाथों तथा पांव के नाखुन बलपूर्वक निकलवा दिये जिससे निःसन्देह बड़ा कष्ट हुआ, कुछ के पांव जलवा दिये। कुछ के शरीरों को धोंकनियों से इतना धोंका कि वह फट जाने के समान हो गए। यदि इस प्रकार पर भी वह दीन छोड़ने पर उद्यत न हुए तो उनको तंग और दुर्गन्धित जेलखानों (बन्दीगृहों) में बन्द किया गया। जहां उन पर बहुत निर्दयता की जाती थी। और कुछ स्थानों पर उन्होंने पिताओं और पतियों को चारपायी पर बांधा और ऊनकी आँखों के सामने उनकी लड़कियों और पत्नियों के साथ हराम (दुराचार) किया। (देखो निकल की हिस्ट्री)

स्त्रियों पर विशेषरूप अत्याचार किये गये। वह ऐसे गन्दे अत्याचार हैं जिन का गन्दा पन कोई गन्दा मग़ज़ (दिमाग़—बुद्धि) भी विचार नहीं कर सकता। किन्तु यह सब केवल इसी लिये किया कि रौमन कैथुलिक हो जाएं।"

अब दार्शनिक असक्युलीनस कुछ आविष्कार संबंधी परीक्षणों के कारण १३३७ ईस्वी में जलाया गया।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जान हंस १४४५ ई० में जलाया गया। जैरोम प्रसिद्ध इतिहासज्ञ १४१६ ई० में जलाया गया। सहवान और तूर इलाराहिब कुछ बुराईयों के दूर करने के कारण १४९८ ईस्वी में जलाए गए।

जी. आर. बरोनो ज्योतिर्वित रोम में १६०० ईस्वी में जलाए गए।

वे. के. नीनो की जिहवा निकलवा ली गई। और टोलोस में १६१९ में जलाए गये।

पादरी कलवोन की व्यवस्था देने से सर वीटस तसलीस (त्रिनेटी) के सिद्धान्त के विरुद्ध होने के कारण और करूआट समस्त कृश्चैनिटी के विरूद्ध होने के कारण स्विटजरलैंड में जलाए गये।

जब प्रोटैस्टैन्ट लोग सप्तम ऐडवर्ड के समय बलशाली हुए तब आर. जो. बिशप करेन को आदेश हुआ कि प्राटैस्टेंट के विरुद्ध लोगों की खोज करो। जिस खोज क कारण जान पोजर और वेन पेरस इंगलैंड में जीवित जला दिये गये।+

सम्राज्ञी एलज़बिथ के समय में प्रोटैस्टैंट लोग विजयी हुए। तो उन्हीं ने १५९२ ईस्वी में प्रोटैस्टैंट बनाने के लिये शिकंजा, फांसी, चमड़ा उतारना, खंड २ करना, इस प्रकार के अत्याचार कार्य में ला कर इंगलैंड वालों को प्रोटैस्टैन्ट बनाया।

शिकंजा में लाने की यह दया पूर्ण नर्म पद्धति थी। जिस के द्वारा इन दयालु प्रोटैस्टैन्ट ईसाईयों ने रौमन कैथुलिकों को प्रोटैस्टेन्ट बनाया, अर्थात् बलूत की लड़की का एक बड़ा चौखटा बनाते और उसे तीन फुट भूमि से ऊंचा लगाते थे। कैदी इस के नीचे रखा जाता था। अर्थात् पेट के बल भूमि पर लिटाया जाता था। उस की मुटाई और टखने रस्सी से बांध कर वह रस्सियां बेलनों से अर्थात् चौखटे में अन्त के दो बेलनों से बांधी जाती थीं। इन बेलनों की दो ढीकली अर्थात् नालियों अथवा चरखियों से चलाते थे। जिससे वह कैदी नीचे से उठना शुरू होता था। तब इससे प्रश्न होते थे। यदि उत्तर अनुकूल न होते तो दोषी को और अधिक खेंचते थे। यहां तक कि पीड़ित की हड्डियां जोड़ों से पृथक् हो जातीं थी। इस प्रकार की नर्म और कोमल पद्धति से प्रोटैस्टेन्ट लोगों ने रौमन कैथालिकों को अपने मत में मिलाया। और यही इङ्गलैंड वाली अवस्था स्काटलैंड और आयरलैंड में गयी।"

(विस्तार देखो बकल हि० जिल्द ३ पृष्ठ १४४ से १४६)

और ऐसी ही अत्याचार अमरीका में प्रोटैस्टेन्ट लोगों ने कवेकर लोगों पर किये।" कृश्चैनेटी केवल निर्दयता ही नहीं किन्तु प्रकाश के सम्मुख अधंकार पसंद करती है क्योंकि उसके राज्य की शर्त अविद्या है। उसने ज्ञान के विरुद्ध जिहाद किये। और बहुत शताब्दियों तक मनुष्यों को उन्नति करने से बंद रखा।"

+जान डेवन्पोर्ट लिखते हैं कि १४१५ ईस्वी में जानगलीडन और चार्ड ट्रम्सन असमेतह फील्ड में कुफ्र के दोष में जला दिये गये। और १४१४ ईस्वी में ऐलसगोबह्म, गलास्टर राजर बालंग बरंग और कनैस, सोथोल मारजरी जौरौंन और जानह्म बजरम सहर मतहम मोजर्सन बालंग बरोग ने ·····देश से निकाल दिये गये।

(हिस्ट्री आफ बिकल पृ० १४०)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

पादरी लोग शुरू से ऐसे मूर्ख रहे कि सातवीं शती तक भी बहुत न्यून पादरी थे। जो लोगों के पढ़ने योग्य पुस्तकें लिख सकें। दसवीं शती के आरंभ में विद्या आने लगी और ज्योतिष को तो इतना उसने गारत किया कि पंद्रह सौ वर्ष तक ईसाई मत में कोई नजूमी नहीं हुआ। और जब कापर नपे कस पुस्तक छोड़ मरा, तो ईसाई पादरियों ने उस का पीछा किया और पकड़ २ कर मारे तथा पुस्तक को जलवा दिया।" (देखो फ्रूट्स आफ़ कृश्चैनेटी लिखित मैडिम ऐनी वीसंट महोदया लंडन संस्करण)

भारत में ईसाई हथकंडे

रैवरेंड ऐच बावर महोदय फरमाते हैं कि १५९९ ईस्वी में जो सभा मलयालम में बैठी थी और जिस का प्रैसीडेंट आर्कविशिप मेंजक था। उस में निम्नलिखित व्यवस्था दी गई: "सैशन ९ व्यवस्था २ नीच जाति के लोगों के साथ ईसाईयों को उस समय तक न छूना चाहिये। जब तक वह उच्च जाति वाले हिन्दुओं के साथ हूं। किन्तु जब वहां ईसाईयों के अतिरिक्त कोई न हो तो कुछ दोष नहीं।"

(देखो पादरी महोदय का लेख "हिन्दुओं की जात" पृष्ठ ५३ कृश्चन ट्रैक्ट आन बुक सोसाएटी बपटैस्ट मिशन प्रैस कलकत्ता १८५१ ईस्वी)

राबर्ट दी नौबलीस महोदय १६०६ ईस्वी में भारत में आया। यह अवस्था उस के समय में थी। जो उस ने अपनी आंख से देखी कि पादरियों ने आरम्भ में यह बात प्रसिद्ध की थी कि हम योरुप के ब्राह्मण हैं और जम्बू द्वीप के पश्चिमी भाग में पांच सहस्र फरसंग की दूरी से आए हैं कि अपने भाई भारतीय ब्राह्मणों से विद्या सीखें और अपनी विद्या उन को सिखलावें। जब उन पादरियों ने अपने आपको ब्राह्मण प्रसिद्ध कर दिया। तब उन्होंने इस जाति का अनुकरण भी आरम्भ किया। वह पीताँबर धोती पहनने लगे जैसा कि भारत के मजहबी पेशवा और फकीर पहनते हैं। और जल देने लगे जब वह सामान्य जनता के सम्मुख जाते थे माथे पर चंदन लगाते थे। जैसा कि ब्राह्मण लगाते हैं।"

(देखो ए० बी० डियूवाईस पृष्ठ ५, ६) और (पादरी बावर महोदय की पुस्तक पृष्ठ ५४)

केवल यहां तक ही धैर्य न किया "किन्तु इस कार्य के लिये (अर्थात् ब्राह्मणों को अपने में सम्मिलित करने के हेतु) उन्हीं की इञ्जील की सत्यताओं और निर्धन विश्वास रखने वालों की स्वतंत्रता को गड़बड़ करते समय भी कुछ न सोचा अपने आपको उच्च कोटि के ब्राह्मण प्रसिद्ध कर के जो पश्चिमी संसार से आये हैं उन पादरियों ने हिन्दुओं के वास्तविक नाम भी अंगीकार कर लिये और इस जाति की रीति रिवाज को प्रत्येक प्रकार से समर्थन किया। ब्राह्मणों की बहुत जातियां हैं। और इस कपट को अधिक प्रभावशाली बनाने के कारण से नोबलिस महोदय ने अपने आपको सब से उच्च पद का बना कर जतलाया। और अपने विरोधियों की जबान बन्द करने के लिये और विशेषत: उन व्यक्तियों को जो इस के ब्राह्मण होने के कपट को जानते थे, उस ने एक पुराना मैला पार्चमेंट अर्थात् चमड़े का कागज पेश किया। जिसमें पुराने भारतीय शब्दों (अर्थात् संस्कृत) में एक कागज नकली दस्तावेज (भाव जन्म पत्री) का बनाया। इस बात के प्रगट करने के लिए कि रूमा के ब्राह्मण भारत के ब्राह्मणों से अधिक प्राचीन काल के हैं और यह कि रोमा के जसवट्स जाति के पादरी विशेष ब्रह्मा देवता के वंश से हैं। पादरी जोवन्सी एक विद्वान् (जसवट) इस जाति के इतिहास में इस से अधिक बताता है

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जब कि इस पहिली दस्तावेज की सत्यता के संबंध में कुछ विश्वास न करने वाले भारतीय हिन्दुओं ने संदेह किया तो नीबीलीलबस ने मदोरा के ब्राह्मणों की पंचायत के सम्मुख शपथ पूर्वक वक्तव्य दिया। कि मैं ब्रह्मा देवता के वंश से हूं। क्या यह आश्चर्य जनक बात नहीं है कि एक प्रतिष्ठित पादरी ने झूठ बोला और क्या यह एक कुफ्र अथवा छल कपट नहीं है? कि उसने इस झूठी शपथखाने और कपट को पवित्र बुद्धिमत्ता वर्णित किया।"

(देखो जसवटस इतिहास जान सी एशियाटिक रीसर्च कृत जिल्द १४ पृष्ठ ५७) और (रैवरेंड बावर की पुस्तक पृष्ठ ५४, ५५)

पादरी रावर्ठ दी नोबलीबस महोदय ने अपना नाम तत्व बोधज्ञ स्वामी रखा और पादरी आर० सी० जी० बसचो महोदय ने अपना नाम वीर मुनि रखा। हिन्दु लोग उनको और उनके भाईयों को सदैव उनके हिन्दु नामों ले जानते थे।" (रैवरेंड वावर महोदय की पुस्तक पृष्ठ ५४ की टिप्पणी)

"निर्धन परिवारों के लिये केबल केटीकसट ही पृथक् न थे किन्तु इन के लिये गिरजे भी पृथक् थें। यदि वह कभी उच्च जाति के गिरजे में जाना चाहते थे तो वहां से बाहिर निकाल दिये जाते और उन को कोड़ों से पीटते थे। किन्तु जब वह मर जाते थे, तो ईसाई संन्यासी उन के घर में प्रविष्ट होने से इनकार करते थे। और मरने वाला भाग्यहीन मनुष्य मरण समय में बिस्तरे से घसीट कर लाया जाता था। अथवा किसी दूर के गिरजा में ले जाया जाता था जिस से वह संन्यासी जो उस के घर में प्रविष्ट नहीं हो सकता था। अन्तिम धार्मिक रसम पूर्ण करे। किन्तु तब भी वह उस को छू नहीं सकता था।" (देखो कलकत्ता रेव्यो अंक ३ पृष्ठ ९५) और (रैवरेंड बाहर की पुस्तक पृ० ५७)

एक दिन एक सैनिक अधिकारी ने (जो ट्रंको बार से तरचनापली की यात्रा कर रहा था) एक फ्रांसीसी पादरी को जो इस के बंगला में आया। अपने साथ खाना खाने के लिये कर्तव्य दृष्टि हो बुलाया। उस पादरी को जब यह ज्ञात हुआ भोजन एक परयार ने पकाया है, उस के खाने से अस्वीकार कर दिया, उस ने केवल मेवे खाए और यह बहाना किया कि इस का भोजन खाने के कारण शूद्र लोग ईसाई धर्म से घृणा करेंगे"। (देखो रैवरेंड बावर महोदय की पुस्तक पृ० ५८)

(भारत में और शिक्षा टैवलेन कृत पृ० २०)

ईसाई का बौद्धिक पुस्तकों से व्यवहार

ड्रेपर महोदय फ़रमाते हैं :—

ईसाई जिहादियों ने ट्रिबोली के पुस्तकालय को जिसमें अनुमान करते हैं कि ३० लाख पुस्तकें थीं – जलाया। जिस समय वह प्रथम कमरा में गये, उसमें केवल कुरान और वह पुस्तकें थीं जो अरबी इसपास्टर की समझी जाती थीं, अतः वह जला दी गईं।

स्पेन वाले सैनिकों ने मैक्सिकों में अमरीका के नक़शों के बंडलों के बड़े २ अंबार जला दिये, जो ऐसी हानि है कि पूरी नहीं हो सकती, कार्डनल ज़तेर ने ग्रेंडा के चौकों में अरबी लेखों की ८० सहस्र पुस्तकें जिनमें उत्तम लेखकों के बहुत से अनुवाद थे जला दिये। (देखो हिस्ट्री आफ दी कान्फलक बरोईन साईंस ऐंड़ रिलीजन पृ० १०३, १०४ लंडन १८८७ ईस्वी २०वीं बार)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

ऐडवर्ड गिबन महोदय फरमाते हैं :—

"मैं उन अधिकतर बहुमूल्य पुस्तकालयों पर शोक करता हूं। जो (ईसाईयों के) रोमन साम्राज्य में नष्ट हो गये।" (देखो जिल्द ३ अध्याय ५१ पृष्ठ ५६६ अवनति का इतिहास द्वितीय)

पायानीयर समाचार पत्र का योग्य विद्वान् संपादक लिखता है :—

"क्रोसीडर्ज़ ईसाईमत के जिहादियों ने तराबलस का पुस्तकालय जिसमें तीन मिलियन अर्थात् तीस लाख पुस्तकें थीं—जला दिया। स्पेन के लोगों ने मैक्सिकों में अमरीका वालों के नक़शों के लेखों के अंबारों के अंबार जला दिये। कार्डीनल्ज़मोरले ग्रैंड अयाग़रनाता में ८० सहस्र अरबी भाषा की हस्त-लिखित पुस्तकें जला दीं। (देखो पायोनियर अखबार इलाहाबाद ८ अक्टूबर १८७५ ईस्वी)

पुनः एक ऐतिहासिक फरमाता है जब वकलफ के अनुवाद जलाने की आज्ञा हुई। तो १४०१ ईस्वी में एक पुस्तक टीलर ने लिखी और १४२८ ईस्वी में कौंसल बैठी जिसकी आज्ञा से वकलफ की हड्डियां क़बर से निकाल कर जलायी गईं।

१५२५ ईस्वी में कार्डनल वलसी और बिशप लोगों ने आदेश दिया कि टन्डेल का अनुवाद न पढ़ाया जाए और इस विषय के इश्तहार अपने इलाकों में जारी किये कि लूथर के कुछ मानने वालों ने अनुवाद अशुद्ध किया है, और खुदा की वाणी को मिथ्या अनुवादों और कल्पित टिप्पणियों से खराब किया है। अतः वह अनुवाद जिस २ के पास हूं। तीस दिन के समय में जनरल वाटेकर के पास उप-स्थित करे। अन्यथा कलीसा से निकाला जाएगा और धर्म को बिगाड़ने वाला कहलाएगा। इसी वर्ष रासल बिशप लंडन और टामसमोर ने समस्त जिल्दें खरोद करके पालोक्रास में जला दीं। पुनः १५२६ ईस्वी में यह जिल्दे छपसार में प्रगटतः जला दी गयीं।

जब ५३० ईस्वी मैं टन्डेल ने इस पर दोबारा दृष्टिपात करके छपवाया अजरहान आदि के द्वारा इसके प्रकाशार्थ लंडन के बिशप ने प्रकाशन करने वालों की प्रसिद्धि की और एक लाख अठासी सहस्र चार सौ रुपये छे आने आठ पायो जुर्माना किया।

पुनः १५४६ ईस्वी में अष्टम हैनरी बादशाह इंगलिस्तान का आदेश प्रसारित हुआ कि टंडेल और कोरडेल के अनुवाद तथा वह पुस्तकें जिनकी पार्लियामैंट ने आज्ञा नहीं दी और भी फ़ख्त और कलफ की पुस्तकें न पढ़ी जावें। किन्तु देश के कलीसा के अधिकारियों को दी जावें कि वह जला दें।

पुनः १५५४ ईस्वी में इशतहार जारी हुआ कि नवीनता लाने वाली पुस्तकें कहीं न भेजी जावें और न कोई अपने पास रखे।" (देखो पुस्तक वालटन १७७१ ईस्वी जिल्द ३)

श्री जान डेवन पोर्ट महोदय फरमाते हैं :—

कि नायीसा की कौंसल में यह बात घटित हुई थी कुसतुन्तुन्या के प्रथम बादशाह ने पादरियों की सोसाइटी को वह अधिकार दिया था कि जिससे बहुत भयावह परिणाम उत्पन्न होकर हानिकारक हुए थे। जैसा कि उनसे कुछ खराबियां निम्न हुईं :—

रक्तपात और बरबादी उन मूर्खतापूर्ण नए सलीबी जिहादों की जो इसाईयों ने लगभग दो सौ वर्ष के समय तक तुर्कों पर किए थे। और जिनमें कई लाख मनुष्य मारे गए थे। उन मनुष्यों का

www.aryamantavya.in

अर्थात् (फरकरानासटम्पट) का जो उस समय मन्तव्य को नहीं मानते थे कि मनुष्य का दोबारा सुधार होना चाहिये—वध करना। लूथर के अनुगामियों और रोमन कैथुलिक मतवादियों का रायन नदी से लेकर अन्तिम उत्तर तक वध होना। वह कत्ल जिसका आदेश हनरी अष्टम और उसकी बेटी महारानी मेरी ने दिया था। फ्रांस में सैंट बारथोलोमियो की हत्या होना, चालीस वर्ष तक अन्य बहुत सी हत्याओं का होना। फ्रांस प्रथम के काल से हैनरी चतुर्थ के पैरस में प्रविष्ट होने तक इस सर्व साधारण की हत्याओं में पांच सौ धनिकों से अधिक और दस सहस्र मनुष्य सर्वसाधारण में से केवल पैरिस की राजधानी में मार डाले गए। मजहबी अदालत की आज्ञा से वध होना घृणा योग्य है क्योंकि वह अदालत पादरियों की सम्मति से बनी थी।

इसके अतिरिक्त और असंख्य नवीनताओं तथा उन बीस वर्षों की खराबियों का तो वर्णन ही नहीं है जबकि पोप, पोप के संघर्ष और विशप, विशप के संघर्ष में था। विषपान और हत्या की घटनाओं का होना, तथा तेरह चौदह पोपों की निर्दयतापूर्ण लूट और अहंमन्यता की बातें, प्रत्येक प्रकार के पाप, दोष और बदकारी में जो एक नीरो या एक गेले गोला से बहुत अग्रसरता ले गए थे। अन्ततः इस भयावह सूची की समाप्ति होने के लिये एक करोड़ बीस लाख नए संसार (अमेरीका) के निवासियों का सलीब हाथ में लिये कत्ल होना। निश्चय से यह बात माननी चाहिए कि एक ऐसा गन्दा और मज़हबी लड़ाइयों का एक न टूटने वाला प्रवाह चौदह वर्ष तक ईसाईयों के अतिरिक्त अन्य कहीं कदापि जारी नहीं रहा। और जिन जातियों के संबंध में मूर्तिपूजक होने का लांछन लगाया जाता है, उनमें से किसी जाति ने एक रक्त विन्दु भी धार्मिक युक्तियों के आधार पर नहीं बहाया (एअ़जाजे तन्ज़ील पृष्ठ ४६०,४६१) और उनकी (पुस्तक अपालोजी लखनऊ पृ. १९८-१९९)

इनसाक्लोपेडिया ब्रटेनिया में ईसाइयों की एक प्रसिद्ध मज़हबी अदालत का वृतान्त इस प्रकार लिखा है :—

"इस मज़हबी अदालत का नाम इनकुज़ीशन था और इसका यह कार्य था कि जो लोग ईसाई मज़हब के संबंध में विरोध भाव रखकर नास्तिकता के विचार रखते हूं या उससे सर्वथा इन्कारी हो गए हूं उनको ढूंड करके पकड़े और दंड दे। यह भयावह विभाग जो इस कारण से स्थापित किया गया था कि धार्मिक बातों के विषय में स्वतंत्रतापूर्वक खोज न होने पावे और मज़हब सर्वथा एक सा रहे। सर्वतः प्रथम तेरहवीं शती में स्थापित हुआ था जब कि पोप इनसोसैन्ट तृतीय ने एक कमीशन इस कारण से दो राहिबों का जो कलोसा से संबन्धित थे नियत किया था कि वह एलीजिऐंस लोगों की कुफ्र और नास्तिकता के विरुद्ध प्रचार करें। क्योंकि उनको अपने कार्य में विशेषतः टोलोस प्रान्त में बहुत सफलता प्राप्त हुई। अतः पोप को यह साहस हुआ कि वह कैथुलिक चर्च में इनकुजीशन अधिकारी नियत करे। जिनको बिशप लोगों से कुछ संबंध न हो और जो पाप के इस पवित्र विभाग के वकीलों के रूप में कार्य करें और उनको काफ़िरों के दंड देनेका अधिकार प्राप्त हो। पोप ने अपना यह प्रयोजन पूरा करने के कारण से फ्रांस के बादशाह फ़लीप द्वितीय तथा धनी सेठों को भी इस कार्य में सहायता देने के लिये लिखा और उनके यत्न और पुरुषार्थ के बदले में पारितोषिक रूपेण इनको प्रत्येक प्रकार की विषय वासनाओं की पूर्ति की आज्ञा दी। फ्रांस देशमें धार्मिक दंड विभाग १२६८ईस्वी से अलबजन्स और उसके रक्षक रेमंडषष्ठ कौन्ट आफ़ टोलुस के विरुद्ध आरम्भ हुआ। और प्रत्येक प्रकार का विरोध शीघ्र दबाया जाकर चर्च को अतिशीघ्र ऐसी शक्ति प्राप्त होगई कि वह अपने विरोधियों से जो उसके वश में आजाएं,

जिस प्रकार चाहे व्यवहार करे। जैसा कि ऐसे भाग्यहीन अलबजन्सों की संख्या नियत करना जो १२०० ईस्वी के पश्चात् अग्नि में जला जलाकर मारे गए कुछ सरल कार्य नहीं है। और संभव नहीं कि जो व्यक्ति उस काल के इतिहास को पढ़ें। उसके मनमें बहुत कठोर प्रकार की घबराहट और दया की भावना उत्पन्न न हो क्योंकि वृतान्तों से यह प्रतीत होता है कि किस प्रकार से सहस्रों मनुष्य भिन्न-२ प्रकार की बहुत निर्दयतापूर्ण यातनाओं के साथ एक ऐसे मत की विजय प्राप्ति के लिये मार डाले गये कि जिसमें उसके संस्थापक ने उदारता दयार्द्रता की प्रेरणा की थी। १२१५ ईस्वी में पोप अनुसैन्ट तृतीय ने दशवीं बार एक कौंसल स्थापित करके भिन्न-२ प्रकार के नवीन-२ दण्ड विधान काफ़िरों के लिये निर्मित किये जिनका विवरण बहुत लम्बा है। पोप अनुसैन्ट के पश्चात होनोरेस तृतीय ने जो इसका स्थानापन्न था इस पद्धति को जारी रखा। और धीरे-२ प्रचारकों और दण्डदाताओं की एक ऐसी संस्था स्थापित हो गई जिसका नाम धार्मिक पवित्रान्वेषक न्यायालय की सहायक संस्था रखा गया।

१२२४ ईस्वी में इन्कुजीशन (उक्तसंस्था) इटली में भी संस्थापित कर दी गई। जब इन समस्त अत्याचरों के होने पर भी एलजियन्स लोगों ने अपने मन्तव्यों को न छोड़ा किन्तु उनको विशेष नगर रोम में भी फ़ैला दिया। तो पोप ने क्रोधित होकर पूर्व से भी अधिक कठोर २ दंड दिये जाने का आदेश दिया। उदाहरणत: जीवित जला दिया जाना अथवा बिशप लोग काफ़िरों पर दयाकी सम्मति देना चाहें तो केवल जिह्वा छेद करा देना जिससे वह आगामो में खुदा के लिये कोई कुफ्र का शब्द न कह सकें।

फ्रांस और इटली के पश्चात् इनकुजीशन एशियन में स्थापित हुआ और इस मुख भूमि में यह पौदा बहुत फूला फला। बादशाह फ्रोनीन्डा तथा महाराणी असाबपला के काल में तो इनक्वी-जीशन अति प्रचलित हो गया। बड़ी शक्ति के साथ चिरकाल तक जारी रह कर अन्तत: १८०८ ईस्वो में समाप्त हुआ। इस देश में ग्रान्ड इनक्वीजीटर जनरल का एक पद और उस के पश्चात् एक कौन्सल आफ सुप्रीम स्थापित की गई जिसकी शाखाएं स्पेन के समस्त मंडलों में फैली हुई थीं। जिनका कार्य दंड विधान का निर्माण करना और इस विभाग की स्थिरता तथा उसको कारवाई को समानता से प्रचलित रहने की देख रेख करना था। यहां तक कि धीरे २ दुःख और कष्ट देने का यह विभाग एक ऐसी कला बन गया कि जिसका उदाहरण संसार के इतिहास में उससे पूर्व कहीं दृष्टिगत नहीं होता। दंड विधान संबंधी आदेशों का एक ग्रन्थ सेवेल में छापा जाकर प्रसिद्ध हुआ। जिसको २८ धाराएं थीं जिनका विवरण अति विस्तारयुक्त है जैसे छठी धारा में यह उल्लेख था कि जो व्यक्ति अपने पाप से तोबा (प्रायश्चित) करे और क्षमा कर दिया जाए। पुनरपि उसको उस दंड के अवशेष के रू। में जो उसके लिये नियत किया गया था इतना दंड अवश्य दिया जाए कि वह किसो प्रकार के प्रतिष्ठित पेशा स्वीकार करने और सोना, चांदी, रेशम तथा मलमल के प्रयोग से वंचित रखा जाए।

पुन: बीसवीं धारा में लिखा था कि यदि किसी व्यक्ति के मरणोपरान्त उसकी पुस्तकों अथवा जीवन पद्धति से यह सिद्ध हुआ कि वह काफिर था तो उसके विरुद्ध कुफ्र और नवीनता लाने सम्बन्धी दोषी होने की व्यवस्था दी जा कर उस की लाश कबर में फेंक दी जाए। और उसकी सम्पूर्ण धन, संपत्ति जब्त की जाकर उसके उत्तराधिकारियों को कुछ न दिया जाए।

पुन: २२ वीं धारा में यह आज्ञा थी कि जो व्यक्ति कुफ्र की व्यवस्था प्राप्त करके दंडित हुआ

www.aryamantavya.in

हो और उसकी सन्तान अल्पायु हो तो उस के जब्त हुए माल का एक थोड़ा सा भाग दान के रूप में इन को दिया जाए। और वह ईस्वी मजहबी शिक्षा के लिये किसी उपयुक्त व्यक्ति को सौंपा जाए।

जो दोष पवित्र इनक्वीजीशन विभाग के समीप दंडनीय थे। वह यह हैं :—

(१) प्रत्येक प्रकार का ईसाई मत में कुफ्र (इसाइ मत से इन्कार) तथा इलहाद (मजहब में नवीन बातें प्रचलित करना)

(२) यहूदियत, (३) इसलाम

(४) अप्राकृति कर्म के दोष और पत्नियों की संख्या संबंधी।

संक्षेपतः पवित्र न्यायालय ऐसे दबदबा वाले और भवायह बनाए कि माता पिता अपनी सन्तान और पति अपनी पत्नियों तथा स्वामी अपने सेवकों को जुबान हिलाए बिना चुप-चाप उस के सुपुर्द कर देते थे। उस का बल अधिकतर भय ही था। जो उस ने लोगों के मनों में उत्पन्न कर दिया था और मनुष्य समाज के हृदय में उस का भय इतना प्रभाव कर गया था कि सेठों और बादशाहों तक उस के नाम से कांपते थे। जितने मनुष्यों को हत्याएं इस मतान्ध निर्दयी मजहबी अदालत ने कराई उनकी यथार्थ संख्या वर्णित करनी सरल नहीं है। जैसा कि केवल स्पेन ही में सीरुलअरनेटी के कथनानुसार तीन लाख चालीस सहस्र मनुष्य इस विभाग से दंडनीय घोषित होकर किसी न किसी प्रकार कष्टों से बर-बाद किये गए। जिन में से लगभग ३२ सहस्र मनुष्य तो जीवित अग्नि में जला कर मारे गए। और यदि इस संख्या में वह समस्त भाग्यहीन मनुष्य सम्मिलित कर दिये जाएं जो मैक्सिको, लीमा, कार्थी जीना, सिसली, सारडीना, ओरन, मालटा, नीलप्स, मेलान और फ्लैंडर्स की मजहबी अदालतों से जबकि इन देशों में स्पेन का राज्य था दण्डनीय हुए थे तो संभवतः यह सिद्ध होगा कि आधे मिलियन से अधिक भाग्यहीन मनुष्य इस पत्थर हृदय पवित्र विभाग से भिन्न प्रकार के दंड प्राप्त कर के संसार से गए।" (देखो इनसाइकलोपीडिया जिल्द १२) (एजाज़त्न्जील पृ० ४७० से ४७५ तक)

यह विवरण तो रौमन कैथुलिक मत के ईसाईयों के जबर और अत्याचार का था। अब प्रोटैस्टेंट सम्प्रदाय का वृत्तान्त जब कि उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की सुनिये।

इतिहासकार हालम महोदय फरमाते हैं कि इस सभ्य सम्प्रदाय (प्रोटैस्टेन्ट मत) के भिन्न २ विभागों और फिरकों से सब से बड़ा पाप जो प्रतिफलित हुआ है। वह यह है कि ईश्वरीय प्रजा पर दीन में बल प्रयोग करते हैं। यह पाप ऐसा है कि प्रत्येक ईमानदार सभ्य जितना अधिक पुस्तकों की सैर करता जाता है। उतना ही उस को उन से घृणा और द्वेष होता जाता है।
(देखो इतिहास इंगलिस्तान राज्य विधान जिल्द १ अ० २) और (एजाज़े तन्जील पृष्ठ ४७५)

इतिहासकार लेकी महोदय फरमाते हैं कि जब कालून ने सरवेस को केवल इस कारण से जीवित जला दिया कि उस के मन्तव्य तसलीस के संबंध में तत्कालीन विद्वानों के विरुद्ध थे तो सम्पूर्ण प्रोटैस्टेन्ट सम्प्रदायों ने कालबिन के इस कार्य की बड़ी प्रशंसा की और मला कटन, बनख़ज़र और फ़ारिल ने इस पाप की प्रशंसा में कबित लिखे और बीजानी ने जो बड़ा विद्वान् था इस कर्म की प्रशंसा में एक बड़ी पुस्तक की रचना की।" (तारीखे मजहबे मअकूल पसंद जिल्द २ पृ० ४९)

पुनः जान डेवनपोर्ट महोदय फरमाते हैं कि "इस काल में ईसाई मत से अधिक कोई वस्तु सर्वथा खराब न थी। वह ईसाईमत की दोनों शाखाएं जो एशिया और अफ्रीका के देशों में फैल गयी थीं।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

उन्होंने भिन्न २ प्रकार की नवीनतायें और बुरे विश्वास स्वीकार कर लिये थे। सदैव परस्पर वादविवाद तथा दोषारोपण में संलग्न रहती थीं। एरियन, नस्टोरियन, सोबलियन, पोटियोचियन मत वालों के झगड़ों से बहुत बाधित थीं। उनके पादरियों के स्वभाव—विषय वासना, पदलोलुपता और अविद्या ने ईसाईमत को बड़ा धब्बा लगाया था। और सब ईसाई लोगों को बहुत कुप्रवृत्तियों का बना दिया था।

अरब के जंगलों में मूर्ख और दुर्बुद्धि राहिब (पुजारी) बहुत थे। जो व्यर्थ विचारों की उधेड़ बुन में मग़ज पच्ची करके अपना समय ख़राब किया करते थे, प्राय: इनके जत्थे के जत्थे नगरों में आकर नगर निवासियों को अपने भ्रमजाल—तलवार के बल पर सिखाया और मनवाया करते थे। (देखो उन की पुस्तक—फार मुहम्मद अपालोजी एण्ड दी कुरान लंडन प्रकाशन ८२ ईस्वी पृष्ठ ३ और इसका उर्दू अनुवाद पृष्ठ ७)

पुन: वही महोदय फरमाते हैं कि :—

"उन्होंने अपने विचार में एक नया पुरातन ओलैम्पस कर लिया था। और उसमें अपने मत के वलियों, शहीदों और फरिश्तों को बसा हुआ समझते थे। जैसा कि मूर्ति पूजक अपने देवताओं से ओलैम्पस को बसा हुआ समझते थे। इस काल में ऐसे इसाई भी थे जो यूसुफ की पत्नी मरियम में ख़ुदाई स्थापित करते थे।"

(देखो जान डेविनपोर्ट महोदय की अपालोजी पृष्ठ ४ सन् ८२ ईस्वी)

पुन: वही विद्वान् फरमाता है :—

"इन अपवित्र, अनुचित और अयोग्य घृणित गिरजाओं और उनकी मूर्तियों, पर्वों तथा उत्सवादि की रीतियों से जिनका आधार श्री गाडफ्री हगन्स महोदय के कथनानुसार उन दूषित बातों पर था, जिन को बुतपरस्ती की गोबर कहना चाहिये और जिसमें न केवल एशिया व अफ्रीका किन्तु यूनान और रोम तथा समस्त अफगानिस्तान के ईसाई डूबे हुए थे और जो श्री हेगन्स के कथनानुसार मजहब के पेशवा प्रत्युत स्वयं रोम के पोप की प्रेरणा से आचरण में आती थीं।"

(देखो अपालोजी और एजाज पृ० १४३)

कलार्क महोदय अपनी पुस्तक डीटेजिया अंगलकर में ईसाई जिहाद करने वालों का वृत्तान्त लिखते हैं कि शुरु से आज तक किसी जाति और किसी देश में ऐश और दुराचार का इतना दबदबा नहीं हुआ—जितना सरकारी मुजाहिदों (जिहाद करने वालों) में हुआ था।"

(देखो पृ० ३२६ व अपालोजी पृ० १३१)

—●—

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

षष्ठ अध्याय

तसलीस और उसका आरंभ

ईसाई मतानुसार खुदा के तीन अक़नूम हैं। और प्रत्येक उनमें से खुदा है। क्योंकि बाप बेटा और रूह, क्लुदुस (पवित्रात्मा) तीनों खुदा होने पर भी एक दूसरे से प्रत्येक प्रकार पृथक् हैं। ईसाई लोग यूं तो इन तीनों को खुदा कहते हैं। किन्तु सांसारिक लज्जा के मारे लोगों के सम्मुख तीन खुदाओं के मानने वाले नहीं।

जब इस सिद्धान्त पर कभी उन से बातचीत होती है तो उत्तर देते हुए उनकी आत्मा कठोर प्रकार के पेचो ताब खाती है।

तसलीसफित्तौहीद, तौहीद—फित्तसलीस=एक तीन हैं और तीन एक हैं। न सुलझने योग्य विचित्र समस्या उसके सम्मुख उपस्थित होती है। जिसको वह किसी प्रकार प्रगट नहीं कर सकते। जब स्वयं ईसाई पादरी और बिशप महोदय इसके समझने से खाली हैं, तो हम क्या कहें।

हमारे सहस्रों दयावान् पादरी महोदय यह जानते हैं कि तसलीस का मानना बाईबल का मन्तव्य है। इञ्जील से निकला है। मसीह इसका निर्माता है। अतः वह इसको ईमान की शोभा जान बाधित होकर मान रहे हैं और हर बार बुद्धिमानों के सम्मुख बुद्धिमत्ता की दृष्टि से उन्हें बार बार लज्जित होना पड़ता है, तो भी इससे इन्कार नहीं करते।

इसलिए हम बहुत नम्रता पूर्ण श्रेष्ठ पादरी महोदयों की सेवा में सकरबद्ध निवेदन करके जतलाना चाहते है कि यह तसलीस का सिद्धान्त आप की पवित्र बाईबल में कहाँ से आया? कब और किस साधन से प्रचलित हुआ। आशा है कि हमारे निवेदन को आप ध्यान से अध्ययन करेंगे।

जान डेवी टोरट महोदय लिखते हैं कि न्यूटन महोदय और गियन महोदय ने बड़ी रीसर्च और यत्न से सिद्ध किया है कि जिन इञ्जील की आयतों से तसलीस का मन्तव्य सिद्ध किया है।

(योहना १।२)

वह आयतें बनावटी हैं और कामल्ट महोदय भी यही कहते हैं कि तसलीस के बारे में यह आयत किसी इञ्जील की पुरातन पुस्तक में नहीं। मसीह ने तो एक ही खुदा के विश्वास की आज्ञा दी थी। किन्तु पोलोस और योहन्ना ने जो इफलातून के हीरों में से था। मसीह का मजहब खराब कर दिया। और इसमें से सर्वोच्च सत्ता ईश्वरीय एकता का मन्तव्य निकाल कर (उसके स्थान पर) इफलातून का घड़ा हुआ निरर्थक कुछ समझ न आ सकने वाला तसलीसी सिद्धान्त प्रविष्ट किया। (पृ० ९३)

एक योग्य प्रसिद्ध इतिहासकार फरमाता है कि मसीह से तीन सौ साठ वर्ष पूर्व अफलातून ने इस कठिनायी से (कि एक शुद्ध) पवित्र खुदा से किस प्रकार यह सब प्रकार की सृष्टि उत्पन्न हुई। निकलने

Pandit Lekhram Vedic Mission

के लिए उसने कल्पना की कि परमेश्वर की सत्ता में तीन भाग हैं। एक फस्ट काज=आदि कारण परमेश्वर दूसरी बुद्धि अथवा लोगास, तृतीय संसार की रूह=आत्मा। इनको अफलातून की फलासफी में तीन देवता वर्णित किया था और यह तीनों एक विचित्र रूप से उत्पत्ति (जजीशन) से मिले हुए थे। लोगास को विशेषत: अटल बाप का (जो सृष्टि का रचियता और गवर्नर अर्थात् अधिकारी है) बेटा वर्णित किया था। इसको अफलातून ने अति चातुर्य से अदा किया था। और यही उसके स्कूल का रहस्य था। जिसको तीस वर्षों के परिश्रम में विद्यार्थी समझते थे।

(देखो कडोरथ की अन्तलकचवाली सिस्टम पृ० ५६८)

ऐडवर्ड गिबन फरमाते हैं कि :—

यह अफलातून की फलासफी सिकन्दर की विजय यात्राओं के कारण से मसीह से तीन सौ वर्ष पूर्व एशिया और मिश्र में फैल चुकी थी। सिकन्दरिया के स्कूल में यहूदी इसकी शिक्षा प्राप्त करते थे। लोगास का शब्द यहूदियों ने मूसा के जहोवा से वर्णित कर दिया और खुदा के बेटे को प्रगट रूप से संसार में उन कार्यों के लिये प्रविष्ट किया जो खुदा के गुण और स्वभाव के विरुद्ध प्रतीत होते थे। कहते हैं कि यह मजहबी शिक्षा अफलातून की यूनानी फ़लासफी की भान्ति (बेपरवाही) से समझी जाती यदि उसके अन्तिम शिष्य योहना की लेखनी से पुष्ट होती। जो ९७ ईस्वी में पुष्ट होकर नरवा बादशाह के राज्य में पूर्ण हुई। जिससे यह विचित्र रहस्य संसार पर प्रगट हुआ कि लोगास ने जो खुदा के साथ आरंभ से था और जो खुदा था—जिसने समस्त विश्व बनाया था और जिसके लिये समस्त विश्व बना था। उसने नासरत के जीसुस अर्थात् मसीह नासरी के शरीर में उतार लिया जो कुंवारी के उदर से उत्पन्न हुआ और जो सलीब पर मारा गया।

अबून्या वाले मसीह को रसूल तो मानते थे किन्तु योहना की इञ्जील के अनुसार मसीह की यह प्रशंसाएं नहीं मानते थे कि वह खुदा था या खुदा के साथ था।

दूसरे नास्टक्स लोग मसीह को मनुष्य और ईश्वर दोनों मानते थे क्योंकि वह भगवान् का शरीरी होना मानते थे। अभी मसीह का रक्त कालवेरी पर्वत पर सुलग रहा था अर्थात् उसमें से धुआं उठ रहा था कि नास्टक्स लोगों ने एक और कुफ्र और बेहूदगी का विचार उत्पन्न किया कि कुंवारी के पेट से निकलने के स्थान पर मसीह पूरे यौवन में जार्डन नदी के तट पर नाजुल (प्रगट) हुआ था और उसके शिष्यों तथा विरोधियों को धोखा हुआ और ऐसा ही पांबलट के मंत्रियों को धोखा हुआ। क्योंकि सलीब के ऊपर एक बायव्य (हवाई) रूप मसलूब हुआ था। (अर्थात् एक कल्पित रूप को फांसी दी गई थी—अनुवादक)

अत: इसी योहन्ना रसूल के लिखने से फ़लातून की फ़लासफी ईसाईयों में मसीह की दूसरी और तीसरी शती में प्रचलित हुई। क्योंकि इसी योहन्ना ने पहिले ही से इलहाम के विचित्र रहस्यों का मुकाशफ़ा (इलहामसंबंधी स्वप्नों) से ज्ञात कर लिया था, (अर्थात् यह मुकाशफ़ा भी इसी योहन्ना की एक चाल थी) अफलातून के प्रतिष्ठित नाम की ईसाई लोग तो प्रतिष्ठा से स्मरण करते थे और लोग इसकी शिकायत करते तथा इसे बदनाम करते कि इसने सत्यता और भूल वालों का समर्थन किया है।

तसलीस मन्तव्य पर सिकंदरिया के दार्शनिकों और ईसाईयों में वाद विवाद होता था। गुरू और

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

शिष्यों की भूख शब्दों की भरमार से मिट जाती थी किन्तु सबसे बड़ा बुद्धिमान् ईसाई और मज़हबी ज्ञान का ज्ञाता अथैनोसीएस स्वयं स्पष्ट २ सत्य का हृदय से कहता है कि जब कभी उस ने अपनी बुद्धि लोगास की उलूहियत सोचने पर दौड़ायी तो उसके सब यत्न व्यर्थ गये क्योंकि उसने जितना अधिक सोचा उतना ही न्यून समझा और जितना उसने अधिक लिखा उतना ही वह अपने विचारों को न्यून प्रकाशित कर सका।

प्रथम यह लोगास का रहस्य दार्शनिकों में रहा किन्तु जब मसीहाई ईमान की आशा और भक्ति का प्रयोजन बन गया, तो रोम के राज्य के प्रत्येक प्रान्त में सर्वसाधारण इस को अधिकता स्वीकार करने लगे। स्त्री पुरुष जो कि इसके संबंध में सर्वथा अयोग्य हैं। वह भी इस पर बात चीत करने लगे।

ऐसे समय के संबंध में ट्रैवलिन गर्व से कहता है कि—

"ईसाई कारीगर सरलता से ऐसे प्रश्नों का उत्तर दे सकता था। जिससे बड़े बुद्धिमान यूनानी घबरा जाते थे।

जब ऐसा हो गया, अर्थात् तसलीस सर्व साधारण में फैल गई और मज़हबोजोश भी साथ हुआ। तो ईसाई लोग इसको यूनानियों के देव माला अर्थात् मिथ्यालोजी के सुधार में वर्णन करने लगे। इसके अस्सी वर्ष पश्चात् बथूनिया के पादरी लोगों ने पलनी की कचहरी में स्वीकार किया कि वह इस अर्थात् मसीह को खुदा के सदृश याद करते हैं।

अन्तोगत्वा जब इस कठिनाई पर झगड़े, मनादी और वाद विवाद होने लगे तो एक प्रसिद्ध ईसाई विद्वान् ईरियस ने इससे इन्कार किया। इसके बहुत कट्टर शत्रु भी इस की विद्या और सत्यता को स्वीकार करते थे और वह ऐसा उपराम था कि उसने पादरी का सिंहासन लेने से भी इन्कार कर दिया था। ईरियम के शिष्यों में से उस समय निम्नलिखित व्यक्ति धार्मिक पदों पर नियुक्त थे:—

बिशप, परस वेटर, डेंकन, कनवारिया, एशिया के बहुत से पादरी हैं। यह सब उसके एक विचार के थे। इनके अतिरिक्त सबसे बढ़े विद्वान् पादरी बूसीबीऐस ने इसकी सहायता पर लेखनी उठाई। जब इस प्रकार ज़ोर शोर से शास्त्रार्थ होने लगे। तब बादशाह और लोगों का ध्यान इस मज़हबी वाद-विवाद पर खिचा और छे वर्ष तक खूब झगड़े होते रहे। अन्ततः इसके पश्चात् ३१८ से ३२५ की नीस नगर की साधारण कौन्सल के अन्तिम निश्चित निर्णय पर यह विषय छोड़ दिया गया और कौन्सल (सभा) विशेषतः इसी निर्णय के लिए बुलाई गई। इस समय तसलीस संबंध में निम्न विषय विवादास्पद थे। जिनमें सब परस्पर एक दूसरे को कुफ़ की व्यवस्था देते थे। क्योंकि ग़लती और कुफ़ से कोई रहित न था।

प्रथम सम्मति यह थी जिसको ईरियस और उसके अनुगामी मानते थे कि लोगास आज्ञापालक तो है किन्तु स्वयं उत्पन्न हुआ है। पिता की इच्छा अभाव से उत्पन्न हुई। यद्यपि पुत्र के लिए समस्त विश्व बनाया गया और समस्त सृष्टि से पूर्व भी वह उत्पन्न हुआ और जिसकी आयु के सम्मुख बहुत बड़े से बड़ा ज्योतिष का युग एक नष्ट होने वाले क्षण के समतल भी नहीं है तो भी उसका समय असीम नहीं है और उसका सौन्दर्य उत्पत्ति से कुछ समय पूर्व व्यतीत हो चुका है। अर्थात् उस जन्मे हुये इकलौते

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

लड़के पर सर्वशक्तिमान पिता ने अपनी बहुत आत्मा डालदी और अपनी तेजस्विता की चमक से उसको तेजस्वी बना दिया। वह तिरोहित पूर्णता का प्रकाशित रूप था, और उसने स्वयं पांव के नीचे असीम दूरी पर बहुत बड़े चमकीले फरिश्तों के तख्त देखे तो वह अकसी प्रकाश से चमकता था और रूमी बादशाहों के सदृश जो कि अगरस अथवा सीरज़ की पदवी से पुकारे जाते थे। वह बाप और बादशाह की इच्छानुसार संसार का राज्य करता है।

दूसरी सम्मति यह थी कि लोगास स्वाभाविक और दूसरों में न जाने वाली वैसी पूर्णताएं रखता है जैसे कि फ़लासफ़ी और धर्म की दृष्टि से खुदा में हैं। तीन भिन्न २ और असीम आत्माएं खुदा के स्वरूप में समान रूप में बराबर और असीम हैं और उनमें से कोई आगे पीछे नहीं हैं। इस सिद्धान्त के मानने वाले और सहायक जिस मन्तक में तीन भिन्न २ खुदा प्रतीत होते थे मिनट काजकी एकत्व स्थिर रखने का यत्न करते थे जो सृष्टि प्रबंध में बहुत स्पष्ट है।

तीसरा सिद्धान्त यह था कि तीन खुदा अपनी सत्ता की आवश्यकता से पूर्णता के रूप में समस्त ईश्वरीय गुणों से विशिष्ट हैं। जिनका समय सीमा रहित है। परस्पर एक दूसरे के मित्र हैं। समस्त सृष्टि में विद्यमान हैं। यह तीनों ही मनुष्यों को एक प्रतीत होते हैं जो संसार के प्रबंध में भिन्न रूपों में प्रगट हो सकता है।

इस मन्तव्यानुसार वास्तविक तसलीस तीन नामों और तीन गुणों को है जो सोचने वाले के मन में रहती थी। लोगास कोई विशेष व्यक्ति नहीं किन्तु एक विशेषण है और बेटे का शब्द उस पर अलकार रूप स लगाते हैं और वह बुद्धि है जो खुदा के साथ है जिससे पद्धार्थ निर्मित हुये हैं। लोगास का अवतार खुदा के ज्ञान का इलहाम है।

जिससे मसीह मनुष्य की आत्मा भरी थी और इसके कार्यों की प्रेरणा होती थी। यह तीन सम्मतियां अभियोग रूप में उपस्थित करने के योग्य थीं।

ईयरनैस को पूर्ण विश्वास था कि यदि अनीस की सभा के पादरी अपनी धार्मिकता और पक्षपात रहित होकर विचार करते तो उनका मन्तव्य स्वीकृत होता किन्तु अन्ततोगत्वा कौन्सल की सम्मति से पिता और पुत्र दोनों की एक ही वस्तु स्थिति मानी गई। जिसको अब प्रोटैस्टैन्ट ग्रीक, लेटिन और नेटल ईसाई अपने धर्म का वास्तविक सिद्धान्त मानते हैं।

कौन्सल (सभा) होने के पश्चात् जो पिता पुत्र के सम्बन्ध में कौन्सल ने होमोशन शब्द लिखा। इस शब्द को भिन्न-भिन्न सम्मति के अनुसार अपने २ सिद्धांतों के स्थिर रखने के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ किये।

इसी शब्द को दूसरों ने होमो आईओशन कर लिया था। संक्षेपतः भिन्न प्रकार के फल (उच्चारण) बना कर इस के भिन्न २ अर्थ तराशे। किन्तु दो प्रसिद्ध पादरियों ने (जो उस समय चर्च के स्तंभ माने जाते थे) कौन्सल के अर्थ स्वीकार किये अर्थात् वह एक ही सत्ता है।

इस परस्पर विरोध के दिनों में अन्य १८ सम्प्रदाय खड़े हो गये। जो समस्त ईरियस के शत्रु थे। जैसा कि समय की अवस्था को सैन्ट ए लसरो महोदय जो उसी चतुर्थ शती में युवीकर्स संप्रदाय के विशप थे इन शब्दों से वर्णन करते हैं :—

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

"जहाँ कहीं मैं गया। मैं ने बहुत न्यून पादरी पाए। जिन के मध्य सच्चा ख़ुदा का ज्ञान था। यह बात बहुत शोचनीय और भयावह है कि आज कल मनुष्यों के मध्य इतने सम्प्रदाय हैं जितनी कि उन की सम्मतियां हैं। और इतने उन के विश्वास हैं जितनी कि उन की इच्छायें हैं। और इतने इन में कुफ्र हैं जितने कि उन में दोष हैं। क्योंकि मज़हबों को अकारण और इच्छा के बिना लोग स्वभाव से घड़ते जाते हैं। और इसी प्रकार उन का वर्णन कर देते हैं। होमोशन का शब्द कभी खंडित और कभी स्वीकार किया जाता है। और निरन्तर उत्सवों में उस पर झगड़े होते हैं। आज कल के युग में अभागे लोगों की बहस का यह एक विषय है कि पिता और पुत्र में आंशिक समानता है अथवा पूर्णतः। प्रत्येक वर्ष प्रत्युत प्रत्येक मास हम इन भेदों का वर्णन करने के लिए नूतन सम्प्रदाय बनाते हैं। जो कुछ हम ने लिखा, हम इससे पछताते हैं। जो लोग पछताते हैं। हम कभी उनका अनुमोदन करते हैं—पुनः हम उन्हीं लोगों पर कुफ्र की घोषणा करते हैं। जिन को पूर्व हमने बचाया था। कभी हम दूसरों के मन्तव्यों को अपने मध्य आते समय ख़राब कहते हैं। कभी अपने विश्वासों को दूसरों के मध्य पा कर बुरा कहते हैं। एक दूसरे को खंड २ कर रहे हैं। और एक दूसरे की बरबादी का कारण बन रहे हैं।

(देखो दार्शनिक लाक महोदय की कामन प्लेस बुक फसल ३० पृ० ४७०)

और

(डकलायन ऐंड फ़ाल पृ० ५११)

और

(अपालोजी पृष्ठ १९७)

इसी झगड़े के पश्चात् सलूमिया की सभा हुई किन्तु उसमें भी कोई हृदय ग्राह्य निर्णय नहीं हुआ। उस समय ईस्वी मन्तव्यों पर ऐसा अन्धकार छाया था कि पादरी हलारी स्वयं ३० वर्ष की कौन्सल के पश्चात् यह नहीं जानता था कि मेरा मन्तव्य क्या है?

जब यह चर्चा पश्चिम में फैली। तो ३६० ईस्वी में एक और सभा रेणी की हुई। इस में नीस की कौन्सल से अधिक पादरी उपस्थित थे अर्थात् चार सौ विशप से अधिक इटली, अफ्रीका, स्पेन, गाल (फ्रांस) ब्रटेन—अलीरी के एकत्र हुए थे। इस सभा में ८० व्यक्ति ईरीयन की सम्मति के थे। किन्तु ईरियस के नाम से घृणा करते थे। और इस कौन्सल के उठने से पूर्व ही ऐसे मन्तव्य पर जो सन्दिग्ध था हस्ताक्षर हो गए। किन्तु पीछे इस सभा की भी भूल ज्ञात हो कर वही नीस की कौन्सल के निर्णय को स्वीकार किया गया। क्यों कि इस में ईरियस के कई शब्द प्रविष्ट हो गए थे।

अन्ततः जब यह झगड़ा बहुत अधिक बढ़ गया तो फान्सटन्टेन बादशाह अलेगज़ण्डर और अप्रीस को पत्र लिखा। जिस में उस ने शोक प्रगट किया कि एक ख़ुदा, एक दीन मानने पर भी ईसाई लोग ऐसी छोटी सी बात पर एक दूसरे के विरुद्ध झगड़े कर रहे हैं और यूनानी दार्शनिकों का उदाहरण दिया कि तुम भी उन्हीं की भान्ति रहा करो। युक्ति-प्रयुक्ति के समय मित्रवत् वाद विवाद करो। यदि उस समय बादशाह यत्न करता तो शान्ति हो जाती। किन्तु उस के (मूर्ति के) अपमान से उस को कल्पित भय हो गया। जिस ने परस्पर मेल की आशा को धूमिल कर दिया क्योंकि उस ने तीन सौ विशप अपने मकान में एकत्र किये।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जहां बादशाह होने के कारण बहुत जोर शोर से बहस हुई और स्वयं बादशाह भी वाद विवाद में सम्मिलत हुआ। किन्तु ओसी ऐस जोकि नीस की कौन्सल का प्रधान था। इस की प्रेरणा (अर्थात् इस बात के कहने) से (कि यू सी. बी. एस. ने जिस के पास ईरियस काफ़िर था, उस ने बादशाह के शत्रु को सहायता दी थी) बादशाह ने नीस की कौन्सल के निर्णय को स्वीकार किया और आज्ञा दी कि जो लोग कौन्सल के खुदाई निर्णय को रोकेंगे अथवा न मानेंगे, वह निर्वासित किये जायेंगे।

बादशाह की इस धमकी पर प्रथम जो सत्ता विरोधी थ । पुनः दौरा के अन्ततः तीन मास प्रतीक्षा के पश्चात् उन को यू. सी. बी. ऐस निर्वासित किया गया । समस्त ईयरनीस सम्प्रदायों का विधानतः अपमान किया गया। इन को पोरफेरीन कहा गया तथा उन की पुस्तकें जलाई गईं और उन के वध का आदेश हुआ जिन के पास उन को पुस्तकें निकलीं।" संक्षिप्त देखो— (गिवि हिस्ट्री जिल्द १ अध्याय २१ पृष्ठ ५७१ से ५८७ प्रकाशित वंडास, लन्डन)

जान डेवन्पोर्ट महोदय लिखते हैं कि इस ईसाई सम्प्रदाय को मारियानीडस कहते हैं । इस सम्प्रदाय के लोगों ने चाहा था कि सब मन्तव्यों के साथ तसलीस सफ़ारे में प्रविष्ट करें अर्थात् पवित्र-आत्मा के स्थान पर हज़रत मरियम को तसलीस के तीन अंगों में प्रविष्ट करें।

(पृष्ठ ८ हिजरी १२२७)

अब हम इस तसलीस के मन्तव्य पर कुछ प्रतिष्ठित, माननीय पादरी महोदयों की सम्मति में श्वेत पत्र की नक़ल बुद्धिमानों की सेवा में उपस्थित करते हैं।

(१) पादरी डी० डब्ल्यू तामसन महोदय तसलीस के समाधान से बाधित हो कर लिखते हैं कि जनता की युक्ति प्रयुक्ति और बौद्धिक तर्क इस में नहीं चल सकते, इस की सिद्धि केवल खुदाई कलाम (इञ्जील) पर आश्रित है। (तशरीहुत्त सलीस पृ० २२)

(२) अति प्रसिद्ध पादरी फ़ान्डर महोदय तसलीसो मन्तव्य की व्याख्या करते हुये फ़रमाते हैं कि "मनुष्य बुद्धि अल्प है। अतः ईश्वरीय सत्ता और उस के मसीही तसलीस जैसे भेद को वर्क नहा कर सकती। (मिफ़ताहुल असरार अ० १ पृ० २९ पंक्ति १६)

पुनः लिखते हैं कि :—

"तसलीस उन भेदों और उन मन्तव्यों में से है जिन में बुद्धि को मार्ग नहीं। शब्द प्रमाण पर उस का स्वीकरण उचित है।" (मिफ़ताहुल् असरार पृ० २९ पंक्ति २)

पुनः फ़रमाते हैं कि :—

"हम इन भेदों (तसलीस) के सिद्ध करने के लिए मान व बुद्धि और इस संसार को विद्याओं से नहीं किन्तु केवल यसूअ् मसीह की वाणी और इञ्जील व तौरात की खुली आयतों से प्रमाण लाएंगे। मनुष्य की दूषित बुद्धि में कदापि इतनी शक्ति नहीं।" (अध्याय १ पृ० २४ पंक्ति १, २)

पुनः फ़रमाते है कि :—

"इन शिक्षाओं का शास्त्रार्थ न बौद्धिक युक्तियों से किन्तु केवल खुदाई कलाम की आयतों से हो सकता है।"

(मिफ़ताहुल् असरार पृ०५)

www.aryamantavya.in

(३) विद्वान् पादरी सफ़दर अली महोदय फ़रमाते हैं कि :—

"तसलीस का मन्तव्य बहुत बड़े तेजस्वी, विशिष्ट, परोक्ष ईश्वरीय सत्ता के स्वरूप के भेदों में से है। बौद्धिक युक्तियों से उस का प्रमाणाप्रमाण दोनों असम्भव हैं।

(न्याज़नामा पृ० १० सन् ७८ ईस्वी)

पुनः लिखते हैं कि :—

"यदि पवित्र पुस्तक सर्वोच्च खुदा की सत्य वाणी न होती तो केवल तसलीस का मन्तव्य क्या प्रत्युत उस की समस्त शिक्षा विश्वसनीय और मानने के योग्य न होती। (पृ० ९)

पुनः फरमाते हैं :—

"इसी तसलीस के सम्बन्ध में यदि कोई कहे कि यह बात सर्वथा मेरी समझ में नहीं आती है। तो इस बात पर इतना निवेदन पर्याप्त है कि सत्य है। आश्चर्य का स्थान नहीं।

(न्याज़नामा पृ० ८ लखनऊ ७८ ईस्वी)

(४) प्रसिद्ध पादरी अमादुद्दीन लाहज़ फरमाते हैं :—

"पवित्र तसलीस पर बौद्धिक युक्ति की मांग करना बुद्धि के विरुद्ध है। जैसे परमेश्वर की एक सत्ता के संबंध में (युक्तिप्रयुक्ति बुद्धि विरुद्ध है)

यहूद के अतिरिक्त जो अन्य लोग हैं। उन को तसलीस पर इस प्रकार मनवा सकते हैं कि प्रथमतः इलहाम की आवश्यकता, द्वितीयतः पवित्र पुस्तकों में उस का आधारित होना बौद्धिक युक्तियों से उन पर सिद्ध करेंगे। और जब उन्होंने उस को स्वीकार किया तो इलहाम के अधीनस्थ होने से उनको भी तसलीस स्वीकार करनी पड़ेगी।"

(देखो उनकी पुस्तक नगमएतंबूरी लाहौर प्रथमवार सन ७४ पृ० ७४)

(५) एक अन्य पादरी महोदय फरमाते हैं कि "यदि कोई इस तसलीस पर आक्षेप करे तो चाहिये कि उससे पृथक् रहे। क्योंकि खुदा की पूर्ण पहचान के लिये हमारी बुद्धि सदोष है। यहां हमारे होश भी परेशान हैं। संक्षेपतः इसकी पहचान असंभव है। और इस को जानना भ्रममात्र है। हमारे लिये यही पर्याप्त है कि जो जो कुछ खुदा ने फरमाया है अर्थात् अपनी आत्मा के सम्बन्ध में सुनाया है। उस पर आक्षेप न करें। कुछ दोष न दें। उसको सत्य समझें और विश्वास पूर्वक मानें।"

(फ़ार क़लीत पृ० ७,८)

चुटकला

तीन निर्धन व्यक्ति एक ईसाई के पास जाकर नसरानी (मसीही) हुए और उनके सिद्धान्त तोते की भान्ति रट लिये। अकस्मान् एक दिन उस ईसाई के यहां एक मित्र मिलने आया।

कल्याण कुशल के पश्चात् पादरी जी से पूछा कि यह तीनों व्यक्ति कौन हैं और कहां से आए हैं? पादरी जी ने कहा कि यह तीनों नूतन नसरानी हुए हैं। और अब सिद्धान्तों के शिक्षण में हृदय से संलग्न हैं। इस मित्र ने उन से पूछा कि तसलीस के मन्तव्य का क्या स्वरूप है? और तुम्हारा विश्वास इस मन्तव्य पर क्या है? उन में से एक ने उत्तर दिया कि मेरे उस्ताद ने ऐसा सिखाया है कि तीन खुदा हैं। एक आसमान पर है। जिस को हम मसीह का बाप मानते हैं। और दूसरा वह जो मरियम

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

के उदर से उत्पन्न हुआ। जिस का नाम यसूअ है। और तीसरा वह जो कबूतर की भान्ति दूसरे खुदा अर्थात् मसीह के सिर पर उतरा। इस पर उस के उस्ताद (शिक्षक) जी ने क्रोधित हो कर उस को धकेल दिया कि यह भोला भाला और कम समझ है। इस की समझ पर पत्थर पड़ें। देर से कुबुद्धि को बतलाता हूं और मग़ज़ खपाता हूं। आज तक एक मन्तव्य तसलीस का न समझा।

दूसरे को पूछा गया तो कहने लगा कि मेरे शिक्षक ने मुझे यूं सिखाया कि पहिले तीन खुदा थे कि अब उनमें से दो जीवित हैं क्योंकि एक बेचारा सूली पर चढ़ा कर मारा गया। शिक्षक जी उस पर भी दुगने क्रोधित हुए। आंखें लाल पीली कर के कहा कि तेरा सत्यानाश जाए। कितनी देर से तुझे समझाता हूं। खोल २ के बताता हूं कि यह मसलस (तिकोन) रूप तेरी समझ से बाहिर है।

अब अवशिष्ट तीसरे सज्जन शेष पोल खोलने लगे। फरमाया कि मुझे यही शिक्षा दी गई है और इस को पत्थर की लकीर की भान्ति याद कर रखा है। इस मन्तव्य से मेरा मन बहुत प्रसन्न है। वास्तविकता यह है कि पूर्वकाल में तीन खुदा थे और तीनों एक ही थे और परस्पर पूर्ण संगठित थे। सो एक इन से मारा गया। अब तीनों संघठन की दृष्टि से फना (नष्ट) हो गए। न ऊजोबिल्ला-हेमिन् जालिका।+

वस्तुस्थिति यह है कि यह ईसाईयत का मन्तव्य ऐसा ज्ञान, समझ और बुद्धि के विरुद्ध है। कि खुदा की पनाह (ईश्वर रक्षा करे) आज तो अन्य एक ओर, स्वयं ईसाईयों की समझ में नहीं आया।

एक सुयोग्य ईसाई विद्वान् जब इस के समझने से बाधित होता तो यह छन्द पढ़ कर अपने मन को सन्तोष दिया करता था :—

×है तसलीसे इलाही< अकले× इनसानी से%गो बाहिर।
×खिरद को छोड़ कर ईमान लाए जिस का+ जी चाहे॥

—०—

+इस से अल्ला के साथ पनाह मांगता हूं। (अनुवादक)

×(१) खुदा सम्बन्धी (२) बुद्धि (३) मनुष्य की (४) चाहे (५) बुद्धि (६) मन

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

सप्तम अध्याय

ईसाई सम्प्रदायों और बाईबल का अन्वेषण

क्योंकि अपरिचित लोग नहीं जानते कि ईसाई मत की आन्तरिक अवस्था क्या है ? और ईसाई बनाने से पूर्व स्वयं ईसाई वह पुस्तकें जो उन की वास्तविकता प्रगट करने के लिए उच्चबुद्धि लेखकों ने बनाई हैं—नहीं दिखलाते, सदैव तिरोहित रखते हैं जिस से किसी प्रकार नवीन शिकार पक्षीजाल से न निकल जाए। और यह भी देखा गया है कि जब किसी ईसाई ने न्यायपूर्वक ईसाई मत की पुस्तकों को देखा। झट ईसाई शिक्षा से किनारा कर लिया अफ्रीका के प्रसिद्धबिशप कोलनज़ो साहब बहादुर का वृत्त पादरियों से छिपा नहीं। फ्रांस के लोग और अफ्रीका के विद्वान् भी बहुत कुछ ईसाइयत से तंग आ रहे हैं। बाईबली खुदा की करतूतों से यहां तक शिक्षित लोग तंग आ गये हैं। कि वह उस का नाम पुस्तकों से निकालना चाहते हैं।

स्पष्ट हो कि ईसाई मजहब के बड़े २ सम्प्रदायों का वृत्तान्त जो हमें अधिक अन्वेषण से ज्ञात हुआ है। वह इस प्रकार है (१) एबोनिया (२) मारसियोनी (३) मानी कनीर (४) रौमन कैथोलिक (५) योनीटेरियन (६) यूटक्कैण (७) मलीकान्या (८) प्रोटैस्टेन्ट।

संख्या (१) एबोनिया संप्रदाय

इतिहास में लिखा है कि यह सम्प्रदाय जो प्रथम शती में हुआ था। यह विश्वास रखता था कि हजरत ईसा केवल एक मनुष्य थे। हजरत मरियम और यूसुफ बज़ार से अन्य मनुष्यों की भान्ति उत्पन्न हुए और मूसा की शरीयत को मानना केवल यहूदियों पर नहीं किन्तु अन्य लोगों पर भी समुचित है। उस की आज्ञाओं पर आचरण करना मोक्ष के लिये आवश्यक है और जो पौलुस उस पर आचरण करना आवश्यक नहीं कहता किन्तु बड़े बल के साथ उस का विरोध करता है, वह इसको बहुत बुरा कहते थे और उसके लेखों के सम्बन्ध में बड़ा अपमान करते थे। (देखो मौशीम का इतिहास जिल्द १ पृ० ७०)

लार्डनर इस बात के समर्थन में इस सम्प्रदाय के सम्बन्ध में फरमाते हैं कि "इस सम्प्रदाय के दोनों भाग पौलुस की पत्तियों का खंडन करते तथा पौलुस को अच्छा व्यक्ति नहीं समझते थे।"

(देखो उन का भाष्य जिल्द ७ पृ० ३८३)

यूसीबीस कहता है कि यह सम्प्रदाय पौलुस की पत्रियों का खंडन करता और उस को बहिष्कृत बतलाता था। (देखो लार्डनर भाष्य पृ० ३८३)

बेल महोदय फरमाते हैं कि—

"यह सम्प्रदाय ओल्डटैस्टामैंट की सारी पवित्र पुस्तकों में केवल तौरेत को ही मानता और दाऊद,

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

सुलैमान, हरनिया हिज़कील के नाम से घृणा करता था। और न्यूटैस्टामेंट से उन के पास केवल मती की इञ्जील थी और उस में भी उन्होंने बहुत स्थानों को नहीं माना था विशेषतः पहिले दो अध्याय निकाल दिये थे। (देखो किताबुल् असनाद जिल्द ६ पृ० ३८३)

संख्या २ मारसियोनी संप्रदाय

इस सम्प्रदाय के सम्बन्ध में बैल महोदय फरमाते हैं कि—

"उनका विश्वास है कि दो खुदा हैं। एक पुण्य का उत्पादक, दूसरा पाप का उत्पादक है। और उनका विश्वास है कि ओल्डटैस्टामेंट की तौरेत और सब पुस्तकें दूसरे खुदा की दी हुई हैं और यह न्यूटैस्टामेंट के भी विरोधी हैं। और ईसा मृत्यु के पश्चात् नरक में उतरा और वहां से कावील और सदूम के लोगों को मुक्ति दी। क्योंकि वह ईसा के सम्मुख उपस्थित हुए और उन्होंने अपने २ जीवन में पाप के उत्पादक खुदा की उपासना न की थी। तथा हाबीलनूह, इब्राहीम और पूर्व के सारे पैगम्बरों की आत्माओं को नरक में रहने दिया। क्योंकि प्रथम सम्प्रदाय के विरुद्ध किया था। और उनका विश्वास है कि सृष्टि का उत्पादक वही खुदा नहीं है जिस ने हजरत ईसा को भेजा है और इसीलिये वह ओल्ड टैस्टामेंट को इलहामी नहीं मानता। और न्यूटैस्टामेंट में से इञ्जील लूका को मानता था। तथा पौलुस की पत्रियों से दस पत्रियां मानता था किन्तु उनमें भी जो उनके विचार के विरुद्ध था। उनका खंडन कर देता था।

लार्डर महोदय फरमाते हैं कि—

"मार सियोनी सम्प्रदाय ने न्यूटैस्टामेंट की पुस्तकों को सर्वथा पृथक् कर दिया। यह सम्प्रदाय कहता था कि यह पुस्तकें उसकी भेजी हुई हैं कि जो सभी पापों और बुराईयों का उत्पादक है। और यह भी कहते थे कि तौरेत तथा इञ्जील एक व्यक्ति को भेजी हुई नहीं इसलिये कि बहुत सी बातें पहिली में दूसरी की विरोधी हैं और कहते थे कि पहिली में वर्णन है कि सृष्टि का उत्पादक अज्ञानी है क्योंकि आदम को पुकारा तू कहां है! और इसी प्रकार रंग बदलने वाला है कि विरोधी आदेश देता है और संसार के उत्पन्न करने तथा साऊल को बादशाह बनाने से पछताता है।"

(देखो लार्ड महोदय की पुस्तक जिल्द ८ पृष्ठ ४८४)

पुनः लिखा है कि यह संप्रदाय ओल्ड टैस्टामेंट से इतनी घृणा करता था कि न्यू टैस्टामेंट की उन पुस्तकों से जिसको वह मानता था उन सब उपदेशों को जिन में तौरेत अथवा अन्य पैगम्बरों का वर्णन था अथवा उनमें उन पुस्तकों से प्रमाण लिया गया था। उनमें हजरत ईसा के आने की भविष्य वाणी थी अथवा उनमें पिता को संसार का उत्पादक कहा था निकाल कर बहुत से वाक्य अपनी ओर से लगा दिये और कहते थे कि यहूदियों का खुदा अन्य है और ईसा का बाप अन्य और वह तौरेत के आदेशों के मिटाने को आया था क्योंकि प्रार्थनाएं इञ्जील की विरोधी थीं। (देखो लार्ड महोदय की पुस्तक जिल्द ८ पृ० ४८६) अतः इसी जिल्द में लिखा है कि मारसियोनी न्यूटैस्टामेंट से सब ग्यारह पुस्तकें मानता था और इन ग्यारह को सदोष तथा परिवर्तित की हुई और इनके दो विभाग करता था। एक इञ्जील। द्वितीय पत्रियां। इंजील से केवल इञ्जील लूका मानता था और पत्तियों में पौलुस की पत्रियों से बहुत कुछ निकाल कर और बहुत स्थानों पर मिला कर मानता था।

Pandit Lekhram Vedic Mission

© www.aryamantavya.in

मानी कनीर संप्रदाय

इस संप्रदाय के संबंध में लार्डनर महोदय अपनी जिल्द ३ में अगस्टाएन के वचन के समर्थनानुसार लिखते हैं कि इस सम्प्रदाय का यह विश्वास था कि खुदा जिसने मूसा को तौरेत दी और इबरानी पैगाम्बरों के साथ बोला सच्चा खुदा नहीं किन्तु शैतानों का शैतान है और न्यूटैस्टामेंट की पवित्र पुस्तकों को मानता है किन्तु इनमें प्रक्षेप बताता है और जो इसके पसन्द आता है, ले लेता है। शेष को छोड़ देता है और कुछ छोटी पुस्तकों को उन पर विशेषता देकर कहता है कि यही पुस्तकें सर्वथा सत्य हैं और इतिहासकारों की सहमति है कि समस्त मानी कनीर का सम्प्रदाय प्रत्येक काल में ओल्डटैस्टामेंट की पुस्तकों को नहीं मानता था। श्रेणी कर्मनामी पुस्तक में उनका सिद्धान्त लिखा हुआ है कि शैतान ने यहूदियों के पैगम्बरों को धोखा दिया है और शैतान ही मूसा और यहूदियों के पैगम्बरों से बोला है। जिस के लिए यह सम्प्रदाय योहन्ना की इञ्जील १० का प्रमाण देता है कि "मसीह ने इन सब को चोर और डैकैत कहा है और शिष्यों के अअमाल को बहिष्कृत कर दिया था और फ़ास्टस कहता था कि यदि तुम इञ्जील को मानते हो। तो तुम को चाहिए कि उन सब बातों को मानो जो उसमें लिखी हैं विश्वास करते हो। किन्तु उन भविष्य वाणियों के जो उस बादशाह यहुवा के संबंध में थी जिसको तुम मसीह कहते हो और कुछ आचार संबंधी उपदेशों के अतिरिक्त तुम इसका पौलुस की अपेक्षा जो उसको गन्दगी समझता है कुछ अधिक आदर नहीं करते। अतः तब मैं क्यों न्यूटैस्टामेंट के साथ ऐसा ही न करूं कि जो मेरी मुक्ति के लिए सहायक और ठीक है उसे ही मानू और उन वस्तुओं से इन्कार करू जो धोखा से हमारे बाप दादों ने उसमें प्रक्षिप्त कर दी हैं और उसके सौन्दर्य और अच्छेपन को कुरूप और खराब कर दिया है क्योंकि यह सत्य है कि उस न्यूटैस्टामेंट को न हज़रत ईसा ने लिखा है और न उन के शिष्यों ने किन्तु एक समय के पश्चात् किसी गुमनाम व्यक्ति ने लिखा है और जो उसने इस अपेक्षा कि मियात उस को उन अवस्थाओं से जो लिखता है— अपरिचित समझ कर विश्वास न करे शिष्यों और शिष्यों के मित्रों के नाम लगा दिये हैं और उसने ईसा के अनुयाइयों को बड़ा कष्ट दिया कि उन के नाम से उन पुस्तकों को जिनमें बहुत भूल और विरोध हैं–बनाया। क्या यह हज़रत ईसा के अनुयाईयों के साथ जो परस्पर सहमत और एकमत थे– बुराई करनी नहीं है ?

और हमने यह ठीक जान लिया है कि प्रत्येक बात को बुद्धि और ज्ञान के द्वारा पहचान कर उन बातों को जो ईमान में लाभप्रद और मसीह तथा उसके बाप महान् खुदा की प्रतिष्ठा के योग्य हैं, स्वीकार करें और उन बातों को जो लाभप्रद और योग्य नहीं – अस्वीकार करें। और जब हज़रत ईसा ने न्यूटैस्टामेंट में कई बातों को सिखाया और अन्यों का खंडन कर दिया। इसी प्रकार से पवित्रात्मा जिसके संबंध में ईसा ने इञ्जील में वचन दिया था हमें सिखाता है कि क्या हम मानें और क्या न मानें, जो तुम ने मसीह के आश्रय से न्यूटैस्टामेंट में किया। विशेषता उस अवस्था में जैसा कि पूर्व कहा गया कि उसे न ईसा ने लिखा, न शिष्यों ने। संपूर्णतः जैसा तुम न्यूटैस्टामेंट से केवल भविष्य वाणियां और आचार संबंधी बातें लेते हो और खतना की आज्ञा, कुरबानी तथा सब्त के दिन का खंडन करते हो तो पुनः इसमें क्या दोष है कि हम भी न्यूटैस्टामेंट से केवल वही बातें मानें जो उनकी प्रतिष्ठा के योग्य हैं और जिनको उस ने कहा है। उसका जो शिष्यों ने अज्ञान से कहीं या झूट और निर्लज्जता से उनकी ओर बताई– बहिष्कार करें।

www.aryamantavya.in

रोमन कैथुलिक संम्प्रदाय

यह संप्रदाय अब भी ईसाई मत के समस्त संप्रदायों से छे गुना अधिक है और कई राज्य भी इस के अधिकार में हैं। इसी बाईबल के संघात में यह सम्प्रदाय नौ दस अन्य पुस्तकें इलहामी ठहरा कर प्रविष्ट करता है और ईश्वरीयोपासना में ईसा के प्रकाश को मानता और उसको सिज़दा (नमस्कार) करना कर्तव्य समझता है और मूर्ति पूजा भी करता है।

योनी टेरियन

इस संप्रदाय का कथन है कि खुदा का कोई शरीक (समान) नहीं। किसी को क्षमा करने और दंड देने का अधिकार नहीं। शुभकर्मों का परिपाक स्वर्ग और अशुभ कर्मों का परिणाम नरक है। यह प्रोटैस्टैंट और रोमन कैथुलिकादि सब संप्रदायों को बुरा समझते हैं।

यूटलकेन

इस संप्रदाय का संस्थापक एक यूटीचंस नामी यूनानी व्यक्ति था जो पंचम शती में हुआ है। उस ने इस सिद्धान्त की शिक्षा अपने अनुयाइयों को दी थी कि प्रत्येक उज्जवल स्वभाव की इस पद्धति की दोनों विशेषतायें मसीहमें परस्पर ऐसी होगई थी कि उनमें कोई संप्रदाय और भेदादि न रहा तथा मसीह का मनुष्यत्व गुण ईश्वरत्व में इस प्रकार मिल गया जैसे एक जल बिन्दु नदीनद में घुल मिल जाता है। (अपालोजी अनुवाद उर्दु पृष्ठ ७ की टिप्पणी)

बलकानिया संप्रदाय

यह लोग मरियम को खुदा के एकत्व में शरीक करते हैं। (देखो जानरिचर्डसन महोदय की अरबी फ़ारसी अंग्रेज़ी डिक्शनरी पृष्ठ ६८८)

प्रोटैस्टेन्ट संप्रदाय

इस संप्रदाय का संस्थापक मार्टन लूथर महोदय है। इसने इञ्जील में बहुत कुछ सुधार किया है। इसका कथन है कि हम मूसा को न सुनेंगे और न देखेंगे क्योंकि वह केवल यहूदियों के लिए था और हमें उससे कोई संबंध नहीं। हम मूसा और उसकी तौरात को स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि वह शत्रु जैसा है मूसा नौ जल्लादों का सरदार है। (मूसा के) दश आदेशों से ईसाईयों का कुछ संबंध नहीं। इन दश आदेशों का बहिष्कार करना चाहिए कि इस से सारी खराबी अभी दूर हो जाएगी। क्योंकि यह सब कार्य समस्त दोषों के स्रोत हैं।

(वार्डर महोदय का अशुद्धिनामा अंक १८४ पृष्ठ ३७ तथा लोहर की पुस्तक जिल्द ३ पृष्ठ ४०१)

वार्डर महोदय अपनी पुस्तक अशुद्धिनामा में लिखते हैं कि लूथर का शिष्य पोलोन लिखता है कि याकूब अपनी पुस्तक को व्यर्थ की बातों में पूर्ण करता है और पुस्तकों के ऐसे विरुद्ध प्रमाण देता है कि जिसमें पवित्रात्मा नहीं रह सकता। अत: वह पुस्तक इलामी पुस्तकों में गिनी जाए। (पृ० ३७)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

जान कालवियन महोदय फरमाते हैं कि पतरस ने कलीसिया में नवीन दोष बढ़ाए और ईसवी स्वतन्त्रता को भय में डाला और ईसवी समर्थता को दूर फेंका है।

(मुबाहिसा प्रकाशित १२७१ हिजरी पृष्ठ २६)

लार्डनर महोदय फरमाते हैं कि जब मैं कुसतुनतुन्या में अधिकारी था। पवित्र इञ्जीलें लेखकों के अज्ञान के कारण बादशाह तासतीशूश के आदेश से बुरी ठहराई गईं और उनका पुनः संशोधन हुआ।

(देखो किताबुल् असनाद जिल्द ५ पृ० १२४)

रेनन महोदय तज़कराए मसीह में कहते हैं कि चारों, इञ्जीलों में से प्रत्येक इञ्जील पर एक प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम लिखा है जिसका वृत्तान्त "तज़कराएहवारीन" (शिष्यों का वर्णन) और तारीखे इञ्जील में लिखा है। किन्तु यह यथार्थ नहीं कि यह चार व्यक्तियों का संघ ही इञ्जील चतुष्टय है। इस वचन से कि यह मती ने कहा है, यह मरकस कहते हैं, यह लूका कहते हैं और यह योहन्ना फरमाते हैं। यह अभिप्रेत नहीं कि प्राचीन ईस्वी विद्वानों का यह मन्तव्य था कि यह सम्पूर्ण आयात उन्होंने निर्मित की हैं। किन्तु इस वचन से अभिप्रत यह है कि यह आयतें उनसे कही गई हैं। और उनकी ओर अपेक्षित की गई हैं। (अपालोजी पृ० १११)

डाक्टर केनीकाट लिखते हैं कि वर्त्तमान न्यूटैस्टामेंट की लगभग समस्त पुस्तकें सन् एक हजार और चौदह सौ सतावन ईस्वी की लिखी गई हैं। और इसी से युक्ति पूर्वक यह बात कहता है कि समस्त पुस्तकें जो सातवीं या आठवीं शती की लिखी हुई थीं। यहूदियों की कौन्सल की आज्ञा से अभाव-ग्रस्त कर दी गईं जब कि वह पुस्तक उन पुस्तकों से जिनको वह श्रेष्ठ समझते थे—बहुत विरोध करती थीं। (देखो रीस की साईक्लोपीडिया की जिल्द ४ बाईबल वर्णन)

रियो महोदय अपने इञ्जील इतिहास में मती की इञ्जील के सम्बन्ध में लिखता है। कि जो लोग कहते हैं कि मती ने यूनानी में इञ्जील लिखी थी—यह बात मिथ्या है। इसलिए कि यूसोबीस अपने इतिहास में लिखता है कि मती ने इञ्जील इबरानी में लिखी है–यूनानी में नहीं। और जेब्रूम कहता है कि पीनटीनस ने इस इञ्जील की इब्री जिल्द हबश में पाई थी और उसने उसको सकंदरिया में लाकर सीसरिया के पुस्तकालय में रखा था कि वहां से वह जाती रही किन्तु उसका यूनानी अनुवाद अवशिष्ट रहा और अनुवादक का नाम ज्ञात नहीं है।"

हनरी स्काट के भाष्य में लिखा है कि इब्री इञ्जील के गुम होजाने का कारण यह हुआ कि अबी-यूनिया सम्प्रदाय ने जो मसीह के ईश्वरत्व को स्वीकार न करता था–उस इञ्जील में प्रशंसा की थी और यरोशलम की बरबादी के पश्चात् मूल इब्री इञ्जील की पुस्तिका जाती रही। और कुछ लोग कहते हैं कि नासरियों अथवा यहूदियों में से जो नूतन ईसाई हुए थे उन्होंने इब्री इञ्जील को नष्ट किया था और अबूनिया संप्रदाय ने उसके बहुत से वाक्य निकाल डाले थे।

लीकलकर्क, कोप, मैक्स, लींग, नेमीर, अखोरन, मारस महोदय जो ईसाईमत के प्रसिद्ध अन्वेषक हैं वह सर्वसम्मति से फरमाते हैं कि वास्तव में इब्री इञ्जील थी और उसके कई अनुवाद भी थे किन्तु वह अनुवादों सहित गुम है–यह निश्चित सिद्ध है।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

यूसीबीस भी अपने इतिहास में लिखता है कि :—

"अरनीस लिखता है कि मती ने अपनी इञ्जील इब्री में लिखी है।"

एक और अन्वेषक कहता है कि सबसे प्रथम कमेटी जो इलहामी पुस्तकों के निर्णय के लिये हुई। कुसतुन्तुनी की आज्ञा से ३२५ सन् नाईस नगर में उसकी बैठक हुई। उसमें एक पुस्तक जोडथ भी इलहामी पुस्तकों में सम्मिलित की गई।

पुनः ३६४ ईस्वी में एक और लोडेसिया नामी समिति स्थापित हुई जिसने जोडथ के तौरेत और इञ्जील के अतिरिक्त अन्य सात निम्नलिखित पुस्तकें माननीय ठहराईं :—

आतः पुस्तक, याकूब की पत्री, पतरस की पत्री, दाऊद की पत्री, यूहन्ना की पत्री, यहूदा की पत्री और पौलुस इब्रानियों के नाम पत्री। और इस आदेश को स्थान २ पर इश्तहारों द्वारा प्रसिद्ध किया।

पुनः ३९७ ईस्वी में एक और समिति स्थापित हुई जिसको कारथिज कहते हैं जिसमें अगस्टाएन के अतिरिक्त जो बड़ा विद्वान् था—एक सौ छब्बीस अन्य बड़े २ विद्वान् थे। इस समिति ने पहिली समितियों की आज्ञा को स्थिर रखकर अन्य निम्नलिखित सात पुस्तकों सहित इलहामी निश्चितकों व ज़डम की पुस्तक, लूब्यास की पुस्तक, बारूक की पुस्तक, ईकल्ज़ पास्टक्स की पुस्तक, मकाबीस प्रथम और द्वितीय, योहन्ना के मुकाशफात।

इसके पश्चात् अन्य तीन समितियां स्थापित हुईं। जिनको कमेटी तरलो, कमेटी फलोरंस और कमेटी तरनत कहते हैं। इन समितियों ने कमेटी कारथज को स्थिर रखा। अतः यह पुस्तकें बारह सौ वर्षों तक ईसाईयों में मानने योग्य रहीं।

इसके पश्चात् १५३० ईस्वी में प्रोटैस्टेन्ट संप्रदाय स्थापित हुआ। इसने बारूक की पुस्तक, टोबपास की पुस्तक, जोडथ की पुस्तक, वजडम की पुस्तक, एकल्ज़ पास्टक्स की पुस्तक और मकाबीस की दोनों पुस्तकों का खंडन कर दिया गया तथा मिथ्या समझा गया। और अरथ की पुस्तक के कुछ अध्यायों को भी इलहामी बताया गया और उसके सोलह अध्यायों में से अब नौ अध्याय हैं तथा दसवें अध्याय की कुछ आयतों को मानते हैं और शेष सबको कृत्रिम बताते हैं।

(अन्दक निवेदन ज़ील पृ० १७)

किन्तु इनमें से कुछ अब तक कैथुलिक संप्रदाय के निकट इलहामी और मानने योग्य हैं।

लार्डनर फरमाते हैं कि "पीपेश लिखता है कि मती ने इंजील इब्री में लिखी और हर किसी ने अपनी योग्यतानुसार इसका अनुवाद किया।" (कुलियात लार्डनर जिल्द २ पृ० ११६३)

पुनः वही गुणी महोदय लिखते हैं—

"यूसीबीस लिखता है कि पीनटीनस जब हबश (एबीसेनिया) में आया। उसने वहां एक इञ्जील मती का नुसखा (कापी) पाया। जो वहां के लोगों को बरथोला हवारी से पहुंचा था और उस समय उनके पास सुरक्षित था। जीरदम लिखता है कि पीनटीनस उस कापी को वहां से सकंदरिया में लाया जो गुम हो गई।" (देखो जिल्द २ पृष्ठ २१७ जिल्द ४ पृष्ठ ९५)

Pandit Lekhram Vedic Mission

पुनः वही महोदय फरमाते हैं कि —

"मती ने अपनी इब्री इञ्जील यरोशलम में लिखी थी।" (जिल्द ४ पृष्ठ १६५, १७४, १८७, ४३६, ४४१, ५०१, ५३८)

पुनः वही महोदय फरमाते हैं कि—

"इसी वूड के प्रमाणानुसार इन चारों से मती ने केवल इब्रानी में लिखी और शेष ने यूनानी में।" (जिल्द ५ पृ० १३७)

इञ्जील यूहन्ना

इस के सम्बन्ध में अन्वेषक बरशेंड्र और अस्टाडलन तना अनुजीन सम्प्रदाय जो दूसरी शती में था सहमत होकर कहते हैं कि योहन्ना हवारी की रचना नहीं है। निश्चित सकन्दरिया के विद्यालय के किसी विद्यार्थी ने लिखी है।" (कैथुलिक बरस्ड जिल्द ७ पृ० २०५ सन् १८४४)

दूसरी शती में जब लोगों ने इन्कार किया तो उनके उत्तर में अरन्यूस ने यह नहीं कहा कि पोलीरकाब से मुझे यह सूचना पहुंची है कि यह इञ्जील योहन्ना हवारी की रचना से है। जबकि अरन्यूस होलीकारब का शिष्य है और पोलीकारब योहना हवारी का अनुयायी यदि होता तो उसे अवश्य ज्ञात होता और वह उस को बता देता।

रिसाला अअमाल यह भी इलहामी नहीं। और न इस के सम्बन्ध में ईसाईयों के पास कोई प्रमाण है। कहते हैं कि लूका की रचना है किन्तु लूका इलहामीन था। इस के अतिरिक्त इस पत्रिका को पौलुस और योहन्ना का देखना भी सिद्ध नहीं।

पाठक ! कुछ विचार करें। कि यह पुस्तकें, रिसाले और पत्र कब इलहामी ठहराए गए ? बहुत से पत्र तो कौन्सल के आदेश से (बलात्) इलहामी और शिष्यों की रचना ठहराए गए। जैसा कि इब्रानीनामा, याकूब नामा, यहूदी नामा, पतरस नामा द्वितीय, योहन्ना की पत्री द्वितीय व तृतीय और योहन्ना के मुकाशफात। यह कौन्सल कारथज ३२७ ईस्वी में हुई थी। किन्तु जब इस कौन्सल ने योहन्ना के मुकाशफात को इलहामी ठहरा के विधान के अन्तर्गत किया था। तब उस ने निम्न पुस्तकों को भी तो इलहामी ठहराया था। जोडथ की पुस्तक, तोबियास की पुस्तक, डरडम की पुस्तक, एकल्ज यासटक्स की पुस्तक और मकाबीस की पुस्तकें। किन्तु इन सब पुस्तकों को आजकल के वर्तमान प्रोटैस्टेन्ट विद्वान् मिथ्या और अनीश्वरीय मानते हैं। तथा इसीलिये अब उन इलानी पत्रियों से निकाल दी हैं और हवारियों (साथ रहने वाले शिष्यों) की रचना नहीं मानी जाती हैं।

शेष रही १३ पौलुस की पत्रियां और एक पतरस की पत्री तथा एक योहना की पत्री। सो उनके लिखने के लिए इलहाम की आवश्यकता नहीं है और न वह कभी इस की घोषणा करते हैं। बस यह सारा का सारा संघात जो अनीश्वरीय और अविश्वसनीय है।

पौलुस की घटनाएं नामी पुस्तक जो बोलेने महोदय ने फ्रांसीसी भाषा में लिखी है। उसके दूसरे अध्याय में लिखा है कि किसी सासटन ने अपनी तफसीर अअमाल हवारीन जो चतुर्थ शती में लिखे हैं—

www.aryamantavya.in

वर्णन लिखा है कि बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो न पोलुस और न उस के संस्थापक के मत को मानते हैं। और नजारीनी सम्प्रदाय जो कि ईसाई मत के आरम्भ में ही ईसाई हुआ था। यह पौलुस को न मान कर उस की मक्कारी के कारण यह कहता था कि वह वास्तव में मूर्ति पूजक था। जो यरोशलम में आया और वहां पर इस आशा पर ठहरा रहा कि बड़े रखाया यहूदी की कन्या से जिस पर वह आसक्त था अपना विवाह करता। जैसा कि इसी कारण से उसने अपना खतना कराया। किन्तु जब अपनी हार्दिक इच्छा पूर्ति न हुई तो उस ने यहूदियों से झगड़ा किया और खतना, सब्त दिवस आदि बहुत से प्रतिष्ठित धार्मिक विषयों पर यहूदियों के विरुद्ध कहना शुरू किया।)जब्दतुल अकावील पृ० ४१)

अपरिचित ईसाई भाईयों को हम एक विशेष सूचना देते हैं कि इन्हीं इञ्जीलों की भान्ति मसीह के अन्य हवारियों (शिष्यों) की इञ्जील भी थीं। जिनको ज्यों २ बुद्धि आती गई–मिथ्या समझने लगे। बुद्धिमत्ता के सामने लज्जित होते रहे, छोड़ते गए। उन की सम्पूर्ण संख्या यह है :–

बरतोलमा की इञ्जील, तोमा की इञ्जील, पतरस की इञ्जील, योहन्ना को प्रथम इञ्जील, योहना की दूसरी इंजील, इंद्रमा की इंजील, मती को इंजील, फिलिप की इंजील, लूका की इंजील, फिलिप की इञ्जील, याकूब की इञ्जील, मकस की इञ्जील, मीता की इञ्जील, बरन बास की इञ्जील।

किसी समय यह चौदह इञ्जीलें मानी जाती थीं और उन्हीं के इलहामी होने का उपदेश था। किन्तु ज्यूं २ इञ्जीलों की वास्तविकता शिक्षित पार्टी पर प्रगट होती गई, लोग इंजीलों को छोड़ते गए। यहां तक कि केवल आठ सौ वर्ष के अन्दर दस इञ्जीलें छोड़ दी गई हैं। अब केवल चार शेष हैं। किन्तु इन को भी कुछ ईसाई इसलिये कि जब पिता, पुत्र, पवित्रात्मा तीन ईश्वर हैं तो इंजीलें चार क्यों ? तीन होनी चाहिये। जैसा कि अब लूका की इंजील ईसाईयों के मन में खटक रही है। संभवतः साहस करते २ कभी निकाल देंगे। क्यों कि:—

×रासती मूजिबरज़ाए खुदाअस्त।
कस न दीदम कि गुम शुद अजरहे रास्त ॥

तामसपीन महोदय फरमाते हैं :—

बाईबल की पहिली पांच पुस्तकों का रचयिता मूसा को कहते हैं। युक्तियों से सिद्ध करता हूं कि उन का लेखक मूसा नहीं है किन्तु मूसा काल में भी लिखी नहीं गई। उसके कई सौ वष बीत जाने के पश्चात् किसी अज्ञानी कहानी कहने वाले ने मूसा के काल का वृत्तान्त लिखा है। जैसा कि इस पत्रिका के ऐतिहासिक सहस्रों वर्ष पूर्व के इतिहास को अनुमान से कहते हैं। यदि उस की गवाही प्राचीन काल के ऐतिहासिकों की पुस्तकों से लिखूं संभवतः कुछ पादरी स्वीकार न करें। जैसा कि मैं उनके लेख पर विश्वास नहीं करता। अतः बाईबल से मैं अपनी बात को सिद्ध करता हूं।

× सत्यता ईश्वर की इच्छा का कारण है मैंने किसी को नहीं देखा कि वह सत्यमार्ग से गुम हुआ हो।
(अनुवादक)

मूसा की पुस्तक

ऐतिहासिक विद्वान् हारन महोदय फरमाते हैं कि निम्न विद्वान् अर्थात् अखारन, शल्ज, डातह, रूज़न मिलर और डाक्टर जडस इस बात का कथन करते हैं कि मूसा इलहामी नहीं था किन्तु उसने अपनी पांचों पुस्तकें उस समय की प्रसिद्ध रिवायतों से एकत्र कीं।

(देखो हारन महोदय की पुस्तक जिल्द २ पृष्ठ ७९८, ८१८)

आगे पुनः तामसपीन महोदय अपनी ब्रांच आफ रीजन में लिखते हैं कि प्रथम अच्छे प्रकार से इसका खंडन कर क कि यह मूसा की रचना नहीं वह कहते हैं कि इस पुस्तक को महत्ता इस कारण से मिली कि मूसा की रचना सन्दिग्ध है। जब स्पष्ट ज्ञात हुआ कि उसकी कृति नहीं। यह व्यर्थ का कथानक है। जैसे आदम की स्त्री और सांप से बातों का और नूह की किशती (तरणि) के वर्णन से मेरी सम्मति में अलिफ लैला की कथाएं तौरात की कहानियों से अधिक रूचिकर हैं। मनुष्यों की आयु कहीं आठ सौ और कहीं नौ सौ वर्ष लिखी है। जैसे मूर्ति पूजकों ने अपने देवी देवताओं को लिखी है। जब तौरेत के विषय और मूसा के कर्म घृणित हैं तो ऐसी पुस्तक में मूसा की बरबरता, जबर, रक्त पात के अतिरिक्त शुभ कर्मों का कुछ चिह्न नहीं मिलता है।

गशी २१।१३-१८ में लिखा है कि जब यहूदियों की सेना रक्त पात और बरबादी करके लौटी तो मूसा ने आदेश दिया कि जितनी लड़कियां हैं सब का बध करो और जो स्त्रियां पुरुषों से सहवास कर चुकी हैं उनका भी वध करो। किन्तु वह लड़कियां जो कुंवारी युवतियां हैं। उन को अपने लिये जीवित रखो। यदि यह मूसा का आदेश है। तो मूसा से अधिक कामाग्नि के आधीन, क्रोध अत्याचार, मूर्खता में अन्य कोई नहीं। ईश्वर के विधान से कभी ऐसा उचित नहीं हो सकता। और ऐसे कर्म की आज्ञा देने वाला कभी ईश्वर का भक्त नहीं हो सकता।

अशअया की पुस्तक

अन्वेषक व ऐतिहासिक अस्टाबलन जर्मन फरमाता है कि अशाया के ४० अध्याय से ६६ अध्याय तक अशाया की रचना नहीं है। (देखो काकरन महोदय की पत्रिका अंक ३)

सुलैमान की पुस्तक हनरी भाष्य

स्काट को अन्तिम जिल्द में लिखा है कि "आवश्यक नहीं कि प्रत्येक लिखा हुआ पैग़म्बर का इलहामी अथवा कानूनी होवे। यद्यपि सुलैमान ने कई इलहामी पुस्तकें लिखीं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि जो उन्होंने इतिहास रूप से लिखा वह भी इलहामी हो और स्मरण रखना चाहिए कि पैग़म्बर और हमारी विशेष प्रयोजन और अवसर के लिये इलहामी किये जाते थे।

डाक्टर कनीकाट फरमाते हैं कि जान बूझकर तहरीफ़ (कांट-छांट तथा अदला बदली या घटा बढ़ी) उन लोगों ने भी की है। जो दीनदार कहलाते थे और उसके पश्चात् उसी तहरीफ को विशेषता दी जाती और स्वीकार्य ठहरती थी। (जिल्द २ पृ० ३३१)

डाक्टर कनीकाट फरमाते हैं कि बाईबल की खोज करने वालों ने जो सामरियों पर तहरीफ का

www.aryamantavya.in

दोषारोपण किया है। वह दोष यहूदियों पर होना चाहिये। क्योंकि सामरियों का लेख मूल है। और हार्न महोदय ने भी इसका समर्थन किया है। (देखो जिल्द २ पृ० १४)

अन्वेषक कनीकाट समवाईल की अध्याय १७ आयत १२ से ३१ तक बीस आयतों को प्रक्षेप मान कर निकाल देने के योग्य मानता है। और यही वर्णन बिशप हारलीसी महोदय ने भी किया है।

(देखो जिल्द १ पृ० ३०२)

बिशप हारसली निम्न स्थानों को भी प्रक्षिप्त मानता है। अर्थात् गिनती (अध्याय २६ आयत ३, ४) यूसीअ् पुस्तक (अध्याय १३ आयत ७, ८, २५)

फिजात पुस्तक (अध्याय १२ आयत ४) और समवाईल (अध्याय ३० आयत २०) और समवाईल २ (अध्याय ४ आयत ६) तथा निम्न स्थानों को प्रक्षिप्त मानता है :—

यूसीअ् पुस्तक (३।१२ १०।१५ और १३।१४) फ़िज़ात (१।१-६)

हारन महोदय फरमाते हैं कि योहन्ना ७।५३ से ८।११ प्राय: विद्वानों को आक्षेप है और वह इसकी सत्यता पर वादविवाद करते हैं। तथा क्रेज़ास्टम, थियोफल कस्ट और तूनुस की व्याख्या में न यह वहीं लिखी गई हैं और न उनकी व्याख्या लिखी गई और यही शिक्षाएं कबीरयूस और तरतोलियानस के प्रमाणों में भी नहीं है।"

(हारन महोदय की पुस्तक जिल्द ४ पृ० ३१ लंडन तृतीय वार १९२२ ईस्वी)

मती २७।३५ के सम्बन्ध में हारन महोदय फरमाते हैं कि यह भाषा १६१ यूनानो नुसखों में और अनुवाद सुरयानी, कापटक, सहमाडक, अथीवीक और रूसो के समस्त हस्तलिखित नुसखों में नहीं पाई जाती। और क्रीज़ास्टम, तितियूसबसटर, यूथमस, थियोफलक्ट तथा अरेजुन अरन्थूस के पुरातन नुसखों के पुराने अनुवादों और अगस्टाईन तथा जौनकोस के प्रमाणों में भो यह भाषा नहों है। ग्रीसवाख़ ने जो इसको निस्सन्देह कृत्रिम समझकर छोड़ा—अच्छा किया।"

(देखो हारन की जिल्द २ पृ० २३०, २३१)

फ्रोनोतोन प्रथम के १०।२८ की भाषा भी कोडक्स अलगन्डरियानोस और वातीकानोस तथा अन्य बारह नुसखों में अन्य कई अनुवादों और प्राय: प्रमाणों में नहीं पाई जाती

(हारन महोदय की जिल्द २ पृ० २२७)

ऐतिहासिक हारन महोदय मती ६।३३ को भी प्रक्षिप्त समझता है।

(विस्तार देखो हारन महोदय की पुस्तक जिल्द २ पृष्ठ ३२७, ३२८, ३३२)

पुन: एक ऐतिहासिक लिखता है कि :—

"जो लोग इस बात को मानते हैं कि पवित्र पुस्तकों की प्रत्येक बात और समस्त निवेदन इलहामी हैं। वह अपनी प्रतिज्ञा को सरलता से सिद्ध न कर सकेंगे। और यदि अन्वेषणमार्ग से हमसे पूछा जाए कि तुम न्यूटैस्टामेंट के कौन से भागों को इलहामी जानते हो तो हम उत्तर देंगे कि मन्तव्य, आदेश

www.aryamantavya.in

और भविष्य वाणियां ऐसी वस्तु जो ईस्वीमत के मूल भूत सिद्धान्त हैं। इनसे इलहाम का विचार पृथक् नहीं हो सकता। निवेदनों के लिये हवारियों के स्मृति-पत्र पर्याप्त थे।"

(विस्तार और व्याख्या देखो इन्साईकलोपीडिया ब्रटेनिका जिल्द ११ पृ० ४०)

पुनः लिखा है कि जीरूत, ग्रोटीस, अराममस. प्रोकोपीस और बहुत से लोग कहते हैं कि पवित्र पुस्तकों की सब पुस्तकें इलहामी नहीं हैं। साईकलोपीडिया जिल्द ११ पृ० २७४) और

(एशिया में हारन महोदय का भाष्य जिल्द १ पृ० २४८ में भी लिखा है)

योहन्ना के मुकाशफात को चार सौ वर्ष तक ईश्वरीय वाणी माना गया क्योनीशश ऐतिहासिक भी उसको योहन्ना लिखित नहीं जानता और प्रोफेसर आएवाल्ड ने भी बहुत रीसच के साथ सिद्ध किया है कि वह योहन्ना की रचना नहीं है किन्तु कुछ पुराने ईसाई तो उसे सर नथस मिलावट करने वालों को रचना बताते हैं। (देखो मुबाहसा (शास्त्रार्थ) पृ० ३३ सन् १२७१ ईस्वी)

और यूसीपेबस अपने इतिहास में लिखता है कि कुछ ने हमारे से पूर्व योहना के मुकाशफात को समस्त पुस्तक को इलहाम से पृथक् कर दिया और इसके संबंध में लिखा है कि यह सब निरर्थक और बुद्धिहीनता से युक्त तथा बड़ी भारी अविद्या का परदा है। (जिल्द ७ अध्याय २५)

लूका की इञ्जील

जब लूका ने इञ्जील का लिखना शुरु किया। वह कहता है कि—

"उसने उन बातों का वृत्तान्त उन लोगों से जो आंख से देखने वाले थे सुनकर लिखा। और इस-लिये कि वह सब बातों से परिचित था। उसने उचित समझा कि वह बातें पिछली आने वालो पीढ़ियों को पहुंचा दे। (लूका १।१-४) और देखो (इंजील लूका सन् १८७० ईस्वी मिरज़ापुर पृ० ७१) और देखो (डाक्टर वाटसन की जिल्द ४ रिसाला इलहाम)

ऐतिहासिक अरनीसूस महोदय कहता है कि "वह बातें जो लूका ने हवारियों से सीखी थीं—हमें पहुंचाई।"

ऐतिहासिक जीरूम लिखता है—

लूका ने केवल पौलुस से प्रत्युत अन्य हवारियों से भी इंजील की शिक्षा पायी है।

पुनः वही ऐतिहासिक लिखता है कि पौलुस ने बहुत बातें अनीश्वरीय कहीं जो वर्तमान इलहामी पुस्तकों में लिखी हैं जैसे कि निम्न स्थानों को ध्यान से देखो :—

तमताऊस पत्री ५।३३। पत्री तमताऊस २।४-१३ फलीमूं पत्री आयत ३४। और पत्री तमताऊस २।४-२०। अकरन्तियों की पत्री ७।१० ७।१२ ७।२५,२६। और अअमाल ६।६,७ २३।३,५। और रूमियों के नाम पत्र १५।२४,२८। और पत्र अकरन्तियों १६।५.६,८। और पत्र अकरन्तियो २ १।१-१८ तक। (देखो वानस महोदय की जिल्द ४ रिसाला इलहाम)

जियोन्गलीसन कहता है कि :—

"पौलुस की पत्रियों में सब पवित्र वाणी नहीं है। इसने कुछ बातों में भूल की है।"

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

श्री फलक महोदय कहते हैं कि :—

"पतरस हवारी ने प्रायः इञ्जील के संबंध में भूल और मूर्खता की है।

डाक्टर कोड महोदय अपनी तुस्तक "मुबाहिसा" (शास्त्रार्थ) में जो फादर गनीनपेन से हुआ था कहता है कि :—

"पतरस ने पवित्रात्मा के उतरने के पश्चात् ईमान में भूल की है।

विद्वान् परनोशश महोदय फरमाते हैं कि—

"हवारियों के सरदार पतरस ने और बरबियाह ने भी पवित्रात्मा के उतरने के पश्चात् ५ लीसिया सहित यरोशलम की भूल खाई।

वाई टेकर महोदय कहते हैं कि—

मसीह के आसमान पर चढ़ने तथा पवित्रात्मा उतरने के पश्चात् सब कलीसिया ने भूल की। न केवल सर्वसाधारण ने किन्तु विशेषों ने भी और हवारियों ने भी इसराईलियों से भिन्न लोगों को मसीह मत की ओर से सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया और पतरस ने रीतियों में और भी भूल की है। और यह भूल हवारियों से पवित्रात्मा के उतरने के पश्चात् हुई है।"

अन्वेषक यासवेर और लियाकन कहते हैं कि कुछ ऐसी बातें हैं जिनमें इलहाम की आवश्यकता भी नहीं। जैसे जब उन लोगों ने अपनी आंखों से देखकर अथवा थोमर गवाहों से सुनकर लिखा।

—०—

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

अष्टम अध्याय

ईस्वी घटनाएं

जिस प्रकार हम अन्य इतिहासों में उत्पत्ति आदि का यथार्थ वर्णन न मिलने और उस समय के किसी ऐतिहासिक का लेख प्राप्त न होने से घटनाओं पर पूरा विश्वास नहीं कर सकते। वही बात मसीह और इञ्जील की है। चारों इञ्जीलों में परस्पर विरोध है। जिन का थोड़ा सा वृत्तान्त हम अन्त में प्रगट करेंगे।

मिस्टर तामसपेन महोदय अपने रिसाला एच आफ रीजन में लिखते हैं कि मरियम ने कहा कि वह पुरुष के सहवास के बिना गर्भवती हुई और उस के पति यूसुफ से फरिश्ता ने गवाह के रूप में कहा। हम यूसुफ और मरियम के तर्क शून्य वचन पर किस युक्ति से विश्वास करें। मरियम से यूसुफ ने कोई पुस्तक नहीं लिखी और न उस युग के किसी ऐतिहासिक ने ऐसी विचित्र घटना को लिखा। जिन व्यक्तियों ने एक दूसरे से सुन के कहा। मैं ऐसा निर्बुद्धि नहीं जो निर्मूल वचन पर ईमान लाऊं।

(रिसाला अजर राह यजदां पृष्ठ ६४५)

स्पष्ट हो कि महाराजा युधिष्ठिर से ३१०० वर्ष और महाराजा विक्रम से ५७ वर्ष पश्चात् यूसुफ नाम एक तर (१) खान (बढ़ई) (२) नासिरत नगर, प्रान्त जलील देश रूमयें रहता था। उस का मरियम आमी एक युवती बालिग स्त्री से विवाह हुआ। किन्तु वहाँ पहिले अवसर पर ही जैसा कि प्रायः होता है—अपने पति से गर्भवती हो गई। (ईसाईयों ने यद्यपि इस विवाह को सगाई लिखा है किन्तु हम इसलिए उस को विवाह कहते हैं कि उसके पश्चात् कोई विवाह नहीं हुआ। अन्यथा अवश्य लिखते) जब जनगणना की रसम के लिये यूसुफ स्वपत्नी सहित बैतलहम गया तो रात्रि एक तबेला में रहे और वहीं यसूअ लड़का उत्पन्न हुआ। आठ दिन के पश्चात् मसीह का यहूदी शरीअत के अनुसार खतना हुआ।

यूसुफ को बादशाह की ओर से कुछ भय हुआ। इस लिये वह लड़के और अपनी पत्नी को लेकर गधे पर चढ़ कर मिश्र को भाग गया। जब तक हीरोडेस जीवित रहा। वहीं मिश्र में रहे। (किन्तु ज्ञात नहीं कितने वर्ष तक) उसके मरने के पश्चात् माता पिता के साथ यसूअ अपने पुरातन देश को लौट आया। और तराथ में जाकर अपने पिता यूसुफ के साथ बढ़ई का कार्य करता रहा। बारह वर्ष की आयु में वह एक बार यरोशलम के मन्दिर में भूल कर तीन दिन रह भी गया था। जैसे प्रायः अल्पायु बालक मेलों में भूल जाया करते हैं। अठाईस वर्ष तक मसीह तराथ में माता पिता के आधीन बढ़ई का कार्य करता रहा। इस के अतिरिक्त और किसी प्रकार का वृत्तान्त इञ्जीलों से नहीं मिल सकता।

---

(१) मती १०।१-४ (२) योहन्ना ११।५१

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

किन्तु एक ऐतिहासिक कहता है–कि "हजरत मसीह लिखना पढ़ना जानते थे। उन्होंने कसबा नासिरा के स्कूल में बाईबल की शिक्षा पाई थी।"

(देखोडीन मलमीन महोदय का कलीसिया इतिहास जिल्द १ अध्याय ३)

पुनः २८ अथवा ३० वर्ष की आयु में चालीस दिन तक एकांव्यक्ति से (जिसको इञ्जीलों के लेखक शैतान कह कर पुकारते हैं) शिक्षा प्राप्त करता रहा। (मती ४।१-११)

उस की ३० वर्ष की जीवनी का वृत्तान्त मिश्रियों के अतिरिक्त किसी को ज्ञात नहीं। संभवतः ऐसे ज्ञात होता है और यही वस्तुतः ठीक है कि कुछ बुद्धमत के विद्वान् जिन दिनों मसीह मिश्र में था प्रचार करने सिकंदरिया में गए थे और वहां उन्होंने कई वर्ष तक बुद्धमत का प्रचार किया। मसीह कई वर्षों तक उनके उपदेश सुनता रहा। जिस का परिणाम यह हुआ कि मिश्र से अपने देश में लौट कर वही शब्द अपने मुखारविन्द से नूतन मत स्थापित करने के विचार से कहने शुरू किये। और यह केवल हमारा विचार ही नहीं किन्तु एक प्रसिद्ध सुपरिचित योरुपियन विद्वान् मिस्टर आर्थ लिल्ली महोदय ने इसी विषय पर एक पुस्तक लिखी है कि "ईसाईयत बुद्धमत से निकली है।"

एक और व्यक्ति योहन्ना नाम की भी मसीह ने शिष्यता स्वीकार की और उस से बपतस्मा पाया। बारह शिष्य नियत किये शमऊन जो पतरस कहलाता था। इन्द्रयास शमऊन का भाई, याकूब जब्दी का बेटा, योहन्ना याकूब का भाई, फेबलूस, बिर थोलमा, धोमा, मती महसूल लेने वाला, याकूब हलफा का बेटा, लबी जो ठडो भी कहलाता था, शमऊन कनआनी, यहूदा अस कर्यूती।

इञ्जील से ज्ञात होता है कि वह कभी खुदा को अपना बाप और अपने आप को खुदा का बेटा कहता था ' कभी २ इस देश के वेदान्तियों अथवा सूफी मुसलमानों की भान्ति अपने आप को खुदा कह दिया करता था। जिस प्रकार मुहम्मदियों ने तथा मुहम्मद साहिब के अन्व मतावलंबियों ने अपने सम्प्रदाय के प्रवर्तकों के चमत्कार प्रसिद्ध कर रखे हैं वही वृत्तान्त ईसाईयों का है।

इस समय के बादशाह के इतिहास में मसीह का कोई चमत्कार नहीं लिखा। समस्त यहूदी भी इन्कारी हैं। उस के सौ वर्ष मरने के पश्चात् स्वयं मसीह ने नहीं किन्तु उस के शुभेच्छु शिष्यों ने पीरां नमे परंद मुरीदां में परानंद"+ के विचार से मसीह के वृत्तान्त को उपास्यदेव की रंगतें चढ़ा कर लेख बद्ध किया।

मसीह ने समस्त दो अथवा चार वर्ष प्रचार व उपदेश किया। किन्तु यह समय भी यथार्थरूपेण इञ्जीलों में नहीं लिखा। उसके दो वर्षीय उपदेश से ही जोग बहुत दुःखो हो गए। जैसा कि लिखा है कि "वह लोगों को बहुत दुःख देता था।" (योहन्ना २।१३-१७)

जब यह शिकायत अधिक हो गई तब यहूदियों के काहनों और करीसों ने सभा बुलाई कि हम सुना करते हैं कि यह व्यक्ति लोगों को हमारे मजहब का अपमान करता है। एक व्यक्ति का जाति के बदले में मरना अच्छा है। न कि सारी जाति मरे।

+पीर नहीं उड़ते मुरीद (शिष्य) उड़ाया करते हैं।

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

+यके बेह दर आतिश कि खलके बदाग़ ।

कपाफा नाम सरदार काहन ने यह अपनी ओर से न कहा। किन्तु इस कारण से उस वर्ष वह सरदार काहन था। यह उसने भविष्य वाणी की। अर्थात् वह व्यवस्था उसनें इलहाम से दी।

स्वयं उस के शिष्य यहूदा असकर यूनी ने पकड़वा दिया। और मुफ्त नहीं। किन्तु तीस रुपये के पारितोषिक के लोभ से पकड़वाया। क्योंकि मसीह के पकड़ने के लिये उस देश के बादशाह ने तीस रुपये का पारितोषिक घोषित किया था।

जब यसूअ पकड़ा जाकर न्यायालय के सम्मुख लाया गया। प्रथम तो इन्कार करने के लिये बहुत यत्न किया। लिखा है कि उत्तर मांगते समय मसीह मौन रहा। किन्तु अन्त में उसने उत्तर दिया। जिस पर सरदार काहन ने (जो एक इलहामी सच्चा नबी था) वस्त्र फाड़ कर कहा कि यह कुफ्र कह चुका। अब हमें अन्य गवाह की क्या आवश्यकता ? तुमने आप इस का कुफ्र सुना। अब तुम्हारी क्या सम्मति ? उन्होंने उत्तर में कहा कि वह वध के योग्य है। तब उन्होंने उसके अर्थात् मसीह के मुख पर थूका उसे घूंसा मारा और दूसरों ने उसे तमाँचा मार कर कहा—बता तुझे किस ने मारा ? पकड़े जाने से पूर्व खुदा के आगे बड़ी प्रार्थना करता रहा किन्तु एक भी स्वीकार न हुई। हर बार रोता रहा किन्तु न सुना गया। पकड़े जाने के पश्चात् शिष्यों ने शिष्यता से इन्कार कर दिया। किन्तु एक ने तो मसीह पर लाअनत भेजी। √

जैसा कि विद्वान् अन्वेषक गाडफ्रीहगनीस महोदय फरमाते हैं कि :—

"ईसा के मुख्य शिष्यों के न्यून प्रेम में मौशीम महोदय ईस्वी मत की विशेषता समझते हैं। किन्तु सत्य पूछो तो मैं बाधित होकर कहता हूं कि यदि लाक, न्यूटन जैसे व्यक्ति ईस्वी मत के मुख्य अन्वेषकों में से होते तो मुझ को भी पूर्णसन्तोष वैसा ही होता।"

(देखो उन की अपालोजी वाक्य १८)

पुनः वही ऐतिहासिक लिखते हैं—

"जब ईसा को सूली पर ले गए तो उस के अनुयाई भाग गए और अपने पूज्य को मृत्यु पाश में छोड़ कर चल दिये। यदि मान लिया जाए उस को रक्षा करने का उन को निषेध था तो उसकी सान्त्वना के लिये तो विद्यमान रहते। और मन से उसके कष्ट देने वालों को धमकाते।"

(देखो वाक्य १२३)

सरविलियमम्यूज महोदय फरमाते हैं :—

"मसीह के समस्त अनुयाई भय की आहट प्रतीत होते ही भाग गए और हमारे खुदावन्द की शिक्षा ने इन पाँच सौ मनुष्यों के मन पर जिन्होंने उनको देखा था—चाहे कितना ही गहरा प्रभाव डाला हो किन्तु प्रत्यक्षतः इसका परिणाम कुछ दिखाई नहीं दिया।" (लाईफ आफ मुहम्मद जिल्द २)

+एक ही को अग्नि में डालना अच्छा जो प्राणियों को जलावे।

√मती १०।१-४ योहना ११।५१ मती २६।४८-५० २६।६५-६८ २६।६३ २६।७४ २६।६५-६८ २२।३६-४५ लूका २२।४२ मरकस १४।२६ १४।७१ लूका २२।५६

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

ऐतिहासिक डीन मलमीन महोदय फरमाते हैं कि "हवारियों से जो कमजोर विश्वास और स्थैर्याभाव प्रगट हुआ, वह स्वयं हजरत मसीह के वचन व्याघात का फल है।"

(देखो कलीसिया का इतिहास जिल्द १)

अन्ततः पलातूस ने पकड़ कर उसे कोड़े मारे। सिपाहियों ने काँटों का टोप उस के सिर पर रखा और उसे तमाँचे मारे और उसी वेश में उसे बाहिर लाए। (१) पित्त मिला हुआ सिरका उसे पीने को दिया। उस ने चख कर न चाहा कि उसे पिये। अन्ततःउसे सलीब पर खेंच कर उसके वस्त्रों को बांट लिया। दो चोर भी उसके साथ फांसो दिये गये। एक दक्षिण दूसरा वाम आते जाते लोग उसे लज्जित करते थे। सब लोग उस से उपहास करते थे कि यदि तू खुदा का बेटा है तो सलीब पर से उतर आ, और यह भी कहते थे कि यह लोगों को बचाने आया था किन्तु अपने आप को न बचा सका। यदि इस-राईल का बादशाह है तो अब सलीब पर से उतर आवे जिस से हम इस पर ईमान लावें। इसी प्रकार वह चोर भी उसका उपहास करते थे।

नवमें घंटा के लगभग यसूअ ने बड़े जोर से चिल्ला कर कहा—

"एली एली लिमा सबकतनी"

अनुवाद—ऐ खुदा ! ऐ खुदा !! तू ने मुझ को क्यों भुला दिया। यह कहते हुए प्राण दे दिये। लाश नियमानुसार कबर में रखी गई और तसलीस की समाप्ति हुई।

किन्तु ईसाई इन सब बातों के होते भी कहते हैं कि वह तो सारे दिन मृतकों से उठ खड़ा हुआ और शिष्यों को दृष्टिगत हुआ। आसमान पर जाकर खुदा के दक्षिण हस्त जा बैठा किन्तु ईसाईयों का यह कथन कई कारणों से मिथ्या है।

पहिला कारण यह है कि जितने इस बात के गवाह हैं। उन में से एक भी ईमानदार नहीं। यहूदी मानते नहीं बादशाह नहीं मानता। स्वयं शिष्य दुबदे में (संशय में) रहे।

दूसरा कारण—यह कि इस प्रकार की बातें बुद्धि से किसी प्रकार सिद्ध नहीं हो सकती हैं। क्यों कि इस समय विज्ञान से अच्छी प्रकार सिद्ध हो गया है कि आसमान कोई वस्तु नहीं। और न कोई सत्य प्रेमी मानता है कि खुदा आसमान पर बैठा है। पुनः मसीह का पहिले मृतकों से जीवित होना दूसरा आसमान पर चढ़ जाना, तीसरा खुदा के दक्षिण हस्त बैठना प्रत्येक प्रकार से मिथ्या है।

जिस प्रकार सर्वसाधारण नानकपंथी और कबीर पंथी नानक जी और कबीर जी का मरना नहीं मानते। किन्तु लाश का गुम हो जाना मानते हैं। किन्तु समस्त ईसाई उनको झूठ समझते हैं। कारण यह कि मुरदा जीवित नहीं हो सकता। पस हमारा यही उत्तर मसीह के संबंध में पर्याप्त है। वास्तव में बात यह है कि जो संसार में आए जिन्होंने जन्म धारण किया, वह सब अपने नियत समय के पश्चात् मर गए और मर जाएंगे। मट्टी में मिल गए और मिल जाएंगे। स्वयं बाबा नानक जी ने कहा है—

इस संसार में स्थिर नहीं (रेहसी कोई) :

राम गया, रावण गया जा के भयो परिवार।
कहो नानक स्थिर कुछ नहीं, सपने ज्यूं संसार॥

...(१) मती २७।३४-३९ लूका २३।३४

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

कोई शारीरिक वस्तु शेष नहीं रह सकती। अतः मसीह का शरीर भी नश्वर था और यहां ही नश्वर हुआ। जीवात्मा नित्य था वह कर्मानुसार दूसरे स्थान पर चला गया अतः इन सारी बातों की करामातों (चमत्कारों) के हरे उद्यान मूर्खों के फुसलाने और बहकाने के लिये हैं। वास्तव में बात यही है कि वह फांसी पाकर मारा गया। पुनः उतार कर भूमि में गाढ़ा गया। जिस प्रकार मूसा मर गया गाढ़ा गया। किन्तु उसकी कबर किसी को ज्ञात नहीं क्योंकि लिखा है :—

"और उसने उसे मूआब की एक वादी (मैदान) में बैतफजूर के सामने गाढ़ा किन्तु आज के दिन तक कोई उसकी कबर को नहीं जानता।" (इसतिस्ना ३४।६)

इसी प्रकार मसीह ५३ वर्ष की आयु में सलीब पर चढ़ा कर मारा गया और फिर गाढ़ा गया। किन्तु शिष्यों की चतुराई के कारण उस की कबर कोई नहीं जानता। वास्तव में ऊंची कबर नहीं बनाई गई थी। केवल यहूदियों में करामात (चमत्कार) दिखाने के लिये कहीं गुमनाम दफन कर गए। सिद्ध कर दिया कि —

"पीरां न मे परन्द मगर मुरीदां मे परानंद।×

मज़हबी हतक तो एक बहाना हो गई थी अन्यथा वह बादशाह के विरुद्ध साजिश करना चाहता था। उस का स्ववचन है कि मैं संसार में तलवार चलाने आया हूं।" बादशाही का इच्छुक था। बलवा करना चाहता था। संसार में युद्ध की अग्नि लगाना चाहता था। शिष्यों से कहता था कि वस्त्र बेचकर भी हथियार खरीद लो। इसी विचार पर पोलीस ने पकड़वा कर फांसी चढ़वा दिया और दो कैदी भी उसके साथ लटकाए गए। लिखा है कि "जो सलीब पर लटकाया गया वह लानती है, जो लानती है वह सदैव के जहन्नम में रहेगा।"

प्रिय पाठक वृन्द ? पढ़ो और ईश्वर के नाम पर विचार करो कि क्या ऐसे मनुष्य का जीवन तुम्हें कोई भी उत्तम शिक्षा दे सकता है ?

इंजीलों के कुछ ऐतिहासिक मतभेद

(१) यूहन्ना बपतस्मा देने वाले ने मसीह को पहचाना कि यह मसीह है। (योहन्ना ११।२८)
योहन्ना ने न पहचाना। (मती ११।२-३)

(२) योहन्ना बपतस्मा देने वाला अलयास था (मती ११।१४)
योहन्ना अलयास न था। (योहन्ना ११।२१)

(३) सलह का पिता अरफ़कसद था (पैदायश ११।१२)
सलह का कन्यान और वह अरफकसद का बेटा था। (लूका ३।२, ६)

(४) मसीह को जब वह बच्चा था, मिश्र ले गए। (मती)
यसूअ को मिश्र में नहीं ले गए। (लूका २।७-२२' ३९ २।३-१५, १९, २३)

× पीर नहीं उड़ते, किन्तु मुरीद उड़ाया करते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Vedic Mission

www.aryamantavya.in

(५) बपतस्मा पाने के पश्चात् चालीस दिन जंगल में शैतान से आजमाया गया।
(मरकस १।९, १२, १३)

बपतस्मा पाने से तीसरे दिन मसीह ज़लील में एक विवाह में ग्यारह शिष्यों के साथ।
(योहन्ना १।३२ २।१)

(६) दो अन्धों ने दुआ मांगी। (मती ३।३०)
एक अन्धे ने दुआ मांगी। (लूका १८।३५)

(७) मसीह तीसरे घंटे सलीब दिया गया। (मरकस १५।२५)
छटे घंटे के समीप तक सलीब पर नहीं दिया। (योहन्ना १९।१४)

(८) दो चारों ने मसीह को लज्जित किया।
एक ने मसीह पर मलामतकी। (लूका २३।३९) (मती २७।४४) (मरकस १५।३२)

(९) यहूदा ने तीस रुपये वापिस लौटा दिये। (अअ्माल १।१८)
नहीं लौटाए किन्तु अपने पास रखे। (मती २७।२)

(१०) यहूदा ने अपने आप को फांसी दी। (मती १७।५)
नहीं किन्तु वह ऊंधे मुख गिरा। उसका पेट फट गया। फांसी से नहीं मरा।
(आमाल १।१८)

(११) यहूदा ने कुम्हार का खेत ख़रीदा। (अअ्माल १।१८)
सरदार काहनों ने उसके मरने के पश्चात् खरीदा। (मती २७।६, ७)

(१२) केवल एक स्त्री मसीह की कबर पर आई। (योहन्ना २०।१)
दो स्त्रियां कबर पर आईं। (मती २८।१)
तीन स्त्रियां कबर पर आईं। (मरकस १६।१)
बहुत स्त्रियां थीं। (लूका २४।१०)

(१३) दो फरिश्ते खड़े हुए कबर पर देखे। (लूका २४।३) (योहन्ना २०।१०, ११)
केवल एक फरिश्ता देखा और वह भी बैठा हुआ।
(मती २८।२, ३) (मरकस १६।५)

(१४) स्त्रियों ने उस के शिष्यों को सूचना दी थी। (मती २८।८) (लूका २४।९)
स्त्रियों ने इन को सूचना नहीं दी। (मरकस १६।८)

(१५) फरिश्तों के आने से पूर्व ही पतरस और योहन्ना देख गए।
(योहन्ना २०।३, ६, १०, १२)

दो नहीं किन्तु केवल अकेला गया। (पतरस)
किन्तु फरिश्तों के आने से पीछे। (लूका २४।४, ८, १२)

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

(१६) केवल मरियम मेगडलिया को ही मसीह दृष्टि गत हुआ।
(मरकस १६।९) (योहन्ना २०।१४)

दोनों मरियमों को दृष्टिगत हुआ। (मती २८।९)

दोनों में से किसी को दृष्टिगत नहीं हुआ। (लूका २४।१, ११)

(१७) मसीह तीन दिन और तीन रात कबर में रहा। (मती १२।४०)

केवल दो दिन और दो रात कबर में रहा। (मरकस १५।४२ ४७ १६.९)

(१८) मसीह जैतून के पर्वत से उठाया गया। (अग्रमाल १।९, १२)

मसीह बतईना से उठाया गया। (लूका २४।५,५१)

इन दोनों स्थानों से नहीं उठाया गया (मरकस १६।१४-१९)

यह अठारह मतभेद इञ्जीलों से हम ने उसकी ऐतिहासिक घटनाओं के संबंध में स्पष्ट रूपेण पादरी महोदयों के सम्मुख उपस्थित किये हैं।

गरकबूल उफतद। जहे इज्ज़ो शर्फ॥

दूसरा– मसीह का अरब में अवतार

कृश्चन समाचार पत्र लिखता है कि-

अरब में एक झूठा मसीह और उत्पन्न हुआ है। बहुत से यहूदी उसके साथ हैं। यह व्यक्ति बहुत बड़ा शिक्षित और धैर्यवान् है। यहूदी कहते हैं कि हमारा यहूदी सहायक है और इसी को हमें आशा है। उस को रक्षा के लिए इब्रानी युवकों की गार्ड स्थापित हुई जो प्रत्येक समय चोकी पहरा रखते हैं। ("तोहफाएहिन्द" जिल्द २ अंक ४६ पृ०४)

तीसरा–मसीह का अमरीका में अवतार

यूनाइटिड स्टेट अमरीका में लिबर्टी नगर के दक्षिण में सवाना स्थान से चालीस मील की दूरी पर कुछ विचित्र बातें उपस्थित हैं वहां के हबशी लोगों ने अपने गिरोह छोड़ दिये। खेती अपने पशुओं को चरा दी। अपने खेतों और कार्यों को छोड़ कर एक कृत्रिम मसीह के गिर्द एकत्र हो रहे हैं जो उनको प्रतिदिन उपदेश करता है। इन नवीन मुरीदों के हृदय में मज़हबी जोश इतना बलशाली है कि वहां सदाचार तथा समाज संबंधी एक विचित्र प्रभाव पड़ रहा है। इन हज़रत का आदेश प्राप्त करके स्त्रियां अपने पतियों को छोड़ कर, लड़के अपने माता से भाग कर और प्रायः स्थानों पर वंश के वंश अपना घर बार छोड़ कर इनके साथ हो लिए हैं। इसका आदेश है कि छे अगस्त शुक्रवार के दिन उत्तर की ओर कनआन की तय्यारी है। इस अन्तर में रोजा और नमाज से निवृत होकर समुद्यत रहना चाहिये। यह गोरा रूप का है। आयु पैंतीस चालीसके मध्य होगी। लंबाई मध्यम और शरीर की बनावट बलिष्ठ है। उनके स्थूल शरीर नाम क्रीटो मरारथ है और सूक्ष्म शरीर का नाम मसीह है। सिरसे लंबे लंबे बाल लटक रहे हैं जो बहुत बड़े और सुन्दर हैं। चार सौ पचास से अधिक स्त्री पुरुष और बच्चे उसके स्वीकृत हो चुक हैं और उसके साथ रहते हैं। उसके गिरोह में स्त्रियां अधिक हैं। वहां के मूल निवासी

www.aryamantavya.in

तो उस पर पूरा २ ईमान लाए हुए हैं और केवल यह चार सौ व्यक्ति नहीं जो इसको मान रहे हैं। इस के प्रगट होने से दो सप्ताह तक हबशी ईसाई पादरियों ने लोगों को बहुत रोकने का यत्न किया कि उस की न सुनें। अन्ततः बाधित होकर कि उनकी कोई नहीं मानता था, उन्होंने अन्य गोरे साहब लोगों की सहायता लेनी चाही और इन लोगों ने भी इस विषय में विशेष ध्यान प्रगट किया। क्योंकि मज़दूरी महंगी हो चुकी थी जिससे उनकी ही हानि थी। अन्त में परस्पर यह निर्णय हुआ कि इनको पकड़ लेना चाहिए और अस्टापल्स नामी एक देशी पादरी को तिरोहित स्वीकृति पर कि वह खाना बदोश है उसके पकड़ने के लिये समन जारी कर दिये गए और कर्नल नारोड अभियान संचालनार्थ नियत किये गये।

मज़हबी जोश फैलने का भय था। किन्तु अरथ अर्थात् मसीह ने अपने साथियों से कहा कि कोई चिन्ता मत करो यह मेरी भविष्यवाणी है कि मैं पकड़ा जाऊंगा। किन्तु मुझको कोई हानि नहीं पहुंचा सकता।

इन महोदय के थोड़े से इंगित पर संभव था कि पकड़ने वाले अधिकारियों के खंड २ हो जाते। किन्तु इच्छा से पकड़े जाकर चले गये और उस स्थान तक जहां उन पर अभियोग चलेगा। बेचारे को कोई बारह मील पैदल जून के सूर्य की धूप में जाना पड़ा। तीन सौ के लगभग स्त्री पुरुष उनके साथ थे। इनमें से आधे सर्वथा सशस्त्र थे। बहुत सी स्त्रियों के पास बन्दूकें आदि थीं। जबकि मसीह को मजिस्ट्रेट के सामने खड़ा किया गया। उन्होंने कुछ डालर के सिक्के पेश किये खाना बदोशी अर्थात् अपना पालन पोषण आप नहीं कर सकता है यह दोष लगा कर डिसमिस कर दिया। उसी समय दूसरा समन जारी किया गया कि वह पागल है। विधानतः दस दिन की पड़ताल आवश्यक थी। एक दिन वह दुगने जत्थे के साथ पधारे। करनल नार्ड ने बड़े दीर्घ और कठोर बयान उनसे लिये। बाहिर उनके साथ का गिरोह यह चिल्लाता रहा कि हमारे क्राईस्ट को ले लिया है। कोई व्यक्ति हमारे ईसा को मारना चाहता है किन्तु यह असंभव है। अरथ ने बताया कि वह पहिले पस्टरी वली अधीन में रहते थे। उस के इंजील के ज्ञान ने अदालत ज्योरी और तमाशा देखने वालों को आश्चर्य चकित कर दिया। नारवुड ने कहा कि यदि तुम मसीह हो तो कोई चमत्कार दिखाओ। उसका उत्तर यह मिला कि शैतान को मेरे पीछे लगाते हो। मैं तुम्हारे फिसलाने में नहीं आऊंगा तुम्हारे ऊपर पागलपन का जुर्म लगाया गया है। अतः यदि ज्यूरी की सन्मति में सिद्ध हुआ तो तुम पागल खाने में भेजे जाओगे। वकील से कहा कि अपने नाखून दिखाओ और सिद्ध करो कि तुम वही ईसा हो जिन को सूली दी गई थी। मसीह ने उत्तर दिया कि यह शरीर का स्वभाव है जो देखते हो कि बदल जाता है और गल सड़ जाता है। यह वह शरीर नहीं जो इससे बांधा गया था। यद्यपि आत्मा मेरे में वही है जो फांसी पर लटकाई गई थी। यही आत्मा प्रत्येक शरीर में है।

(प्रश्न) क्या यह जार्ज वाशिंगटन में थी ?

(उत्तर) निस्सन्देह इब्राहिम लिंकन में भी।

(प्रश्न) क्या वह जफरस डेविस में भी थी ?

(उत्तर) वह थी।

इन मसीह महोदय को बहुत प्रकार से चक्कर दिया गया किन्तु चमत्कार दिखाने के चक्कर में नहीं फंसे। उन्होंने पानी को शराब बनाना इस कारण से स्वीकार नहीं किया कि नशा वाली वस्तु के

बनाने की आज्ञा लेनी पड़ती है। एक बार मैंने यह कहा था किन्तु लोगों ने मेरी इच्छा को सर्वथा दबा दिया।

एक व्यक्ति ने कहा कि मैं तंबाकू चबाता हूं। यदि आप मेरे हाथ को रोक दें तो मैं और ज्यूरी आपको ईसा मान लेंगे। उसने कहा कि मुझे कोई प्रयोजन नहीं कि तुम तंबाकू चबाओ या न चबाओ। मैं तुम्हें जीवन के लिये कुछ नहीं रोकना चाहता हूं।

कमीशन ने आज्ञा पास करदी कि निस्संदेह यह पागल है। एक सरकारी पागलखाना में भेज दिया जावे। उस पागलखाना में आजकल इतनी अधिकता थी कि वहां के सुप्रिन्टैन्डेन्ट ने लेने से इन्कार कर दिया। लिबरटी काउन्टी में जेलखाना नहीं है और यदि वहां रखा जाना है तो राष्ट्र पर अधिक व्यय पड़ेगा, अतः वह पागल छोड़ दिया गया। जब तक उस नगर के जज लोग कोई विधि स्वीकार न करें। अब पुनः वह उपदेश करता है और उसके छूट जाने से वहां के लोगों को अब पवित्र कुदरत का पूर्ण विश्वास हो गया और मजहबी जोश अधिक कठोरता से फैल रहा है।"

(आर्य पत्रिका बरेली पृष्ठ ३ से ५ तक)

अमरीका के प्रसिद्ध जाने हुए विद्वान् पुकीप्सी श्री ए. जे. डे. विस महोदय फरमाते हैं कि—

ऐ पति पर्वत और धरती के।
ऐ मालिक मेंह और आँधी के॥
फूल चमन में खिलाने वाले।
तीतरियों के लुभाने वाले॥
अंध्यारे और उजाले के।
मालिक गोरे और काले के॥
दया से अपनी शान्ति दीजिये।
मन की चंचलता हर लीजिये॥
तेरे पतिव्रत धर्म से हर दम।
सब के सब सन्तुष्ट रहे हम॥
भक्ति में तेरी चित्त लगाएं।
आपस में भी प्रेम बढ़ाएं॥
भाई को भाई दिल से चाहे।
मरते दम तक प्रीत निभाए॥
पौराणिक से फन्दे टूटें।
रागो द्वेष के धन्धे छूटें॥
तेरी मदद से हो कर स्वतन्त्र।
सब हूं निज आदेश पे तत्पर॥
शुद्ध हृदय हों सब के ऐसे।
सत् धर्म पुरुषार्थ सूझे॥

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

मुझे एक आग दृष्टिगत होती है जो विश्वव्यापी है। अर्थात् असीम प्रेम और मुहब्बत की आग जो घृणा और द्वेष को जलाती है। और जो प्रत्येक वस्तु को जलाकर पवित्र कर रही है।

अमरीका के चटियल मैदानों, अफरीका के विस्तृत देशों, एशिया के पुरातन पर्वतों, और योरुप के विशाल राष्ट्रों पर मुझे इस उज्ज्वल और सर्वकार्यसाधक अग्नि के भड़कते हुए शोले दिखाई देते हैं। इसकी चर्चा सभी प्रकार से हुए स्थानों से आरंभ हुई है।

अपने आराम और उन्नति के लिये मनुष्य ने अग्नि को स्वयं प्रज्वलित किया है। भूमंडल पर मनुष्य की ऐसी सृष्टि है जो आग को जलाकर उसे शक्ति देकर सनातन जीवन दे सकती है।

क्योंकि भूमि के प्राणियों में बोलने वाला बुद्धिमान् भी यही है इस हेतु से अपने निवासस्थलों में नारकीय अग्नि भड़काने को सबसे आगे है। प्रोनोयश को भान्ति नारकोय स्थानों को मुहब्बत से पवित्र और बुद्धि से तेजस्विता लाने वालो ईश्वरीय ज्योतिर्मयी आग लाने के लिए भो यही सबसे आगे है।

इस असीम आग को देखकर जो निश्चयपूर्वक बादशाहतों, शाहन्शाहों, राष्ट्रों और राजा महाराजाओं तथा संसार भर की राजनैतिक बुराईयों को पिघला डालेगी।

मैं अत्यधिक आनन्दित होकर एक फड़कते जोश का व्यतीत कर रहा हूं। सब ऊंचे-ऊंचे पर्वत जल उठेंगे। घाटियों के सौन्दर्यदर्शी नगर भुन जाएंगे प्यारे घर और प्रेमपूर्ण स्वभाव साथ २ पिघलेंगे। पाप पुण्यों में घुल मिलकर इस प्रकार परिवर्तित होकर चमकेंगे जैसे सूर्य की स्वर्णिम रश्मि श्रृंखला में शबनम।

सीमा रहित उन्नति को विद्युच्छटा से मनुष्य का स्वभाव जल रहा है। आज उसी को केवल चिंगारियां आसमान की ओर लपकती हैं। नक्कारा बजाने वालों, कवियों, गायकों और लेखकों की कृतियों में इतस्ततः देदीप्यमान शोले दृष्टिगत होते हैं।

यह आग सनातन आर्य धर्म को वास्तविकता पवित्र अवस्था पर लाने के लिये एक अंगीठी (हवनकुंड) में थी जिसे आर्यसमाज कहते हैं। यह प्रेरणामय आग आर्यावत में एक ईश्वरीय भक्त दयानंद सरस्वती के सीना (मन) में प्रज्वलित होकर देश के अन्य नूरानी हृदयों में प्रकाशित हुई। हिन्दू और मुसलमान इस संसार का रोशन कर देने वाली आग को जो चारों ओर तोव्रता से भड़कती जा रही थी कि उसके संस्थापक दयानंद को गुमान भा न था—बुझाने के लिए दौड़ पड़े। ईसाईयां ने भो जिनके मन्दिरों को आग और जिनको पवित्र किरनें पहले पूर्व में प्रज्वलित हुई थीं—एशिया को नई रौशनो को समाप्त करने के लिए हिन्दू और मुसलमानों का साथ दिया। किन्तु यह मुबारक आग और भी भड़क उठी और फैल गई।

जाति की सेवा में अपील

हम सब समझते हैं कि अब वह समय आ गया है कि एक बार भारत में इस छोर से उस छोर तक धार्मिक जोश जगा दिया जाए। खालिस और पवित्र आर्य धर्म के सिद्धान्तों को जैसा कि हमारे वेदों में है—सर्वसाधारण में उसका डंका बजा दिया जाए। आर्य उपदेशक नगर नगर, ग्राम ग्राम, वैदिक धर्म का उपदेश करें। यह सिद्धान्त आर्यों के लिये मोहर लगी (प्रमाणित) पुस्तक में से हूं। और अब वह

www.aryamantavya.in

समय आ गया है कि वह प्रत्येक व्यक्ति के मनों में पहुंचा दिए जाएं। हमें पहिले ऐसे प्रचारकों की आवश्यकता है। जो अपने भाईयों को अपने धर्म पर स्थिर रख। हमारा प्रयोजन तो यही है कि हम वास्तव में बहुत अच्छे अर्थात् आर्य बन जाएं।

यह सब कुछ ठीक है कि भारत बहुत उन्नति कर रहा है। किन्तु जो कुछ कर रहा है। वह वास्तविक उन्नति नहीं है। जैसा हम भी अच्छी प्रकार जानते हैं। देश में नई नई प्रस्तावनाएं दिन प्रतिदिन निकाली जाती हैं। किन्तु उन्नति नहीं होती। क्योंकि सत्यधार्मिक सिद्धान्तों पर नहीं चलते।

हमने सदैव इस बात को बलपूर्वक कहा है कि प्रत्येक सुधार का प्राण धर्म है। इसके विना किसी प्रकार का सुधार दृढ़ और स्थिर नहीं समझा जा सकता है। हम अपनी प्राचीन महत्ता को नए सिरे से जीवित करने की प्रसन्नता में बार २ यह कह चुके हैं कि हम अपने गन्तव्य स्थान तक नहीं पहुंचेंगे। क्योंकि हमने धर्म को एक ओर ताक पर रख दिया है। हम देखते हैं कि राजनैतिक उन्नति के लिए भी पर्याप्त प्रबंध हो रहा है और सामाजिक सुधार में भी लोग यत्नशील हैं तथा उसके संबध में उन्नति के अवसर चारों ओर से प्रभाव डाल रहे हैं। किन्तु धार्मिक सुधार एक ऐसा विषय बन रहा कि सर्वसाधारण को विचारधारा के नेता जो प्रत्येक प्रकार के विषय में यत्नशील हैं। उन सबने एक मन होकर यह निश्चय किया है कि उसको (धर्म को) धरोवर रूप में रख छोड़ो। किन्तु हमारी सम्मति है कि अब ऐसे भारी कार्य में गफ़लत नहीं करनी चाहिए। धार्मिक सुधार के लिए ठीक २ तीर निशाना पर लगाने के समान यत्न होना चाहिए।

क्योंकि यह बात लगभग निश्चित हो चुकी है कि सत्यधर्म को सहायता के विना यह असंभव है कि महत्त्वशाली जाति कहलाने के विचार को भी पूर्ण कर सकें। यह बात भी अच्छी प्रकार से प्रगट है कि हम में से बहुत से लोग धार्मिक विचारों से घृणा करते हैं क्योंकि वह राजनैतिक विचारों में संलग्न हैं। और एक इसी विचार के कारण हम अपने दूसरे लाभों को खोए हुए हैं। और यह भी नहीं सोचते कि राष्ट्रीय तथा जातीय उन्नति का सबसे जो मुख्य साधन है, उसको हमने पृथक् कर रखा है। इससे अब आवश्यक है कि धार्मिक सुधार के लिए एक बड़ा भारी जोश फैलाया जाए। और वह ऐसा जोश हो कि अब तक कभी न हुआ हो। ईसाई, मुसलमान, ब्राह्मसमाजी अपने २ मज़हब के गुण प्रगट करते फिरते हैं। और लोगों को अपने जाल में फांसते जाते हैं। किन्तु शोक है कि हम आर्य लोग जिनकी संख्या सबसे अधिक है। कोई भी नियमपूर्वक प्रचारक और उपदेशक समूह नहीं रखते। किन्तु वह महन्त और पुजारी लोग जो स्वयमेव उपदेशक बन रहे हैं। उनकी अवस्थाएं ऐसी सीमित हो रही हैं, कि वह उस आत्मिक अंधेरे को जो समस्त हिन्दु समाज में फैल रहा है। कदापि २ दूर नहीं कर सकते।

हिन्दुओं के लिए इससे अधिक और क्या शोक और निराशा की बात हो सकती है? जब सम्पूर्ण देश में उनकी संख्या सबसे अधिक है। उनको ऐसे उपदेशक भी प्राप्त नहीं। जो अपने धर्म का उपदेश कर सकें। और इसी ओर अपना तन, मन, धन अर्पण करके उपदेशकों की एक सभा स्थापित कर दें। कुछ लंका ही की और वहां की थोड़ी सी सिंहल द्वीप की प्रजा का विचार कीजिये।

अन्य स्थानों की भान्ति ईसाईयों ने वहां भी बड़ा बल लगाया। किन्तु गौतम बुद्ध के मत का अब भी वहां प्राबल्य है। वहां के गेरवे भगवे वस्त्रों के संन्यासी अपने भूले हुए भाईयों को पुनः संवार रहे हैं और वापिस लेते जाते हैं। इस प्रकार के सहस्रों लोग प्रातः सायं आप देखेंगे। जो अपनामत अपने

www.aryamantavya.in

भाईयों को सुना रहे हैं। किन्तु शोक कि यहां कोई भी हिन्दुओं को इनका धर्म नहीं बताता। हिन्दु घर से बाहिर जाते भी हैं, तो वही मुक्ति सेना का ढोल अथवा अन्य इसी प्रकार के शब्द कर्णगोचर होते हैं।

हिन्दुस्थान बड़ा भारी देश है। यहां धनी, बुद्धिमान्, विद्वान् लोगों की कमी नहीं है। किन्तु शोक तो यही आता है कि इन सब बातों के होने पर किसी को भी उस प्राचीन धर्म के पुनर्जीवित करने का विचार नहीं है कि जिसमें वह उत्पन्न होते हैं।

विचार का स्थान है कि अपने आप को एक जाति प्रगट नहीं कर सकते हैं। यदि अपने पुरातन पवित्र वेद के धर्म को जो आशिरःपाद युक्तियुक्त है स्वीकार करें और उसी की शिक्षा पर बल दें तथा फ़ैलाएं और इसके समर्थन में छोटे २ पत्र और पुस्तकें इन्हीं विचारों की प्रकाशित करें। अपने बच्चों को आरंभ से वही पढ़ावें जिससे वह एक श्रेष्ठ हिन्दु अर्थात् आर्य होने का गर्व करें। जब तक हमें यह सुधार प्राप्त न होगा। हम अपने राजनैतिक अधिकारों के लिए जितना चाहें, चिल्लावें और पुकारें—कभी भी संभव नहीं कि सैल्फ़ गवर्नमेंट की योग्यता हम में उत्पन्न हो।

(लेखक इन्डियन मिरर कलकत्ता)

आथम महोदय के रेव्यू का उत्तर

हमारे कृश्चन मतदर्पण पर आथम महोदय ने रेव्यू लिखा है किन्तु शोक कि हमने उसे बहुत कुछ दिखाया किन्तु कुछ भी न पाया।

पहिली धारा में वह हमें नास्तिक बताते हैं। और यही दूषण हमारे मार्ग प्रदर्शक स्वामी जी महाराज पर लगाते हैं। परमेश्वर इन्हें सत्य मार्ग दिखाये और ऐसे मिथ्या भ्रमजाल से बचाए।

धारा २ में उन्होंने पुनः वही पुराना गीत गाया है जिसे हम प्रथम अध्याय में अच्छी प्रकार लिख चुके हैं।

धारा ३ में वह सभ्यता के ओढ़ने से बाहिर होकर भद्दी वाणी पर उतर आए। बस आथम महोदय! हमने तो वृक्ष को फल से पहचान लिया। आ। मसीह की वर्तमान इञ्जील जो अधूरी और दोषपूर्ण है उसे छोड़कर मसीह की वास्तविक जीवनी जो तिब्बत से निकली है और जो अब फ्रिंच से अंग्रेजी में अनूदित हो गई है उसका अध्ययन करें जिससे सत्यासत्य का भेद खुले।

धारा ४ में बुरी रूहों के प्रमाण में अलिफ़ लैला के अल्लाहदीन वाले चिराग़ जैसी कथाएं घड़ते हैं। और तेल में मुख देखकर सिक्का की स्त्री बन जाना बताते हैं।

पादरी महोदय! क्या ऐसे ही स्त्रियों के जादू टोणा की भान्ति अपने ईस्वी चमत्कारों पर ईमान लाया है। इसीलिए एक विद्वान् लिखता है कि वह काल निकट है। जब गिरजा के पादरियों, निरक्षर किसानों और अज्ञानी बूढ़ियों की भाषाओं के अतिरिक्त इसका प्रभाव किसी के मन पर न रहेगा।

धारा ५ तौरेत और वेद के मन्तव्य नियोग में जो भेद आपने समझा—वह नहीं है। किन्तु यह कि वेद में नियोग न करने पर दण्ड विधान नहीं। किन्तु तौरेत में दण्ड भी विद्यमान है। अर्थात् जो इन्कार करे उसके मुख पर समस्त बिरादरी के सामने थूका जाए।

धारा ६ को तीन पंक्तियां यदि आप न लिखते तो अच्छा होता। आप पूछते हैं कि इससे श्रेष्ठ

Pandit Lekhram Vedic Mission

www.aryamantavya.in

वास्तव में हम क्या मानें ? उत्तर यह है। कि इन समस्त अत्याचारों और अन्धकार से यदि बचना चाहते हो तो धर्म करके परमात्मा पर ईमान लाओ।

धारा ७ में आप समस्त विश्वास इतिहासों से इन्कार करते हैं और जिन सत्तर यहूदी विद्वानों को धारा ३ में पूर्व विश्वस्त मान चुके हैं। यहां उनका और समस्त यहूदियों का यह लिखकर खंडन करते हैं। कि यहूदियों और सर सय्यद महोदय के अर्थ ठीक नहीं हो सकते। मेरे श्रीमान् जी ! यह गर्व बुद्धिमता से दूर है।

पाठकवृन्द ! हमने इस बार कृश्चन मत दर्पण को कुटेशनों और अन्य प्रमाणों से अधिक स्पष्ट और उजला कर दिया है। विश्वास है कि आप इसमें ईसाई मत का नकशा गत संस्करण की अपेक्षा बहुत अच्छी प्रकार से अध्ययन करके ईश्वरीय प्रजा को उनके छल कपट के जाल से बचाने का यत्न करेंगे।

वैदिक धर्म का सेवक
आर्य पथिक पं० लेखराम
२ नवंबर १८९६ ईस्वी
स्थान—लाहौर

—०—

Pandit Lekhram Vedic Mission